॥ वन्दे वीर ॥

श्री जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादासाहब
श्री १००८ श्रीजिनदत्तसूरिजी महाराज
अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

(तारीख २०, २१, २२, मई सन् १९५६ ई०)

अजमेर



विस्तृत रिपोर्ट

(आय-व्यय विवरण सहित)

ता० १ नवम्बर १९५८ तक



प्रकाशक

श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज अष्टम स्वर्गारोहण

शतान्दी महोत्सव समिति, अजमेर

आवृत्ति १०००





दीपावली वि स २०१५

प्रस्तावना

@

भारत की अपनी गौरवमयी परम्परायें है। संस्कृति, कला, साहित्य, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं ज्ञान व धर्म सम्बन्धी जिन तत्वों का निरूपण भारतीय मनीषियों ने प्रतिपादित किया है उनके सर्वोपयोगी अंश शनै शनै प्रकाश में आने लगे है। ऐसी ही वैभवशाली विशेषताओं से सम्पन्न हमारे चरितनायक परम पूज्य श्री गुरुदेव जिनदत्तसूरीजी महाराज भी भारतीय मनीषी-समाज में महत्वपूर्ण स्थान... है ... आज के रिसर्च स्कालर (पुरातत्व वेत्ता) यह स्वीकार करते हैं कि भारतीय संस्कृति ... अंग विकासोन्मुख जैन साहित्य के पन्नों में पूज्य गुरुदेव द्वारा एक नये स्वर्ण पृष्ठ का समावेश हुवा था। अतः ऐसे परमोपकारी श्री गुरुदेव द्वारा प्रतिपादित मान्यताओं को आत्मसात करने की क्षमता जिन व्यक्तियों के हृदय में विद्यमान है, वे यदि श्री गुरुदेव के प्रखर तेजस्वितामय जीवन में सम्पन्न कार्यों का दिग्दर्शन एवं उनके प्रति श्रद्धा प्रदर्शन, किसी महान् आयोजन के अंतर्गत सामूहिक रूप से नियोजित करते है तो उसे शुभनिष्ठा का परिचायक ही समझा जावेगा।

श्री गुरुदेव की स्मृति में सम्पन्न होने वाला शताब्दी महोत्सव केवल एक धार्मिक उत्सव के रूप में ही सम्पादित नहीं हुवा, किन्तु उसके सांस्कृतिक महत्व की छाप बाहर से सम्मिलित यात्रियों पर विशिष्ट रूप से पड़ी वहां स्थानीय नागरिकों के हृदयों पर तो उसकी स्मृति अमिट रूप से सदैव अंकित रहेगी। शताब्दियों में होने वाले आयोजनों की यही विशेषता होती है कि वे अपने आप में चिरस्मरणीय मधुर लेकर सपन्न होते हैं जो निरन्तर जन जीवन को स्पंदित करते रहते है।

यह निर्विवाद सत्य है तथा शताब्दी महोत्सव के प्रत्यक्षदर्शी इसका स्वाभाविक अनुभव भी कर सके कि जैन परम्परा के आचार्यों में जितनी लोक प्रियता दादा श्री जिनदत्तसूरीजी के प्रति है उतनी किसी दूसरे को प्राप्त नहीं। यह अतिशयोक्ति नहीं किन्तु विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, मानव मात्र के हितार्थ सम्पूर्ण जीवन की आहुति देने वाले नर पुरुषों को ही ऐसा यश प्राप्त होता है। और यही कारण है कि दादा जिनदत्तसूरीजी श्वेताम्बर आम्नाय के सभी ८४ गच्छों द्वारा श्रद्धा व भक्तिभाव से पूजे जाते हैं

शताब्दी महोत्सव सपन्न करने का विचार जब से प्रादुर्भाव हुवा उस दिवस से लेकर उत्सव के उपसंहार का छोटा सा महत्वपूर्ण इतिहास है। रिपोर्ट में उसका अपना स्थान है और क्योंकि आरम्भ से ही ... कार्य विधि से मेरा काफी सम्पर्क रहा तथा अन्य सहयोगियों की स्मरण शक्ति भी कम तीव्र नहीं ... आधार पर प्रस्तावना का निर्देशन किया जा रहा है।

अजमेर ... धार्मिक स्थानों में सम्मिलित यह उत्सव अपनी शान का पहला आयोजन था जो शान विस्तार पर तथा सार्वजनिक रूप से सपन्न किया गया था। वास्तव में कई काम संसार में ऐसे हो ... है जिन पर मनुष्य का वश नहीं चलता, फिर भी वे पूरे हो जाते है और पूरा होने पर आदमी ... आश्चर्य में डूब जाता है कि यह कैसे हो गया किन्तु प्रकृति के इस विधान

श्लोक का अनुमान प्रमाणहै और जो बुद्धिमान् पुरुष उपयोग सहित इस ग्रन्थ को आदिसे अन्त तक पढ़ेंगे तो अच्छा बोध रूप रसके लाभ को प्राप्त करेंगे ॥

और कई एक मतावलंबी अनजान लोक ऐसे कहतेहैं कि जैनी लोक नास्तिक मती हैं अर्थात् ईश्वर को नहीं मानते हैं

सो उनको इस ग्रन्थ के

द्वितीय भागके परमात्म अंग आदि अंगों के बांचने से ऐसा भाव मालूम होजायगा कि जैनी लोक इस रीतिसे तो ईश्वर सिद्ध स्वरूप परमात्म पदको मानतेहैं :

और इस रीतिसे ईश्वर अर्थात् ठकुराई धारक धर्म दाता अरिहन्त देव को मानतेहैं और इस रीति से जैनी ईश्वर अर्थात् ठाकुर न्याय(इन्साफ हुकम राज काजके कारक रजोगुणी तमोगुणी

तत्पश्चात् श्री लूणियाजी का बम्बई पधारना हुवा वहा पर श्री कुन्दनमलजी मेहता के साथ वयोवृद्ध पूज्य श्री गुलाबमुनिजी महाराज से मिले और शताब्दी उत्सव के विषय में निवेदन किया। मुनिश्री ने शताब्दी उत्सव के लिये अपनी हार्दिक इच्छा प्रगट की तथा ऐसे विशाल स्तर पर सपन्न किये जाने वाले धार्मिक महोत्सवो के सम्बन्ध में पूर्ण अनुभव रखने वाले श्री १०८ उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज से शिघ्रताशीघ्र परामर्श करने की राय प्रकट की, क्योकि ऐसे महान् कार्य में उनका सक्रिय व प्रशसनीय सहयोग मिलने का उन्हें पूर्ण विश्वास था। अत इस आशय का एक पत्र उपा० जी महाराज की सेवा में भोपाल भेजा गया आपका तुरन्त उत्तर मिला कि ग्वालियर आकर मिलो। अस्वस्थता के कारण श्री लूणियाजी ग्वालियर न जा सके। बाद मे वे तथा श्री धनराजजी लूणिया आगरे जाकर मिले। उपा० महाराज ने तथा मुनि मगलसागरजी व मुनि कातिसागरजी ने इस उत्सव को एक सास्कृतिक रूप देने की सलाह दी। अर्थ व्यवस्था के लिये भी योजना बतलाई तथा प्रकाशित करने के लिये प्रारम्भिक विज्ञप्ति का ड्राफ्ट बना कर भी दिया।

तदनुसार विज्ञप्ति प्रकाशित कर भारत के सभी प्रमुख नगरो के श्रीसंघो का व सम्मानित सज्जनो को प्रेषित की गइ व तत्सम्बन्धी समाचार जैन पत्रो मे भी प्रकाशित किये गये। गुरुदेव के परम भक्तो ने ऐसे सुयोग्य निमित्त को पाकर शताब्दी महोत्सव के कार्य को अवश्यमेव सम्पन्न करने के पक्ष में अपनी राय प्रकट की। स्थानीय श्रीसंघ को एकत्रित कर सारी योजना की जानकारी कराई गई। बाहर से प्राप्त हुवे पत्र तथा अन्य आवश्यक पत्रादि लेकर पुन श्री लूणियाजी व मैं उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज की सेवा में ग्वालियर पहुचे। उपाध्यायजी महाराज ने पुन दूसरी विज्ञप्ति प्रकाशित करने का आदेश दिया।

ग्वालियर से हम आचार्य महाराज से परामर्श करने के लिये खेतिया (प० खानदेश) पहुचे और आचार्य महाराज ने उत्सव को अगले साल करने का कहा ताकि सब साधु साध्वी अजमेर पहुच सकें। यहा पर श्री लूणियाजी के पांव में चोट लग गई, जिसके कारण अजमेर आने के बाद १ माह तक आपके पांव में तकलीफ रही। खनिया से साहश्री प्रवर्तिनी वल्लभश्रीजी से उत्सव पर पधारने की प्रार्थना की।

तत्पश्चात् दादावाडी प्रबंध समिति की कई बैठकें हुई। इस प्रकार के विशाल महोत्सव को सुचारुतया सपन्न करने के लिये स्थानीय श्रीसघ के सदस्यो से अनुमानत प्राप्त होने वाली आर्थिक व अन्य आवश्यक सहायता आदि की समस्या पर समिति ने कई बार गभीर विचार विमर्श किया। काफी वाद विवाद के बाद समिति के सदस्य इस निष्कर्ष पर पहुचे कि अगर उत्सव के आयोजन को सपन्न करने से ऐसा कोई भी मार्ग दिखाई नही देता जिससे गुरुदेव के इस चिरस्मरणीय स्थान का जीर्णोद्धार हो सके या भविष्य में इस स्थान की उन्नति के लिये कोई रूपरेखा बनाई जा सके।

सोत्साह इस कार्य को क्रियान्वित करने के निश्चय के पश्चात् दादावाडी प्रबंध समिति द्वारा कार्य सुगमता की दृष्टि से शताब्दी महोत्सव समिति निर्माण की गई।

जीर्णोद्धार के कार्य में अधिक खर्च काफी दूर से पानी लाने पर होता था। शिघ्राशीघ्र स्थानीय सहायता एकत्रित कर सर्व प्रथम दादावाडी में पानी के पाईप लाईन का कनेक्शन लिया

करके देखो कि इसमें जैनी लोक कौनसी बात अ
योग्य कहते हैं और नास्तिक कैसे हुए और जो
पुरुष जैनको नास्तिक कहते हैं वे जैनके और ना
स्तिक नास्तिक के अर्थ अनजान हैं क्योंकि नास्तिक
वे होते हैं जो पुण्य पापको और स्वर्ग नर्कको न
हीं मानते हैं आगे जो जिसकी समझमें आवे॥
इस ज्ञानदीपिका ग्रन्थके दो भाग हैं सो प्रथम भा
गमें तो आत्माराम संवेगी रचित जैनतत्त्वादर्श
ग्रन्थ है सो तिसमें जो २ शास्त्रोंसे विरुद्ध अर्थात्
सूत्र से अनमिलत कथन है तिनके जवाब स
वाल हैं और विरुद्धता को प्रकट करना और फि
र तिसका खंडन करना ऐसा स्वरूप है सो
जो पुरुष जैन मतमें दो प्रकारके श्रद्धानी हैं
एकतो मूर्त्ति पूजक और दूसरे निराकार
ध्याता, सो इनके अभिप्राय का जानकार होगा
और सूत्रका वाकिफ़ कार होगा सो समझेगा

गुलावमुनिजी महाराज ने काफी कष्ट उठाकर चन्दा इकट्ठा करवाया। मुनि महाराज ने वृद्धावस्था में भी रोजाना १४—१५ मील का चक्कर काटा यह देखकर हम दंग रह गये।

वहा से मैं व श्री लूणिया जी मदरास के लिए रवाना हुए। हैदराबाद में वहा के प्रतिष्ठित श्री इन्दरमलजी लूणिया के सहयोग से चन्दे का कार्य सफल हुवा। वहा पर श्री लूणिया जी की तबीयत खराब हो जाने से मदरास जाना स्थगित कर वापिस अजमेर आये।

श्री मागीलालजी पारख बम्बई से रामपुर की तरफ रवाना हुवे। वहा से श्री बन्शीजी व श्री जीवन चन्दजी के साथ कलकत्ता गये। कलकत्ते में चन्दे का कार्य श्री ताजमलजी बोथरा एवं श्री भवरलालजी नाहटा के अभूतपूर्व सहयोग से सफल हुवा।

एक शिष्ट मण्डल श्री हरिश्चन्द्रजी धाडीवाल, श्री उमरावमलजी लूणिया, एव श्री बन्शी जी का लोहावट जोधपुर, फलोदी की तरफ गया।

श्री उमरावमलजी बोहरा दिल्ली आगरा ग्वालियर भोपाल की तरफ चन्दे के लिए गए। दिल्ली में गुरुभक्त श्री धनपतसिंहजी भंसाली ने चन्दा इकट्ठा करने में बहुत सहयोग दिया। आगरा, भोपाल एव ग्वालियर में चन्दा इकट्ठा न हो सका।

पुन श्री उमरावमलजी लूणिया व श्री जीवनचन्दजी कोटा, बूदी, छीपाबडोद, रतलाम, उज्जैन तथा इन्दौर पधारे। इन्दौर में श्री सोहनलालजी लूणिया एव श्री हेमन्तकुमार जी सेखावत ने सहयोग दिया।

श्री प्रतापमलजी सेठिया के साथ श्री जीवनचन्दजी सी० पी० के दौरे पर पुन गए, जहाँ पर सहयोग कम मिलने से चन्दा भी कम एकत्रित हुवा, अत वहा से अजमेर पधार कर श्री प्रतापमलजी सेठिया पुन सौराष्ट्र की तरफ कच्छ भुज व माडवी चदे के लिये पधारे।

मद्रास की तरफ ब्यावर निवासी कल्याणमलजी कांकरिया, श्री संतोशचन्द्रजी तथा मैं गया। वहां पर श्री सेठ लालचन्दजी ढड्ढा, श्री सेठ जतनमलजी डागा एव श्री सेठ नेमीचन्द भावक के विशेष सहयोग से चन्दे का कार्य सफल हुवा।

शिष्ट मडलो के बाहर जाने तथा चन्दा इकट्ठा करने की अवधि के बीच स्थानीय कार्य चालू रहा इसी मध्य में महोत्सव के प्रति विशेष उत्साह प्रदर्शित करने वाले भारत के भिन्न २ स्थानों के मुख्य व्यक्तियो की उत्सव की रूपरेखा बनाने के लिये १२ जनवरी १९५६ को एक सभा बुलाई गई। और सभा में उपस्थित होकर श्री प्रतापमलजी सेठिया मन्दसौर, श्री अगरचदजी नाहटा बीकानेर, श्री ताजमलजी बोथरा कलकत्ता, श्री धनपतसिंहजी भसाली दिल्ली, तथा स्थानीय सज्जनो ने मिलकर सारी रूपरेखा बनाई व उत्सव की तिथि निश्चित की।

ता० १२ जनवरी सन् ५६ की विशेष सभा के पश्चात् श्री प्रतापमलजी सेठिया, श्री अगरचन्द जी नाहटा व श्री ताजमलजी बोथरा एवं श्री लूणिया जी श्री आचार्य महाराज के पास सैलाना गए। आचार्य म० ने फरमाया यदि साधु सम्मेलन किया जावेगा तो वे आवेंगे। अत साधु सम्मेलन का आयोजन उत्सव पर रखा गया।

और ७ सप्तम क्षमा दया रूप गुणका लाभ होगा। और ८ अष्टम जो गृहस्थीको धर्मकार्य के निमित्तमें प्रभातसे संध्यातक और संध्या से प्रभात तक जो २ करना योग्यहै सो तिसका जानकार होगा तस्मात् कारणात् द्वितीयभाग का वाचना बहुत श्रेष्टहै ॥

(१) पाठक लोकोंको विदितहो कि इस परमोपकारी ग्रन्थको मुखकेआगे वस्त्ररखकर अर्थात् मुख ढांपकर पढना चाहिये क्योंकि खुले मुखसे बोलनेमें सूक्ष्म जीवों की हिंसा होजातीहै और शास्त्रपर (पुस्तकपर) थूकें पड़जातीहैं। और इसग्रन्थको दीपक (दीवे) केआश्रयसे न पढ़ना चाहिये क्योंकि दीपकमेंअनेक जीव दग्ध होकर प्राणान्त होजाते हैं इसलिये दीपक स्मशान के तुल्य होजाताहै तस्मात् कारणात् प्रत्येक पुरुष कोअनेक तरह की जीवहिंसा से बचकर शुद्ध भाव से

है किंतु कौम सदव से एक स्थान पर रहता आया है। अधिक से अधिक कुछ कुटुम्ब एक दो सदियो से यहा रहने आये होगे। किन्तु धार्मिक कार्यों में ऐसा विवेक तो हितकर नही कहा जा सकता। ऐसी स्थिति में मैं उत्सव के मत्रीपद का भार अपने साथियो के सहयोग से ही निभा सका।

हम एक परिवर्तन शील युग से गुजर रहे हैं जहा पुरानी धारणायें व मान्यतायें बदल रही है, नई चेतना का उदय हो रहा है। हमें अपने अतीत को पीछे छोडकर नूतन और प्रगतिशील दिशा की ओर अभिमुख होना चाहिये। ऐसी मार्मिक युगसधि में जब कि सामाजिक एव धार्मिक ढाचों की जडें हिलती जारही ह हम अपनी फूट का दात कितने वर्ष और मु ह में थाम कर रखे रहेंगे ?

समय आ गया है कि हम जैन मतावलबियों को अब तो अनेकात को केवल बौद्धिक व्यायाम की वस्तु न समझकर व्यवहारिक जीवन में उतारने की वस्तु समझनी चाहिये ताकि फूट एव परम्परा को अपने नरवाग्र पर सुरक्षित रखने वाले व्यक्तियो की अलौकिक प्रतिमा समाप्त होवे, और वे भी स्वस्थ मस्तिष्क से निर्णय करना सीख सकें।

अन्त में, अपना अमूल्य समय, सहयोग एव धन देकर जिन सज्जनो ने शताब्दी उत्सव की सम्पन्नता में हाथ बटाया है उन्हें अनेकानेक धन्यवाद प्रदान करता हूँ, व त्रुटियो के लिये क्षमायाचन करता हुवा प्रस्तावना समाप्त करता हूँ।

रामदयाल भडारी
मत्री-महोत्सव समिति, अजमेर

अष्टम शताब्दि महोत्सव मनाने की अनिवार्यता

मनुष्य के विश्वास की नाव उसकी परिस्थितियो के प्रवाह पर बहती रहती है। यह क्रम-विकास का मार्ग है। विकासोन्मुख समाज अपने धार्मिक तथा नैतिक नेताओ की स्मृति को सदैव तरोताजा बनाये रखने के लिये, उत्सव, महोत्सव, समारोह और जयतिया मनाकर सामाजिक, मानसिक स्वास्थ्य एव आतरिक आनन्द की वृद्धि करना श्रेयस्कर समझता है।

इन्ही सद्विचारो से प्रभावित होकर—गुरुदेव के अनन्य भक्तो की यह चिरपोषित अभिलाषा थी कि भारत भर में फैले हुवे गुरुदेव के प्रेमियो का भारतीय स्तर पर एक विशाल महोत्सव गुरुदेव के मुख्य स्थान अजमेर स्थित दादावाडी में आयोजित किया जावे जिससे समाज में जागृति की लहर तो उत्पन्न होगी ही तथा जिन मानवीय आदर्शों के प्रतिपादन एव प्रचार मे श्री दादा गुरु ने समाज का जीवन उत्कर्ष का मार्ग दर्शाकर पूर्ण काया पलट कर दी थी तथा समयान्तर मे समाज व सघ शासन में जो शिथिलता व विकृति उत्पन्न होती गई थी उसके निवारण के लिये साधु साध्वी, श्रीपूज्य-यतिवर्ग, श्रावक एव श्राविकायें एकत्रित होकर आवश्यक उपायो पर सुगमतापूर्वक विचार भी कर सकेगे।

इस शासन प्रभावना, धार्मिक प्रेम, समाज प्रेम एव भावी विकास योजनाओ की पूर्ति के लिये एव सुसगठित संस्था का निर्माण तथा गुरुदेव के इस मुख्य स्थान (अजमेर स्थित दादावाडी) का कई वर्षों से उचित जीर्णोद्धार कराने के हेतु मिती आषाढ शुक्ला ११ सवत् २०११ को श्री दादागुरु के स्वर्गवास को ८०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में अष्टम शताब्दि महोत्सव मनाने का सुद् आयोजन अनिवार्य समझ कर कार्य्य सम्पन्न किया गया था।

प्रथमभाग सूचीपत्रम्

आवश्यक था वह हम प्राप्त करने में समर्थ न बन सके। फिर भी "श्री खरतरगच्छ इतिहास" (जो कि श्री० अगरचन्दजी सा० नाहटा की देख-रेख में छपा था) के अलावा श्री गुरुदेव के संबंध में वद्धवय उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज द्वारा लिखित विद्वतापूर्ण लघु-ग्रन्थ समय पर प्रकाशित किया गया तथा महोत्सव के अवसर पर अमूल्य वितरण भी किया गया।

हमें अपने विद्वान एवं समाज सेवी सज्जन श्री अगरचन्दजी नाहटा, श्री ताजमलजी बोथरा, एवं श्री प्रतापमलजी सेठिया के सदाग्रह व सत्प्रेरणा से मुनि सम्मेलन का कार्यक्रम भी रखना पडा। यतिसमाज के संगठन की प्रेरणा भी इस अवसर से प्रेरित होकर संपूर्ण हुई। विविध सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्मेलनों की योजनाओं के साथ "श्री जिनदत्तसूरी सेवा संघ" की स्थापना विशेष उल्लेखनीय बात है। दादावाडी के आवश्यक जीर्णोद्धार की काफी मंजिल भी पूरी हुई। मुख्य छत्री के जीर्णोद्धार का काम ही सिर्फ नहीं हो पाया है जिस पेटे कुछ रुपया जमा हुआ है परन्तु पिलानी में बिडलाजी तथा कलकत्ता में बांगडजी द्वारा मंदिर बनवाने की वजह से भाव बढ गये है।

नोट—छत्री के अन्दर सीलन आने से पू० गुरुदेव के जीवन के कलात्मक चित्र क्षतविक्षत हो गये है उन्हें नया लिखवाना तथा उनके जीवन चरित्र का संगमरमर की पट्टिकाओं पर खुदवा कर लगवाना, भी बाकी है।

इसके साथ हम उन सज्जनों से भी नम्रता पूर्वक यह निवेदन करने का साहस करते है कि जिनकी दृष्टि सहयोग के विनम्र आव्हान के स्थान पर असहयोग के रूप में सामने आई और जो दादावाडी के काफी समय से उपेक्षित जीर्णोद्धार एवं शताब्दी महोत्सव के कार्यक्रम के प्रति कुछ भी आदर प्रदर्शित न कर सके, किन्तु इन कार्यों में वे मूलभूत कोई त्रुटि भी न बता सके। ऐसे वातावरण में हमें जो अविस्मरणीय क्रियात्मक सहयोग, हमारे स्थानीय समाज के अग्रगण्य सज्जन श्रीमान रतनचंदजी साहिब सचेती का, स्वागत समिति के विशेष आग्रह पर स्वागताध्यक्ष का पद सुशोभित करने की स्वीकृति पर मिला, अतः उसके लिये भी कृतज्ञता ज्ञापित करना हमारा कर्तव्य है।

जीर्णोद्धार का काफी कार्य भी शताब्दी महोत्सव के उद्देश्यों से संबंधित होने के कारण अभी भी हमारी देख रेख में स्थानीय श्री संघ के कार्यकर्ताओं की जानकारी के साथ किया जा रहा है। हिसाब का लेखा जोखा समय २ पर "जैन" पत्रों में प्रकाशित होता ही रहा है, कुछ बोलियाँ जो अभी तक भरपाई नहीं हुई तथा जिनके लिये इस रिपोर्ट को शीघ्र प्रकाशित करना भी काफी समय तक रुका रहा तथा रिपोर्ट को अब अधिक स्थगित करना भी वाछनीय नहीं है। अतः चार्टेड अकाउटेंट द्वारा जांचा हुवा व प्राप्त सहायता का सारा हिसाब ब्यौरेवार अन्य पूर्ण विवरण के साथ इस रिपोर्ट में छापा जा रहा है।

अन्त में इसी निवेदन के साथ कि श्री गुरुदेव के इस पुण्य स्मारक को निरन्तर प्रगति करने में हम अधिक से अधिक कार्यक्षम बनें व इस कार्य में समाज का सदैव सहयोग बना रहे इस विश्वास के साथ हम अपना वक्तव्य समाप्त करते है।

रामलाल लूणिया (संयोजक)

हरिश्चन्द धाडीवाल　　मांगीलाल पारख　　उमरावमल लूणिया

सिरहमल महता　　रामदयाल भडारी　　संतोषचन्द बोहरा

(सदस्यगण—श्री जिनदत्त सूरीजी महाराज अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव समिति, अजमेर

का देरी से प्राप्त होना साथ ही मकराना में बिडलाजी का बारह लाख रुपये का काम आ जाने से भावों में तेजी है और उसी वजह से पिछले एस्टीमेट में रु० ११००) बढोतरी हो गयी, माल सर्व मकराना डिलीवरी मिलेगा तथा वहा से लाने तथा फिटींग करने में सर्व खर्च रु० १२००) और अनुमान किया जारहा है सो हमने रु० २३००) की और मजूरी के लिए ट्रस्टी महोदयो को प्रतिवेदन किया है, टेंडर्स व नक्शा सब वहा अवलोकनाथ भेजा है। आशा है स्वीकृति प्राप्त हो जायेगी।

पूज्य आचाय वीरपुत्र १००८ श्री आनन्द सागर सूरीश्वरजी, महाराज उपाध्याय १०८ श्री सुख-सागरजी महाराज, उपाध्याय १०८ श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज तथा अन्य मुनिराज तथा पू० विदुषी आर्या श्री वसन्त श्रीजी, श्री अनुपम श्रीजी, श्री० विचक्षण श्रीजी श्री० सज्जन श्रीजी, आदि साध्वी मंडल, तथा तीनो श्री पूज्यजी महाराज व यति समुदाय, विभिन्न सम्मेलनों के माननीय सभापति, उद्घाटक एव समस्त गुरु भक्त श्रावक श्राविकायें जो नाना प्रकार के कष्ट उठाकर इस अवसर पर दूर दूर से एकत्रित हुए उन्हें मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आपकी सुविधाओं का ध्यान रखते हुए सुन्दरतम प्रबन्ध करने की हमारी प्रबल कोशिश के होते हुए भी यदि आदर-सत्कार में कुछ खामी रही हो तो मैं क्षमा चाहता हूँ।

यह कहना भी अनुपयुक्त न होगा कि ऐसे अखिल भारतीय आयोजन की सार्वभौमिक सफलता पूर्वक सम्पन्नता में पूज्य गुरुदेव का पुण्य और प्रताप ही मुख्य है तथा साथ में पूज्य त्यागी वर्ग का आत्म योग एव चतुर्दिक प्रेरणा तथा समस्त भारतवर्ष के धर्मानुरागी गुरु भक्तो का सक्रिय सहयोग तथा उत्साह एव स्थानीय समाज के उत्साही नवयुवक गण की मानसिक लगन तथा कठोर परिश्रम को भी श्रेय रहा ही है। मेरी चिरवांछित भावना को जो सुन्दर मूर्त रूप प्रदान किया गया उसकी मेरे को जितनी प्रसन्नता है मैं लेख बद्ध करने में असमर्थ हूं।

यह भी सौभाग्य की बात थी कि बीच-बीच में आशाओं के प्रतिकूल कितनी बाधायें भी उपस्थित हुई किन्तु सहयोगी वर्ग की स्थिर बुद्धि एव हितैषियो के कृपा बल पर कार्य चलता ही रहा।

अन्त में यह निवेदन करना अतिशयोक्ति न होगी कि परोपकारी श्री० गुरुदेव की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने में तथा दादावाडी की स्थिति को सुन्दरतम बनाये रखने में प्रत्येक अवसर पर सद्भावनाओं को बढ़ाने का कार्यक्रम फिर भी हमारी ओर से सदैव बना रहा है और भविष्य में भी बना रहेगा।

रामलाल लूणिया

नोट —स्वामी सज्जनों व भोजन व्यवस्था में सहायता प्रदान करने वाले सज्जनों की नामावली तथा आय व्यय विवरण आगे पृष्ठों में अवलोकनार्थ छापा जा रहा है।

—पूज्य दादा साहब का संक्षिप्त जीवन चरित्र—



(नोट—शताब्दी महोत्सव की इस रिपोर्ट में भिन्न भिन्न स्थानों पर पूज्य दादा साहब के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाओं को विस्तृत विवरण प्रसगवश कई स्थानों पर आया है। इसके अतिरिक्त दादा साहब का अलग से छपा हुआ जीवन चरित्र इस रिपोर्ट के साथ पाठकों की सेवा में भेजा जारहा है। इसलिए संक्षिप्त जीवन चरित्र ही यहा प्रस्तुत किया जा रहा है।)

जन्म—आचार्य महाराज श्री जिनदत्तसूरिजी का जन्म गुजरात प्रान्त के (धवलवक्पुर) धोलका ग्राम के हुँबड वैश्य कुलोत्पन्न मन्त्री श्रीवाछिगसाह की धर्मपत्नी वाहड देवी की रत्नकुक्षि से विक्रम सवत् ११३२ में हुआ था। धर्मदेव उपाध्याय ने प्रतिभावान असाधारण बालक को देख कर उसकी माता से बालक के श्रीसम्पन्न गुणो की चर्चा की तथा विश्व हितार्थ उसे दीक्षित कर लेने की अनुमति मागी। भक्ति मिश्रित हृदय वाली माता ने ससार के कल्याणार्थ मातृ हृदय में बल सचित कर बालक को दीक्षित होने की आज्ञा दे दी। सम्वत् ११४१ में उपाध्याय धर्म देव ने नव वर्ष के उस बालक को दीक्षा देकर सोमचन्द्र नाम से विभूषित किया, इनकी बाल्यकाल की प्रतिभा एक आदर्श विद्वान् को सुशोभित करती थी। आपने क्रमश व्याकरण न्याय, अलकार, ध्वनि, काव्य आदि शास्त्रो का अध्ययन एव हरिसिंहाचार्य के पास जैनागम सिद्धान्त की वाचना ग्रहण की। कहा जाता है कि उक्त आचार्य श्री ने प्रसन्न होकर आपको स्वमन्त्र—पुस्तिका अर्पित की। आपके बालशिक्षक सर्वदेवगणि थे।

महत्वपूर्ण कार्य—मुनि सोमचन्द्र ने विभिन्न स्थानों में जाकर जैन धर्म का प्रभाव विस्तीर्ण किया। दीक्षा लेने के २२ वर्ष बाद आचार्यवर्य्य श्री जिनवल्लभ सूरिजी के स्वर्गारोहण के बाद श्री देवभद्राचार्य ने इनकी तपश्चर्य्या और प्रतिभा की शक्ति देख कर उक्त सूरिजी के पद श्री जिनदत्तसूरि नाम से अभिषिक्त किया। आचार्य महाराज ने त्याग और उग्र प्रतिभा से श्रावकों के हृदय पर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर उन्हें आदर्श श्रावक बनाने में भी पूरी सफलता प्राप्त की।

क्रान्तिकारी जैनाचार्य ने अपने जीवन में इतने महत्वपूर्ण कार्य किये हैं जिनके उल्लेख यदि किये जाय तो एक ग्रन्थ बड़ी सरलतापूर्वक तैयार हो सकता है।

युग प्रवर ने सारे जीवन में एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य किया जैसा आज तक किसी भी जैनाचार्य ने एक ही समय में न किया होगा वह कार्य एक लक्ष तीस हजार मनुष्यों को प्रतिबोध देकर जैन धर्म में दीक्षित करना। ओसवाल समाज में ऐसी वृद्धि का कोई उदाहरण खोजे भी नही मिलता। इस घटना से आज के जैन समाज को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। आज यदि कोई जैन बनता है तो समाज अपनाने को तैयार नही। बल्कि जनो को भी, जो अपना प्रगतिशील विचार रखते हैं,

शताब्दी महोत्सव के अवसर पर पधारे हुए मुनिराजों श्री पूज्यों व यति गणों के शुभ नाम

१ आचार्य महाराज श्री १००८ श्री योगपुंज आनन्दसागरजी महाराज
२ उपाध्याय श्री १०८ श्री सुखसागरजी महाराज
३ ,, ,, कवीन्द्रसागरजी महाराज
४ मुनि श्री मगनसागरजी महाराज
५ ,, ,, कान्तिसागरजी महाराज
६ ,, ,, प्रेमसागरजी महाराज
७ ,, ,, गौतमचन्दजी महाराज
८ ,, ,, कल्याणसागरजी महाराज
९ ,, ,, उदयसागरजी महाराज
१० ,, ,, प्रभाकरसागरजी महाराज
११ ,, ,, हेमसागरजी महाराज
१२ ,, ,, प्रमसागरजी महाराज
१३ ,, ,, रवीन्द्रसागरजी महाराज

साध्वीजी महाराज

१ श्री विदुषी श्री उमंगश्रीजी
२ ,, ,, कल्याणश्रीजी
३ ,, ,, चन्द्रश्रीजी
४ ,, ,, वसन्तश्रीजी
५ ,, ,, अनुपमश्रीजी
६ ,, सम्पत श्रीजी
७ , विदुषी श्री विचक्षण श्रीजी
८ , शीतलश्रीजी
९ ,, हेमश्रीजी
१० ,, रणजीत श्रीजी
११ , निपुणश्रीजी
१२ ,, तिलक श्रीजी
१३ श्री विनीता श्रीजी
१४ ,, सज्जन श्रीजी
१५ ,, विबुध श्रीजी
१६ ,, रमणिक श्रीजी
१७ ,, हीरा श्रीजी
१८ ,, प्रवीण श्रीजी
१९ ,, प्रभा श्रीजी
२० ,, जितेन्द्र श्रीजी
२१ ,, दिव्य प्रभा श्रीजी
२२ ,, माणक श्रीजी
२३ ,, चन्द्रकला श्रीजी
२४ ,, मनोहर श्रीजी
२५ ,, सूर्यप्रभा श्रीजी
२६ ,, सुलोचना श्रीजी
२७ , सुदर्शना श्रीजी
२८ ,, चन्द्रप्रभा श्रीजी
२९ ,, सुरंजना श्रीजी
३० ,, मंजुला श्रीजी
३१ , रतिश्रीजी महाराज
३२ ,, [illegible] श्रीजी महाराज
३३ ,, राजेन्द्र श्रीजी महाराज
३४ ,, अनुभव श्रीजी महाराज
३५ ,, जगत श्रीजी महाराज
३६ [illegible]

अष्टम शताब्दी महोत्सव पर बाहर से पधारे हुए पूज्यवर श्री १००८ श्री म॰जैनाचार्यजी श्री वीरपुत्र आनंदसागरजी महाराज, उपाध्याय श्री गुणसागरजी महाराज, उपाध्याय कविन्द्रसागरजी महाराज, के साथ मुनि समुदाय तथा स्थानीय प्रमुख कार्यकर्त्तागण

अथ पूर्वक ब्रत

प्रश्न

ज्ञान दीपिका ग्रन्थ में तुमने यह पूर्वक

शुभ सन्देश

समाज के मंगलमय जीवन का यह शुभ और सुन्दर अवसर है, कि भारत के विख्यात नगर अजमेर में सत्य और अहिंसा के प्रबल प्रचारक, अपरिग्रह और अनेकान्त के समर्थ प्रसारक, महान् क्रान्तिकारी, सन्त शिरोमणि, शासन प्रभावक तथा युग भास्कर परम पूज्य दादा जिनदत्तसूरिजी महाराज का अष्टम् स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव दिनांक २०-२१ व २२ मई को महान् आयोजन के साथ हो रहा है।

दादाजी का जीवन दर्शन, ज्ञान और चारित्र का त्रिवेणी संगम था। दर्शन की साधना में वे अचल हिमाचल के तुल्य स्थिर थे, ज्ञान की साधना में वे सागर के समान गंभीर थे, और चारित्र की साधना में वे एक सुदृढ़ सुभट थे।

दादाजी का जीवन सत्य, शिव और सुन्दर का सुरम्य समन्वय था। वे समाज के शिव थे, जिन्होंने समाज सागर से समुत्थित विष का पान करके जग कल्याण के लिए अपने तप पूत जीवन का अमृत प्रदान किया। समाज क्रांति महायज्ञ के वे एक अध्वर्यु थे।

उन्होंने अपने युग के विकारों को विचारों का रूप दिया, स्वार्थ को परमार्थ में बदला, पददलित मानव का नया मूल्यांकन किया। कपोल कल्पना और आभिजात्य के अहत्व पर आधारित जातीयता को नया संस्कार प्रदान किया जो आज तक दूसरा नहीं कर सका, और नहीं कर सकेगा। उस प्रदीप्त आत्मा ने अपने दिव्य संदेश द्वारा मानव की युग युग से अवरुद्ध चेतना को एक नया प्रवाह दिया, नई दिशा दी। आभिजात्य के दुर्ग और ऊँच-नीचपन की दानवी दीवारों को भूमिसात् करने के लिए ही सम्भवतः उनका प्रसुप्त देवत्व जाग उठा था।

समाज संस्कार के अतिरिक्त उन्होंने सरस्वती के रिक्त कोषागार में अभिनव सर्जना भी की थी। लोक-भोग्य और पण्डित-मान्य दोनों प्रकार के साहित्य में उनकी पैनी लेखनी आज भी एक चुनौती है।

अध्यात्म योगी, समाज संस्कारक, सुमहान् साहित्य स्रष्टा—और इन सबसे बढ़कर सुधावर्षी उस महान् सन्त के जीवन से यदि एक भी सद्गुण का कण कण पाकर उसे जीवन में विराट् बना सकें, तो हमारा यह शताब्दी महोत्सव मनाना सफल हो सकेगा।

उपाध्याय, कविरत्न, श्री अमरचंदजी महाराज
कुचेर (मारवाड़)

श्रीः

प्रार्थना

मैं सब परमधार्मिक जैनीभाइयोंकोचरणार विन्दों में विनति पूर्वक निवेदन करताहूं कि इस उत्तम रत्न "ज्ञानदीपिका" ग्रन्थ को मैंने बहुत यत्न से छपवायाहै, और आशा करताहूं कि आप लोग बड़ी प्रसन्नता पूर्वक इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ेंगे और अन्य सब भाइयों को भी दिखाकर इस मेरे परिश्रम को अवश्य ही सफल करेंगे

मेहरचन्द मैनेजर
संस्कृत पुस्तकालय
सैदमिट्ठा बाज़ार
लाहौर

संदेश व मंगलकामनायें

● इस महोत्सव में मैं दूरी के कारण उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। मैं इस महोत्सव की हार्दिक सफलता चाहता हूँ। शुभ कामनाओं एवं हार्दिक श्रद्धा सहित—

पी० के० गोड, एम० ए०
पूना ४

● अस्वस्थता के कारण अष्टम् स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव में उपस्थित नहीं हो सकता। मेरी यही कामना है कि महोत्सव पूर्ण सफलता प्राप्त करे।

शिवजी देवशी
मठाडावाले

● मैं आपके महोत्सव की सफलता का इच्छुक हूँ।

विष्णु प्रसाद गिरधारीलाल मेहता
कैम्प–आबू (राजस्थान)

● महोत्सव के निमन्त्रण के लिए धन्यवाद। साहित्य, कला एवं संस्कृति का यह अनुष्ठान सफल हो, यही कामना है।

विनयमोहन शर्मा
हेड आफ डिपा० हिन्दी विभाग नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर

● आपके महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन की मैं मंगल-कामना करता हूँ। श्री जिनदत्तसूरिजी की पुण्य स्मृति में मेरी श्रद्धांजलि स्वीकार कीजिए। आशा है भारतवर्ष उनके आध्यात्मिक आचरण से नई शिक्षा ग्रहण करेगा।

पोद्दार रामावतार अरुण
बिहार के कवि समस्तीपुर, बिहार

● पूज्य श्री जिनदत्तसूरिजी अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव के शुभावसर पर आयोजित साहित्य, कला एवं सांस्कृतिक अनुष्ठान में सम्मिलित होने का आमंत्रण के लिए कृतज्ञ हूँ। उत्सव सानन्द सम्पन्न हो और इस उत्सव से साहित्य, कला एवं संस्कृति के आंगन में नयी चेतना आवे, नवजीवन आवे यही मंगल कामना है।

विद्यार्थी नरेन्द्र, बी० ए०
सदस्य, विन्ध्य प्रदेश विधान सभा

● उत्सव की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं अर्पित करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता है यह उत्सव आप इतने शान से मना रहे हैं—इसके लिए आपको मेरी हार्दिक बधाई है।

महेन्द्र
सम्पादक साहित्य सन्देश आगरा

● उत्सव की सफलता चाहता हू ।

डा० बलदेव प्रसाद मिश्र, उपाध्याय, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन,
नागपुर १

● आपके आयोजन की सफलता के लिए शुभ-कामना करता हू ।

कृष्णादेव, सुपरिंटेंडेंट सेंट्रल सर्कल आफ आर्किल्याजी
भोपाल

● मैं उत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हू और चाहता हू कि जन समाज अपनी सास्कृतिक पृष्ठभूमि को समझे और उसका पुण्य प्रकाश जगत् के लिए अर्पित करने में सचेष्ट हो ।

महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य
बौद्ध दर्शन के प्रोफेसर
हिन्दू विश्वविद्यालय ५

● श्री श्रद्धेय जिनदत्तसूरि के अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव के महान् शुभावसर पर होने वाले साहित्य, कला एवं सस्कृति सम्मेलन का अपूर्व आयोजन जनता के सास्कृतिक उत्थान में पूर्ण सहायक सिद्ध हो । सम्मेलन की सफलता में मेरी मगल कामना स्वीकार कर लीजिये ।

प्रकाश 'भारिल्ल' शास्त्री सपादक 'समति सदेश'
जबलपुर

● इस मगल अनुष्ठान के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाए प्रेषित करता हू । नये राष्ट्र की आत्मा का सस्कार ऐसे ही पुनीत प्रयत्नो से सभव है मेरा अपना सुझाव है कि ऐसे आयोजन हर राज्य में किए जाय । एक बार फिर अपनी शुभ कामनाए व्यक्त करते हुए,

राजेश्वर गुरु, प्रोफेसर हमीदिया कालेज,
भोपाल

● इस सारे आयोजन की सफलता के लिए शुभ कामना भेज रहा हू । अवकाश न मिलने से उपस्थित न हो सकूगा इसके लिए खेद है ।

विशेष निवेदन है कि सारे सम्मेलन को कागजी रूप में ही न रखकर कार्यशील करना है उसके लिए ठोस कदम उठाना है । जिस मिशन ... रहे हैं उसमे नये हुए सेवा भावी कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है जो केवल सेवल ... क्रिय काय कर सकें ।

रणजीतसिंह
खादी आश्रम,

सो उनकी मूर्त्ति बनाके सरागी कुदेवों की मूर्तियों की तरह गहना कपड़ा फल फूल आदि से पूजने का उपदेश करने वाले सो संवेगी कहाते हैं॥

और दूसरे जो आत्मज्ञानी अर्थात् स्वआत्म पर आत्म समदर्शी, सनातन शास्त्रों के अनुसार कठिन क्रिया के साधक और शान्ति दान्ति क्षान्ति आदि का उपदेश करने वाले सो ढूंडिये कहाते हैं

सोई पूर्वक

संवेगी साधु आत्मारामजीने जैन तत्वादर्श ग्रन्थ छपाया है सो तिस ग्रन्थ को श्रवण करके अनेक जनों को ऐसी शंका उत्पन्न होती है कि जैनतत्वादर्श ग्रन्थ में जो २ कथन है (सो) सर्वेही न्याय है तथा अन्याय है सो तिस भ्रम रूप अन्धकार के नाश करने के लिये यह ज्ञान दीपिका ग्रन्थ, दीपिकावत् रचा गया है क्योंकि इस ज्ञान दीपिका के वाचने और सुनने से जैनतत्वादर्श ग्रन्थमें जो २

निम्नलिखित सज्जनो की शुभ कामनाए तार द्वारा प्राप्त हुई हैं

● अनुपस्थिति की क्षमा चाहता हू तथा शताब्दी महोत्सव की पूण सफलता चाहता हू ।

सालमचद गोलेछा
कुड्डलोर (दक्षिण भारत)

● आशा करता हूँ, पूज्य गुरुदेव का सदेश घर घर पहुचे ।

नमीचद श्रावक
मद्रास

● शताब्दी महोत्सव की पूण सफलता चाहता हूँ ।

लालचद ढड्ढा
मद्रास

● आवश्यक कार्यवश पहुचने में सवथा असमय, महोत्सव सफलता की हार्दिक कामना करता हू ।

सौभाग्यमल
जबलपुर

● शताब्दी महोत्सव की पूण सफलता चाहता हूँ ।

मुनि कान्तीसागर दर्शनसागर
राजामुन्द्री

● निर्वाण महोत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

मदनचद गोलेछा
टाटानगर

● महोत्सव की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ ।

धर्मचद गोलेछा
कुडडलार

● उत्सव की पूण सफलता चाहता हू ।

चिम्मनसिह स्वरुपचदजी पटया
भूतपूव, विधान सभा सदस्य, राधनपुर

● महोत्सव की सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामना भेजता हू ।

रा ब प्रासकरण हेमचद
बडौदा

● म उत्सव की पूर्ण सफलता का इच्छुक हू ।

अमरचद कोचर
फलौदी

तिस प्रसाद प्रकट करूं कुछक न्याय अन्याय १

अथ जैन तत्वादर्श ग्रन्थ में जो २ विरुद्ध लिखे हैं उनमें कितनेक विरुद्ध यहां लिखते हैं

आत्माराम संवेगीने जैन तत्वादर्श ग्रन्थ छपवायाहै उसमें त्यागी पुरुष साधुओं को ढूंडिये (नाम) संज्ञासे कहकर वहुत निंदा लिखीहै सो उसको हम उत्तर देतेहैं कि हे भाई! तुमको यह भी खबरहै कि ढूंडिये किस रीति से कहाएहैं सोई हम ढूंडिये कहाने का कारण लिखतेहैं जैसे कि

अनुमान १७१८ के सालमें सूरत नगर के निवासी जातिके श्रीमाल एक लवजी नाम शाहूकार ने वजरंगजी यतिके पास दीक्षाली और शास्त्र पढनेलगे फिर शास्त्रके अभ्यास होनेसे दीक्षा लिये पीछे दोवर्षके बाद जो भ्रष्टाचारी मठा व लंवी यति लोकथे उनकी शास्त्रोक्त क्रियाहीन

श्री जिनदत्तसूरि अष्टम शताब्दी महोत्सव का

त्रिदिवसीय कार्य-विवरण

२० मई १६८६ का दिवस इतना सुन्दर, आकर्षक और उत्प्रेरक था जब कि बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी के ज्योतिधर युगप्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज का अष्टम शताब्दी स्वार्गारोहण महोत्सव का कार्य उत्साह और उमंग के साथ प्रारम्भ हुआ।

प्रात ७ बजे का समय था, अजमेर मे जहा देखो वहा रङ्ग-बिरङ्ग परिधानो से परिवेष्टित अनेक आभूषणो से विभूषित महिलाएँ व पुरुष इतस्तत उल्लसित बदन से परम गुरुदेव के समारोह मे भाग लेने, जो भारत के विभिन्न भागो से एकत्र हुए थे, मे तन्मय थे। सचमुच भक्तिशिपक हृदय का उल्लसित वायुमण्डल जनमन को प्रमुदित कर रहा था। स्वभावत प्रकृति भी मानव का साथ दे रही थी। भीषण उष्णता के दिनो में भी यहा पूर्ण शीत का अनुभव हो रहा था। ऐसा, लग रहा था जैसे इतिहास प्रसिद्ध अजयमेरु—अजमेर—मे भारत सिमट गया हो।

स्वर्णिम सूर्य की प्रभातिक किरणें जनमन के सौंदर्य को द्विगुणित कर रही थी। सभी के मन मे एक भाव था कि अध्यक्ष महोदय कब पहुचें और कब उनका भावपूर्ण स्वागत किया जाय। प्रात ८॥ का समय था। अजमेर का रेल्वे स्टेशन "जैन धर्म की जय हो" के गगन भेदी नारो से गूंज उठा। शात और शीतल समीर की लहरिया वायु-मण्डल को और भी परिष्कृत कर रही थी। मानव की सामूहिक भावना जब भक्ति के रूप में या श्रद्धा के स्रोत से प्रवाहित होती है तब रस परिपक्व होने लगता है। ऐसा लग रहा था भले ही भक्ति स्वतन्त्र रस न हो पर आज साहित्य की इस व्याख्या का अपवाद दृष्टिगत हो रहा था। शोभा यात्रा की विस्तृत तैयारी पूर्व से ही की जा चुकी थी। लगभग एक मील की शोभा-यात्रा अजमेर के लिए अपूर्व थी। खुली मोटर मे बैठे हुए प्रस्तुत महोत्सव के अध्यक्ष महोदय श्री मेहतावचन्दजी गोलेछा और स्वागताध्यक्ष श्री रतनचन्दजी सचेती जनता के स्नेहपूर्ण अभिवादन का उत्तर करबद्ध अजलि किए दे रहे थे। अनेक प्रकार के वाद्यो मे स्वर लहरिया निकलती हुई उत्साह को द्विगुणित कर रही थीं। गजराज अपनी मस्तभरी चाल से चल रहे थे। मार्ग मे जैनधर्म एव आचार्यवर्य श्री जिनदत्तसूरिजी की जय के गगनभेदी नारे प्रतिध्वनि के रूप मे गूज रहे थे। सर्वत्र गृहो की खिडकियों मे आबाल-वृद्ध उत्सुकता के साथ शोभा-यात्रा का निरीक्षण कर रहे थे। मदारगेट से पुरानीमंडी के मार्ग को सुशोभित करता हुआ जुलूस नया बाजार और धानमंडी मे पहुचा। अन्त मे लाखन कोठडी में पहुच कर विसर्जित हुआ। स्मरण रहे कि स्वागतार्थ नगर में कई द्वार भी बनाए गए थे, विशेषता यह रही कि जैनधर्म के सभी सम्प्रदायों का इस जुलूस के प्रति सद्भाव था।

का मंदिर है अथवा यह मेरा उपाश्रय है इत्यादि यथा सूत्र "चेइयं ठपावेइ दव्वाहारी णो मुणी भ विस्सइ लोभेण मालारोहण देउल उवहाण उद्यमण जिण विंव पइठावण विहिउ माइएहिं वहवे" इत्यादि (सूत्र) अस्यार्थः मूर्त्तिकी स्थापना करावेंगे, द्रव्य धारी मुनी घणे ही होजावेंगे, लोभ करके माला रोपण अर्थात् मूर्त्तिके कंठमें फूलोंकी मालाडालके फिर उस का मोल करावेंगे अर्थात् नीलाम करावेंगे, देहरे पांचे तप उजमण करावेंगे, जिन विम्ब प्रतिष्ठा करावेंगे, इत्यादि घणे पाखण्ड होजावें गे सो. इस न्यायसे साबित होता है कि यदि पहिले यह क्रिया होती तो श्री ५ भद्रबाहु स्वामी जी ऐसे क्यों कहते कि आगेको ऐसे क्रिया करने वाले होवेंगे॥

और आज कल देखनेमें भी बहुलता आर

में यह विचार घर किए हुए हैं कि आप केवल दलित वर्ग के प्रतिनिधि के नाते ही भारत सरकार में सम्मिलित हैं पर जिसने बाबूजी को निकट से देखा है वे अधिकार के स्वर में कह सकते हैं कि वर्ग विशेष जैसी कोई वस्तु या आग्रह आपके जीवन में कभी नहीं पनपे। आप तो अखंड मानवता के समर्थक एवं अखंड मानवीय संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में जीये हैं और जीते रहेंगे। आपका हार्दिक औदार्य समय २ पर विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है। व्यक्ति की अपेक्षा व्यक्तित्व के विकास की परम्परा को जीवन में आपने सदा से स्थान दिया है। सौभाग्य की बात है कि आचार्य जिनदत्तसूरिजी जैसे उदात्त नेता एवं तात्कालिक लोक चेतना के अग्रदूत के अष्टम शताब्दी समारोह का उज्ज्वल उद्घाटन आपके ही कर कमलों द्वारा सम्पन्न होने जा रहा है। यह जन समाज का परम सौभाग्य है कि अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यों का उत्तरदायित्व आपके कन्धों पर रहते हुए भी आपने अपने मूल्यवान कुछ क्षण इस अवसर के लिए प्रदान किए। अब मैं बाबूजी से विनम्र निवेदन करूंगा कि वे अपने मननीय प्रवचन द्वारा उत्सव का उद्घाटन करें।

तदनन्तर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच बाबू जगजीवनरामजी भाषण देने खड़े हुए। उस समय उत्सव के अध्यक्ष एवं राजस्थान के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री मेहताबचन्दजी गोलेछा ने सुनहरी माला बाबूजी के गले में पहना कर स्वागत किया। स्मितवदन से उद्घाटन प्रारम्भ करते हुए बाबूजी ने कहा —

उद्घाटन भाषण

आदरणीय मुनिवृन्द, अध्यक्ष महोदय, देवियो और सज्जनो!

मैं नहीं समझ पाता कि मैं इस काम के लिए कैसे अधिकारी चुना गया हूं। ऐसे महापुरुष आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी के अष्टम शताब्दी स्वर्गारोहण उत्सव में सम्मिलित होकर मुझे आपने यहां आमंत्रित किया उसे भी मैं अपना अहोभाग्य समझता हूं। ऐसे अवसर पर तो कोई तत्वदर्शी, ऋषि मुनि ही इस के अधिकारी हो सकते थे लेकिन जब कुछ मित्रों का आग्रह हुआ तो मैंने ऐसा समझा कि इस अवसर से लाभ उठा कर मैं भी आचार्य श्री के चरणों में अपनी श्रद्धांजली अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त करूं। इसीलिए मैं यहां आ गया। ऐसे अवसरों पर ध्यान आत्मतत्त्व की तरफ ही जाता है। जब से सृष्टि का क्रम चला, मनुष्य हृदय में बराबर जिज्ञासा की भावना रही है कि आखिर हम कौन हैं? कहां से आए, क्यों आए, कहां जायेंगे और किस लिए यहां आए। यह एक स्वाभाविक प्रश्न है जो प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में उठता है और जब से इस संसार का क्रम चला और जब से यह प्रश्न मानवमात्र के हृदय में पैदा हुआ तभी से तत्वदर्शी लोगों की चेष्टा इस प्रश्न का उत्तर देने की रही। कितने ही तत्वदर्शी हुए और कितने ही ग्रन्थों में उन्होंने इस प्रश्न का उत्तर लिखा लेकिन यहां मैं एक बात का जरूर ध्यान दिलाऊं कि जितने भी तत्वदर्शी हुए और जितनों ने भी उस प्रश्न का उत्तर दिया या देने का प्रयत्न किया सब में बहुत दूर तक एक मान्यता है। [illegible] है। अगर किसी भी धर्म को ले लें चाहे वह भारतीय परम्परा का धर्म हो चाहे भारत से बाहर

श्रमण साध अणगार गुर. वंदू चित्त हर्षेत॥१॥
इत्यादि परन्तु यहांभी साधु को संवेगी नही लिखा
है कारणात् स्वछंद संवेगी कहानेलगे और अप
ने व्यवहार वसूजिव, बुद्धिके अनुसार ग्रन्थ रचा
ने लगगये और पूर्वेक जिन बिम्ब प्रतिष्ठाआदि
कराने लगगये और तिस समय में जो कोई साधु
तथा साध्वी तथा श्रावक वा श्राविका, प्राचीन सू
त्रानुसार क्रिया साधक थे उनकी हीला निंदा कर
ने लगगये यह कथन सोला स्वप्नके अधकार
में खुलासाहै इति·

और भगवंत्त श्री ५ महावीर स्वामीजी के पीछे१७०
वर्षके लगभग ७ सप्तम पाट श्री ५ भद्रबाहु स्वामी
जीके पीछे संपूर्ण १४ पूर्वेकाज्ञान तो विछेदगया
कोंकिस्थूलभद्रजी १० पूर्वके पाठी हुएहैं और स्व
पनों केअंधकारमेंभी लिखाहै कि भद्रबाहुस्वामी
जी के पीछे श्रुतकेवली नहीं होवेंगे सोई भद्रबाहु

शताब्दी महोत्सव के उद्घाटक



माननीय जगजीवनरामजी
सचार मन्त्री–भारत सरकार नई दिल्ली

शताब्दी महोत्सव के अध्यक्ष



सेठ मेहताबचन्दजी गोलेछा, जयपुर

शताब्दी महोत्सव के प्रमुख सहयोगी



माननीय हरिभाऊजी उपाध्याय
मुख्य मन्त्री-अजमेर राज्य, अजमेर

जैन सांस्कृतिक सम्मेलन के अध्यक्ष



माननीय नरोत्तमलालजी जोशी
...न सभा जयपुर

और ऐसेही श्री ५ सुधर्म स्वामीजी की परंपरा थी, विरुद्ध बाहुलता अन्य २ श्रद्धा और अन्य २ गच्छ अन्य २ समाचारीप्रवर्तक यति लोक बहुत होतेरहे और यथार्थ सूत्रोक्त चारी थोड़ेही होतेरहे क्योंकि श्री ५ भद्रबाहु स्वामी कृत कल्पसूत्र श्री ५ भगवंत महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणे कथनम् "सक्कृत इन्द्र वक्के भगवंते श्री ५ महावीरे जन्म रासीउद्र भस्म रासी ग्रहे स्मागते ३३ कारणात् जिन शासणे दो सहस्र वर्षेनो उदय पुया भविस्सइ "तस्मात् कारणात् अनुमान १५३१ के साल दो हजारवर्ष पूर्ण हुएथे कि नगर अहमदाबादका निवासी जातिका वैश्य, नाम लोंका, तिसने सावद्य व्यापार अर्थात् वाणिज्य छोड़के आजीविका के निमित्त यतियोंके पाससे पराचीन अचाराङ्गादि भंड़ार गत जो शास्त्रथे उनमेंसे लेकर

आतो है और लोगा की भावना ऐसी बन जाती है कि चाहे सुन्दर भावना हो उसको भी तोड़ना, तो फिर क्रान्तिया होती है। हमारे धर्म के दरअसल में भी बहुत सी क्रान्तियाँ हुई और जब २ क्रान्तिया हुई है तब २ ही मानवता के लिए अच्छा काम हुआ है। कब २ और क्या २ क्रान्तिया हुई इसका लम्बा इतिहास है उसका विस्तृत विवेचन करने का न तो मेरे पास समय ही है और न मैं अभी करना ही चाहता हू लेकिन इतना जरूर बताना चाहता हू कि अब तक लगातार जितने भी दर्शन हुए, जिन २ लोगो ने भी एक फिलो-सोफी, जीवन दर्शन लोगो के सामने रखा उन सब ने इस पर अवश्य जोर दिया कि इसान के सामने एक सम्यक दर्शन होना चाहिए, इसान के सामने एक सम्यक ज्ञान होना चाहिए। दर्शन और ज्ञान से ही उसका काम नही चलता, मनुष्य का अपना चरित्र और आचरण भी होना चाहिए। सक्षेप मे ऊचे २ सिद्धान्तो की माला जपा करें लेकिन जब तक हम उनको अपने जीवन में नही उतार लेते, कोई फायदा नहीं होता, कोई लाभ नही होने वाला। इसलिए आप किसी भी धर्म को लें उसमे महत्व दिया हुआ है सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र का। सम्यक दर्शन, और सम्यक ज्ञान से ही काम नही चलता जब तक कि हममें चरित्र न हो। मैं एक बात जरूर सोचता हू कि अगर हमारा दर्शन ही गलत है तो हमारा ज्ञान भी गलत होगा और ज्ञान गलत हुआ तो हमारा जो आचरण है, जो चरित्र है वह भी गलत हो जायगा लेकिन सुन्दर दर्शन है, अच्छा तेज है, अच्छा ज्ञान भी है लेकिन उन अच्छाइयो का कोई मूल्य नही जब तक कि वे आचरण में न हो। चरित्र मनुष्य जीवन का आवश्यक अग है। वैसे व्यवहार रूप मे आप किसी भी धर्म को ले लें, कोई भी धर्म यह नहीं कहता कि तुम चोरी करो, कोई धर्म यह नही सिखलाता कि तुमको हिंसा करनी चाहिए। जैन धर्म मे भी बहुत ऊची २ बातें है, पाचो महाव्रत इसमे मौजूद है लेकिन प्रश्न यह है कि हम उनको जीवन मे उतारते है या नही। मै सोचता हू कि जितने भी इस देश मे धर्म हुए है उन सब के अन्दर बहुत ऊचे २ सिद्धान्त है लेकिन इसके अतिरिक्त भी एक साधारण ज्ञान इसान को होना चाहिए।

मै एक चीज और सोच रहा था, आज के युग में यह कहा जा रहा है कि हमारे देश मे एक इस तरह की समाज रचना होगी जिसे समाजवादी समाज कहा जाता है। जब आपका निमत्रण मिला तो उस समय मे मै यह सोचने लगा कि यह जो समाजवादी समाज की रचना की बात है यह कोई नई बात आपके लिए नही है। पहले भी हमारे मुल्क में इस तरह की बात रही है। मैंने विचार जानकारी करके देखा है कि जब जैन तीर्थंकर हुए उन्होंने पांच व्रतो का जो सिद्धान्त आपके सामने रखा होगा तो उस समय उनके ध्यान में भी उस तरह के समाज की भावना रही होगी—जिस समाज में कोई व्यक्ति सारी सम्पत्ति अपने पास में एकत्रित न करले जिसकी कि उसको आवश्यकता नही है। सम्पत्ति एकत्रित की जाय लेकिन उसके साथ उसकी आवश्यकता का परिमाण भी होना चाहिए। मै यहां यह बताना चाहता हू कि एक व्यक्ति के पास अधिक सम्पत्ति हो जाय इसमें कोई खराबी नहीं होती लेकिन कोई सम्पत्ति के बल पर उसका सदुपयोग न करें, उससे दूसरे आदमियो पर दबाव डाले और नाजायज दबाव व्यक्तियों पर डाला जाता है तो यह

र्यको ढूंडके उनके पास पैंतालीस पुरुष, दीक्षा लेकर देशांतरोंमें शास्त्रोक्त उपदेश करके जिनधर्म दिपानेलगे ततः तासमय जिन शासनका उदय होताभया. इति.

और संवेगी लोकभी ऐसे कहतेहैं कि ढूंडि क मत्त कुछक ज्यादा ४०० चार सौ वर्षसे निकलाहै सो सत्यहै परन्तु पूर्वक परमा र्थ को अंगीकार नहीं करतेहैं क्योंकि सन्क्ष त इंद्रके कहने वमूजिब तो पुराने शास्त्रा नुसार सनातन धर्म प्रकट भया इति.

इस रीती से पूर्वक यतिलोकोंकी क्रियाहीन होरहीथी सोई पूर्वक यतियोंकी लवजीना म यतिने क्रियाहीन देखकर अनुमान १७२० के सालमें अपने गुरुको कहने लगे कि तु म शास्त्रोंके अनुसार आचार क्योंनही पालते तब गुरुजी बोले कि पञ्चम कालमें शास्त्रो

यदि बडे ह, सम्पत्तिशाली ह, विद्वान और बुद्धिमान हैं और हमारे सामने जब हमारे ही छोटे भाई आते हैं जो निधन ह, मूख हैं उनसे अगर हम नफरत करते ह, दुराव करते ह तो यही हमारे बन्धनों का कारण बन जाते हैं, इन्ही से हम कर्मों के गुलाम बन जाते ह, बन्धना में जकड जाते ह इन बन्धनो से मुक्त हो जाना ही जिन्दगी में ही मुक्त होना है। तो मं यह कह रहा था कि यह जो समाजवाद की भावना है उसमें जातिवाद–वगवाद को कोई स्थान नही दिया जा सकता, इसका कोई समन्वय हा नही सकता। इसके साथ ही जब समाज के अन्दर यह भावना आ जाती है कि हमारा ज्ञान सीमित लोगो तक ही रहे, बाहर के लोगो को उससे लाभ न हो–जब ऐसी भावना आ जाती है तो यह धम गिरोह बन जाता है, वह धम धर्म नही रह जाता, एक दायरे में, एक सीमित क्षत्र म आ जाता है, उसमें विश्व कल्याण की, मानवता के कल्याण की भावना नही रह जाती। दुनियां में जितने धम हुए, सीमित और सकुचित रहे। ईसाई धर्म पहले बहुत ही सकुचित रहा, यहूदियो के अतिरिक्त किसी को ईसाई नहो बनाया जाता था लेकिन उसम फिर क्राति हुई और बाहर के दूसरे लोगा को भी ईसाई बनाया गया। इसी प्रकार बौद्ध भी जब हुए तो वे क्षत्रीय कुल के थे और शुरु शुरु म उनका ध्यान यही रहा कि क्षत्रियो को ही बौद्ध धम में लिया जाय लेकिन धीरे २ यह भावना लुप्त हुई और फिर बौद्ध धम हिन्दुस्तान से बाहर भी गया और इसी से यह पूण रूप से विकसित भी हुआ। इसी प्रकार आज आम तौर पर हिन्दुस्तान में ही यह धारणा है कि जैन धम तो आज कुछ चुनी हुई जातियो का ही धम है, आज भी इसके बारे में भिन्न २ प्रकार को भ्रातिया रही ह और लोगो की इसके बारे में भिन्न २ प्रकार की राय है लेकिन यह सही है कि यह भावना चली और बहुत दिनो तक चलती रही और आज भी है। आचाय जिनदत्तसूरि की सबसे बडी विशेषता यह है कि उन्होन एक रास्ता खोला और लोगो का इस धर्म में प्रवेश पाने का अवसर प्रदान किया। यह तो मानी हुई चीज है कि जहा सम्यक ज्ञान होता है वहा तो समस्त लोगो के लिए, मानवता के विकास के लिये होता है और अगर हमको अपने ज्ञान म सदेह नही है तो हमें अपने ज्ञान को दुनिया में प्रसारित करने में हिचकिचाहट नही होनी चाहिए। अपने माल को दिखाने में लोगा को तभी डर लगता है जब वह समझते ह कि हमारा माल ठीक नही है। तो दुनिया में जितने भी धर्म बढे उन सबका लक्ष्य प्राणी मात्र की भलाई करना ही था जिसमें प्राणी मात्र की भलाई का लक्ष्य न था वह आगे नहीं बढ सका, वह दुनिया का धम नहीं बन सका। मुझे तो आचाय श्री की सबसे बडी विशेषता यह मालूम हुई कि उन्होंने जो एक लाख से अधिक अजैनियो को जैन बनाया उसमें उन्होने जैन धम को समस्त मानवता के लिए प्रसारित किया।

यहा एक चीज मुझे और याद आती है। मं जिस स्थान से आ रहा हू वह जैन धम का बहुत अच्छा केन्द्र है और वहा पर जो जैन पुस्तको का सग्रह किया है वह शायद हिन्दुस्तान के अच्छे सग्रहो में से है। म आरा स आ रहा हू। मेरा वहा के जन मित्रो से भी सम्पर्क है। जिस समय हरिजन के मदिर प्रवेश कराने का कानून पास हो गया, नाम तो मैं भूल रहा हू, लेकिन कोई मुनि

कोई. त्यों हम ढूंड्यो धर्म दयामें जीव दया विन धर्म न होई॥१॥

तव परस्पर लोक यों कहते भए कि यह वह यति है जिनोंने ढूंडके क्रिया साधी है ऐसे ही ढूंडिया २ नाम प्रसिद्ध होगया और उनकी दमितइन्द्रियपन रागरंग विषियादि. विरक्ति जप तप रूप समाधि को देखकर व हुत शिष्य होगये जो किसी को इसमें शं का उत्पन्न होय तो जैनतत्वादर्श ग्रन्थमें से सहीह करलेना. क्योंकि वहांभी ५९२ पत्र पर यह लवजीका कुछक कथन है और जो कोई मत पक्षी ऐसे कहे कि लवजीने उक्त से नवीन मत निकाला है तो फिर उसको यह उत्तर देना चाहिये कि उस लवजीने तो कोई उक्त शास्त्र नहीं रचाये क्योंकि जै नतत्वादर्श रचाने वालेने भी शास्त्रोक्त

रही है कि जितने भी महापुरुष आए और इसके लिए प्रयत्न किए लेकिन उनको इसमें पूर्ण सफलता न मिल सकी। ज्ञान और दर्शन की जो चीजें हैं उनको पीछे रख कर समाज में इस तरह की व्यवस्था हावी हो गई कि सिद्धान्त के रूप में जिसे गलत माना जाता है वह व्यवहार में समाज का एक आवश्यक अंग बन गई। इसके लिए चाहे आप बौद्ध धर्म को ले ले, चाहे ईसाई धर्म या मुस्लिम धर्म को ले लें सभी में यह चीज मिलती है। सिख-धर्म के अन्दर जाति व्यवस्था न थी लेकिन उसमें भी यह घर कर गई। जिस सिद्धान्त को छोड़ने के लिए एक नये सिद्धान्त की रचना हुई उससे पहला सिद्धान्त तो न छूट सका लेकिन दूसरा समाज पर छा गया, वही चीज समाज का अंग बन गई और वह धर्म भी कही जाने लग गई। जैन-धर्म में भी सिद्धान्त रूप में तो जाति व्यवस्था को कोई स्थान नहीं है लेकिन व्यवहार में तो निश्चय ही है। समाज के अन्दर तो जाति व्यवस्था को माना ही जाता है और इसीलिए मैं कह रहा था कि जहां सम्यक ज्ञान हो, सम्यक दर्शन हो लेकिन सम्यक आचरण न हो वह नष्ट हो जाते हैं।

जैन समुदाय एक ऐसा समुदाय है जो हमारे देश का एक सम्पत्तिशाली समुदायों में से एक है। ठीक भी है, गृहस्थी चलानी है, बाल बच्चों का पालन पोषण करना है इसके लिए तो सम्पत्ति का अर्जन करना ही होगा, यह तो ठीक है लेकिन इसके साथ साथ जो आपके जैन-धर्म में सिद्धान्त है, अपरिग्रह की जो भावना है उसको अगर हम भूल जाते हैं तो फिर हमारी हालत ऐसी ही रह जाती है जैसी कि एक जहाज के चक्कर में पड़ जाने से हो जाती है। हम भी इसी प्रकार संसार के भंवर में पड़ जाये तो जो अपरिग्रह का सिद्धान्त है उसी से हम त्राण पा सकते हैं। आज जो समाजवादी व्यवस्था की बात है उसके जन्मदाता कार्लमार्क्स ने कहा है कि जिस आदमी के पास सम्पत्ति है वह आखिर आती कहां से है? कार्ल मार्क्स ने कहा है कि सम्पत्ति ही हिंसा का समुच्चय है। जिसकी मेहनत से सम्पत्ति पैदा की जाती है या सम्पत्ति पैदा होती है अगर उसकी मेहनत का रिवार्ड पूरा २ दे दें तो फिर सम्पत्ति एकत्रित होने के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। अगर हमने सम्पत्ति अर्जन की तो इसके मायने यह हुए कि हमने दूसरे की मेहनत का पूरा २ मुआवजा नहीं दिया। जैसे एक खेती में काम करने वाला है या और दूसरे काम करने वाले हैं हमने उनसे काम लिया तो हमको उनका पूरा २ पारिश्रमिक देना चाहिए और अगर हमने नहीं दिया और उसे अपने पास रख लिया तभी वह सम्पत्ति हमारे पास एकत्रित होती है। कार्ल मार्क्स ने यही कहा है कि जब हम किसी से काम लेकर उसका पारिश्रमिक उचित रूप में नहीं देते हैं तो उसके दिल को ठेस पहुंचती है, चोट पहुंचती है और यही हिंसा है। किसी के दिल को दुखाना, उसके दिल को चोट पहुंचाना हिंसा ही तो है और इसीलिए सम्पत्ति का एकत्रिण हिंसा कहलाता है। उन्होंने यह भी बताया है कि जब हम एक श्रमिक को उसको पारिश्रमिक नहीं देते हैं तो उसके दिल में यह भावना पैदा हो जाती है कि जब आज उसकी मजबूरियों का फायदा उठाया गया है और उसको पूरा पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो जब मौका मिले तो वह भी उसका बदला ले। तो जो चीज कार्ल मार्क्स ने कही वही चीज हमारे यहां के दर्शनों में आई है कि अपरिग्रह होना

जी मुखवस्त्रिका रहित यतियोंका शिष्यथा इसे नवीन मालूम हुई सोई लवजीने सूत्रानुसार मुखवस्त्रिका मुखपर लगाई और जो कोई ऐसे कहे कि मुखवस्त्रिका मुखपर लगानी कहां चलीहै तो उसको यह पूछना चाहिये कि मुखवस्त्रिका हाथमें रखनी कहां चलीहै सो असल अर्थतो यहहै कि मुखपर रहे सो मुखवस्त्रिका और जो हाथमें रहे सो हाथवस्त्रिका और फिर कोई ऐसे कहे कि मुखवस्त्रिका तो चलीहै परंतु डोरा कहां चलाहै तो उसको यह कहना चाहिये कि रजो हरणकी फली अर्थात् दशियोंमें डोरी पावणी कहां चलीहै और के तारकी और के हाथकी चलीहै इत्यादि

सो अब इनदिनोंमें उन लवजी महाराजके आमनाय के साधु महात्मा उदयचंदजी

तो मं यहा आचार्य श्री के चरणो में अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहूगा कि जो एक चीज कही जाती है कि कोई भी अजैनी जन बन सकता है तो यह तो बडी खुशी की बात है कि कोई भी जन-धम म आ सकता है। म यहा पर आपके सामने एक चीज रखना चाहता हू कि इस मौके पर आप जैन साहित्य के प्रचार के लिए कोई ठोस कदम उठायें तो ज्यादा अच्छा होगा। मिसाल के तौर पर मैं आपको बताऊ कि जब कभी आप अमृतसर जाय, सिखो के गुरुद्वारे में जाय, वहा से जब आप निकलेंगे तो आपको वह इतना साहित्य दे देंगे कि आपको अगर सिख-धम के बारे में कुछ भी ज्ञान न होगा तो भी अमृतसर से घर आते ट्रेन में पढते २ ही आपको सिख धम के बारे म मालूम हो जायेगा कि सिख धम के मौलिक सिद्धान्त क्या ह। ऐसा ही प्रबन्ध आपको भी करना चाहिए। आपके समाज में पैसे की कमी तो भगवान की कृपा से है ही नही। पैसे का इस कामों मे ही आपको उपयोग करना चाहिए। मुझे अक्सर भिन्न २ प्रकार के जल्सो में भी जाने का अवसर मिलता है, हिन्दु समाज के भी कई जल्से होते ह उनम भी जब कुछ लोगो का आग्रह होता है ता म चला जाया करता हू और वहा भी म यही बताया करता हू कि जो आपके पास ज्ञान भडार है उसको आप अपने तक ही सीमित न रखें बल्कि उसको दूसरे लोगो म भी प्रसारित करें ताकि वह समस्त मानवता के कल्याण की चीज बन सके। आचार्य श्री ने भी कई पुस्तको को लिखा उनका लिखा साहित्य बहुत ऊचा साहित्य है, धार्मिक क्षेत्र म और नीति के क्षेत्र में भी उन्होने लिखा है ता जब आप उनके साहित्य को प्रकाशित करेंगे ता जो जन धम के मानने वाले ह वे तो उनको मानते ही ह लेकिन जो जनी नही हे वे भी उनको माननें लगेंगे, उनकी जयन्ती मनाने लगेंगे एक जनी के रूप मे ही नही बल्कि एक साहित्यज्ञ के रूप मे भी। इस प्रकार के साहित्य प्रकाशन से आपके जो सिद्धान्त ह उनका बहुत बडा प्रचार होगा इसीलिए आप न केवल जिनदत्तसूरि के ही साहित्य को प्रकाशित करें वरन् समस्त जैन-साहित्य को प्रकाशित कर तो वह आपके लिए सबसे बडी चीज होगी। इसीलिए आज आप इस उत्सव में यह तय करे कि न केवल श्री जिनदत्तसूरि के बल्कि समस्त जन साहित्य को प्रकाशित कर समस्त मानव समाज के लिए उसे उपलब्ध करायें तो आप आचार्य श्री की सबसे बडी सेवा कर सकेंगे। तो मैं इन शब्दो के साथ आपके समारोह का उद्घाटन करता हू और अपनी श्रद्धाजलि आचार्य श्री के चरणो में भेंट करता हू।

नर करके पूर्वक मतावलम्बियों को रोका भीहै क्योंकि पिछले आचार्य षट् मतके तर्क शास्त्र रचगयेहैं सो उनशास्त्रोंकेवमूजिव बहुत ही परिश्रम करके इस ग्रन्थमें लिखित करीहै और कई एक प्राचीन शास्त्रोंमें से जैन आमनाके अवतारोंका और गुरूनि ग्रन्थका और धर्मका कथन कियाहै और कई एक पूर्वोके ज्ञान विछेद हुए पीछे य तिलोकोंने कुछ तो प्राचीन शास्त्रानुसार और कुछ अपनी बुद्धि अनुसार से ग्रन्थ रचायेहैं सो उनमेंसे श्रावकवृत्ति आदिक का कथन लिखाहै सोई जो प्राचीन शास्त्रोंके अनुकूल कथन कियाहै सोतो बहुत सुन्दर और सत्यहै, और जो नवीन शास्त्रोंसे तथा अपनी युक्ति (दलील) से लिखाहै सो कुछ संभवहै, और कुछअसंभवहै, क्योंकि उसमें कुछ

नसियांजी भी भारतीय दर्शनीय स्थानो में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। हमारे परम पूज्य दादा साहब गुरुदेव युग प्रधान श्री जिनदत्त सूरिश्वरजी का स्वर्गारोहण स्थान भी अजमेर ही है, जहा सवन् १२११ मे आषाढ शुक्ला ११ के दिन आप स्वगवासी हुए।

यही दादावाडी जहा आप हम सब एकत्र हुए बठे हैं, ८०० वप पूव हुए उन महापुरुष की आज हमे याद दिला रही है। भौतिकवाद के भुलावे में भूल रहे विश्व को दादावाडी की यह पवित्र भूमि आज एक पवित्र सदेश देना चाहती है—दादा गुरुदेव के अमृतापम उपदेशो को वह पुन दुहराना चाहती है—हम सबको जागृत करना। विश्व में आज सवत्र भय और ईर्ष्याद्वेष का विषैला वातावरण व्याप्त है। शान्ति की टाह में अणुबम और परमाणु बमो के हिंसाकारी शस्त्रो की शरण लेने वाले लोग माग भूलकर इधर उधर भटक रहे हैं उन्हे इन भारतीय महापुरुषो की स्मृतिया एक प्रकाश दिखाना चाहती है।

दादा गुरुदेव ने एक चिराग लेकर मास मदिरा, आदि व्यसनो के कुमाग पर जाते हुए लोगो को सुसस्कारित कर सन्माग पर लाने का महान् काय किया था। वह चिराग था–धम। धर्म रूपी चिराग के प्रकाश में ही सुख और शान्ति की खोज हो सकती है। मुक्ति का पवित्र स्थान धम माग द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। उसी धम माग पर चलने के लिए हमें महापुरुषो के पदचिह्न खोजने की आवश्यकता है। कहा है —

जीवन चरित महापुरुषो के हमें नसीहत करते हैं।
हम भी अपना अपना जीवन, स्वच्छ सफल कर सकते हैं॥

महापुरुषो की जयन्तियाँ या यह शताब्दी महोत्सव उन्ही महापुरुषो के पदचिह्नो की एक खोज मात्र है। यदि हम उनके पदचिह्नो पर चलने मे सफल हो सके तो हमारा जीवन सुखमय बन जायगा। सुख और शान्ति हमारे पैर चूमेगी।

एक महान् धर्म प्रचारक--

दादा गुरुदेव न केवल एक महान् जैन सन्त ही हुए हैं बल्कि एक महान् योगीन्द्र, साहित्य-लेखक और असाधारण प्रतिभा सम्पन्न शासन प्रभावक भी हुए हैं। मानव समाज पर उनका बडा उपकार है। उनकी वाणी में वह जादू भरा था जिसके मिठास से भौर की तरह सारा विश्व मुग्ध था। एक लाख और तीस हजार की एक बहुत बडी सख्या वाले मनुष्यो ने उनसे प्रतिबोध पाकर, जैन धम अगीकार कर, अपना जीवन सफल बनाया था। यहाँ जैन धम अगीकार करने का अथ है बुरे सस्कारो को त्याग कर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचय और अपरिग्रह मय सुसस्कारो को ग्रहण करना।

इन्ही पच महाव्रतो का अमृत दादा गुरुदेव ने पिलाकर चहुँ ओर अपनी कीर्ति ध्वजा फहराई थी–मनुष्य मात्र के दिल म वे अपार श्रद्धा भाजन बन गये थे। हर्ष है कि आज हमारे श्रद्धेय महान्

अनर्गल रचे हैं

यदि इसमें किसी पुरुषको शङ्का उत्पन्न होतो उसी जैनतत्त्वादर्श में देखकर निश्चय करले ना और जो २ जैनतत्त्वादर्श ग्रन्थमें विरुद्ध हैं उनमें से अब हम कईएक विरुद्ध यहां वर्णी मात्र लिखते हैं यथा

(१) प्रथम जैन तत्त्वादर्श ग्रन्थ के ५७४ वें पत्र में लिखाहै कि ११४५ के सालमें जन्म ५ वर्षके ने दीताली और ८४ चुरासी वर्षके होकर काल करा, १२२९ के सालमें देवचन्द्र सूरिजीके शिष्य, हेमचन्द्र सूरिजी हुए उनको लिखाहै कि तीन किरोड़ ग्रन्थ रचेहैं, सो प्रथम तो पांच वर्षके को दीक्षा लिखीहै सो विरुद्ध अर्थात् झूठहै क्यों कि सूत्रमें ५ वर्षके को दीक्षा देने वाला जिनाज्ञा से बाहर लिखाहै॥ यथा व्यवहार सूत्रके १० दशवें उदेशेका १९वां सूत्र "नो कप्पइ निगन्थाणं वा निग

यह सब तभी सम्भव है जब कि हम स्वयं भी एक्य सूत्र में आबद्ध हो जाय। आज संगठन का युग है। "संघ शक्ति ही महान् शक्ति है।" अब हमें समस्त साम्प्रदायिक गच्छीय भेदभावो को भुलाकर "जैन जैन सब एक" का नारा लगाते हुए "जनत्व" की कीर्ति ध्वजा फहरानी है।

यह शताब्दी महोत्सव, इन्ही सब उच्च अभिलाषाओं के साथ आयोजित किया गया है। यहा बैठकर हमें एक ऐसी योजना बनानी है जो शासन प्रभावक, संघीय संगठनकारी और प्राणीमात्र के लिये हितकारी हो।

अब आपका अधिक समय न लेकर म पुन विनती करूगा कि दादा गुरुदेव ने जिस धर्म-ज्योति द्वारा संसार को ज्योतिर्मय बनाया था–आज वह ज्योति मन्द होती जा रही है–हमें अपने स्नेह-संगठन द्वारा उस ज्योति को पुन अधिक प्रज्ज्वलित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

दादा गुरुदेव उत्सव को सफल बनावेगे। उत्सव की सफलता के लिये सबके सहयोग की आवश्यकता रहेगी, जो आप प्रदान करेंगे ही एसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

अजमेर राज्य के मुख्य मन्त्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय ने समय समय पर जो मार्ग-दर्शन प्रदान किया है उसके लिये जितना आभार प्रदर्शन किया जाय थोडा है। राज्य के शिक्षा-विभाग ने अपने कई स्कूल भवन तथा कई प्रकार का सामान आदि प्रदान कर हमारी पूरी सहायता की है जिसके लिये हम विभागाध्यक्षो के कृतज्ञ है। स्थानीय नगरपालिका ने जल तथा सफाई के प्रबन्ध हेतु उदारतापूर्वक जो सुविधाए प्रदान की हैं उसके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रदर्शित करता हू।

अन्त मे म बाहर से पधारे हुए सज्जनो से एक विशेष निवेदन करना चाहता हू कि हमारे स्वागत में आपको कई खामियाँ नजर आयगी, गर्मी का मौसम भी है पर आशा है आप हमारे इस प्रेममय स्वागत को "शबरी के बेर सुदामा के तन्दुल" मान कर समस्त त्रुटियो के लिये हमे प्रेम पूर्वक क्षमा प्रदान करेगे।

एक बार फिर म आप सब सज्जनो का आभार मानते हुए हृदय से स्वागत करता हू।

जय जिनेन्द्र !

—०—

सो विरुद्ध है ॥

(२) द्वितीय, तीन किरोड़ ग्रन्थ रचे लिखे हैं सोभी झूठ है क्योंकि ८४ वर्षों के ३६० दिन के हिसाब से ३०२४० तीस हजार दोसो चालीस दिन हुए सो यदि एक२ दिन में १०० सो २ ग्रन्थ रचते तोभी ३०२४००० तीस लाख चोवीस हजार ग्रन्थ होते, सो हे संवेगीजी! आप अपने पूर्व पुरुषों की ऐसी अनहुई उपहास योग्य वड़ाई करते हो कि अत्यन्त मति अन्ध और पामर होगा सो ऐसे विकल वचन को प्रतीत करेगा। तर्क जो तुम हमारे इस कहने पर अपने लिखेको असंभव जानकर ऐसी शरण लोगे कि हम ग्रन्थ संज्ञा श्लोकको कहते हैं तो ऐसेभी तुम्हारा लिखा हुआ तुमको शरण नहीं लेनेदेता क्योंकि ५९५ वें पत्र पर लिखा है कि "यशो विजय गणि ने १०० सो ग्रन्थ रचे

वाले प्रचुर शिल्पावशेष इस पुण्य भूमि से उपलब्ध हो चुके है और आज भी उनका अनिद्य सौन्दर्य मनस्वी हृदय के हृतन्त्री के तारो को झकृत करता रहा है।

इस स्मरणीय प्रसग पर हम अतुल बलशाली और तेजस्वी योद्धा क्षत्रिय कुलवतश पृथ्वीराज चौहान को नही भूल सकते जिनके प्रचण्ड शौर्यत्व एव बाहुबल के कारण भारत के सीमावर्ती प्रदेश के शासक त्राहा मानते थे। उनके खडित दुर्ग के अवशेष आज भी उनकी कीर्ती को अक्षुण बनाये हुए है। शिल्प स्थापत्य के प्रतीक थे जन परम्परा के मूक भाव वाहक टूटे-फूटे धूलिधूसरित, वृक्ष लताओ से परिवेष्टित ये खडहर आज भी अपने प्राचीन सौंदर्य के साथ सतपरपरा की मानव-कल्याण पथगामिनी वाणी ही नही सुना रहे है पर अतीत की गौरव गरिमा की झाकी बतलाते हुए एसी एक विशेष भावना का निर्माण करते है जो प्राचीन होकर भी नवीनतम भावनाओ के पोषक एव प्रवधक है आप इस ऐतिहासिक सत्य से अपरिचित नहीं हैं।

प्रसगवश आपका ध्यान मे हर्षपुर की ओर आकृष्ट करना चाहूगा जो किसी समय प्रश्नवाहन कुल के आचार्यों की परम्परा का समृद्धशाली केन्द्र था। बाद में वह परम्परा हर्षपुरीय गच्छ के नाम से विख्यात हुई। स्वर्गीय डा० ओझा जी के उल्लेखानुसार मेवाड के राजा अल्लट की रानी हरिदेवी ने, जो हूण राजा की पुत्री थी, हर्षपुर बसाया। अल्लट राजा की सभा में चन्द्र गच्छ या राजगच्छ के आचार्य प्रद्युम्न सुरि का प्राबल्य था। उन्होने सपादलक्ष और त्रिभुवनगिरि के राजाओ को जैन धर्मानुरागी बनाया था। इनके शिष्य श्री अभयदेव सूरि का नाम भारतीय दर्शन शास्त्र के इतिहास में बहुत ऊचा है, जिन्हो ने श्री सिद्धसेन दिवाकर के सन्मतितर्क पर तत्वबोध विद्यायनी टीका लिखी जो दर्शन शास्त्र के इतिहास में वाद महार्णव के नाम से विख्यात है। इनके शिष्य धनेश्वर सूरि त्रिभुवन गिरि के कर्दम नामक भूपति शिष्य थे, तात्पर्य यह कि अजमेर प्रदेशीय राजा लोग अतुल राजकीय सपत्ति का परित्याग कर त्याग मूलक जीवनयापन कर जैनाचार्यों से प्रतिबोध होते थे, यहा तक की ये राजा लोग राज्य छोडकर भागवती दीक्षा अगीकार करते थे। जैनत्व की दृष्टि से देखा जाय तो यहा का प्रेरणाशील गौरव बडा ही स्फूर्तिप्रद रहा है। इन शासको के जीवन में क्रिया व साधना का इतना अच्छा एव अदभुत समन्वय था कि वे कभी कभी शास्त्रार्थ के बीच मध्यस्थ का स्थान भी सुशोभित किया करते थे।

अजमेर नगर के सस्थापक अजयराज धर्मघोष सुरि के प्रशसक थे वे शास्त्रदर्शन की चर्चा में सोत्साह भाग लिया करते थे। अर्णोराज या विग्रह राज इन्ही अजयराज के पुत्र रत्न थे, जिनका सम्बन्ध आज के उत्सव प्रधान नायक दादा श्री जिनदत्त सूरि जी से रहा है। दादा श्री जिनदत्त सूरि जी के प्रबल व्यक्तित्व एव प्रतिबोध का अर्णोराज के जीवन पर अमिट छाप व सस्कार थे इसी के परिणाम स्वरूप इनके राज में एकादशी तिथि को जीव वध निषेध था। प्राचीन साहित्य मे अजमेर की सास्कृतिक परम्परा एव जन सस्कृति को प्रकाश करने वाले प्रचुर प्रमाण उपलब्ध है। श्री अर्णोराज के जीवन पर दादा श्री जिनदत्तसूरिजी की अमिट छाप का प्रमाण यह भी है कि इन हमारे प्रधान नायक के अजमेर पधारने पर श्री अर्णोराज ने देव मन्दिर, और गृहस्थो के बसने के लिये

इसलिये तुम्हारा लिखना कि "हेमचन्द्र सूरिने ३ तीन क्रोड ग्रन्थ रचे" यह किसी सूरत सही नहीं होसक्ता किन्तु यह केवल मानके वश होकर निकम्मी बड़ाई गोल गप्पे रूप झूठ ही लिखी है॥

(३) सूत्रोंसे महा विरुद्ध लिखा है सो पत्र १९ वें से लेकर कई एक पत्रोंमें प्रायः बहुतसे विरुद्ध लेख हैं क्योंकि २४ चौवीस तीर्थङ्करों के दीक्षा वृक्ष लिखे हैं लेकिन सूत्रमें दीक्षा वृक्ष नहीं चले किन्तु सूत्रमें "चेईवृक्ष" अर्थात् ज्ञानवृक्ष चले हैं कस्मात् जिस २ वृक्षके नीचे केवल ज्ञान, तीर्थङ्करोंको प्रकट भया, अस्मात्- यह समवायाङ्ग में देखलेना, लिंगियों को लिखना चौवीसोंई बोलोंमें विरुद्ध है॥

(४) पद्मप्रभुजी को "एक उपवाससे योग लिया"

अपने आपको वीतराग का अनुगामी घोषित करते थे। आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी के समय तक यह परम्परा इतनी विकृत हो चुकी थी कि ये धर्म संस्कार, आचरण एवं सिद्धांत पोथी पन्नों के मात्र रह गये। आचार्य श्री ने अपनी अटूट ज्ञान व चारित्रिक संपदा के बल पर इन अज्ञानमूलक संस्कारहीन परम्पराओं के प्रति निरन्तर संघर्ष किया, अपना सारा जीवन मानवोत्कर्ष में खपा दिया। आज हम किस रूप में अपनी उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करें, इस पर हमें गम्भीरता पूर्वक उनके जीवन से शिक्षा लेकर सोचना है।

इस अष्टम शताब्दी महोत्सव के शुभ अवसर पर मुझे आपके सम्मुख कुछ बातें रखनी हैं। आज स्वतन्त्र भारत के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या मानव के मानसिक विकास एवं चारित्रमय चेतना की है, जिसकी प्रेरणा हमें संतों के जीवन से ही मिल सकती है। प्रचारित पंचशील के सिद्धांत का युग प्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी ने इतना व्यापक प्रचार किया था कि ऊंच नीच के भेद भाव को भुला कर एक लाख तीस हजार व्यक्तियों का इस ओर मोड़कर सामाजिक व्यवस्था में आस्था उत्पन्न कर संगठन की गहरी नींव डाल दी। आप सोच सकते हैं कि उन सामाजिक परिस्थितियों में अनेकविध विरोधी चट्टानों से टक्कर लेना कोई आसान बात नहीं थी, इतना ही नहीं समाज में आने वाले इस नये रक्त के प्रति वे पूर्ण जागरूक थे अतः उन्होंने अपने उपासक वर्ग को यह शपथ दिला दी थी कि वे कभी आपस में लड़ेंगे नहीं, दूसरे पर राजदण्ड लादेंगे नहीं, एक दूसरे के जीवन में सहयोगी बनेंगे, परपीड़ा को स्वपीड़ा समझने के लिये प्रयत्नशील होंगे। इस तरह समाज के संगठन की उन्होंने गहरी नींव बांध दी।

आप यह भली प्रकार जानते हैं कि जैन धर्म जातिवाद में कतई विश्वास नहीं रखता, जैन धर्म में ऊंच नीच भाव को कोई स्थान नहीं, जन्म से न कोई ब्राह्मण होता है, न कोई क्षत्रिय, न कोई वैश्य या न कोई शूद्र। श्रमण भगवान् महावीर ने ऊंच नीच के भेदभाव को मिटाकर सबको समान भाव से आध्यात्मिक साधना के लिये उपयुक्त घोषित किया। उन्होंने यह उद्घोषित किया कि प्रत्येक व्यक्ति का उत्थान व पतन उसके अपने कर्म पर निर्भर है। व्यक्ति-स्वातन्त्र्य मूलक परम्परा ही जनतन्त्र के लिये उपयुक्त हो सकती है। जनतन्त्र में मनुष्य स्वयं अपना भाग्य विधाता होता है। हमारी श्रमण संस्कृति में मानव स्वयं ही अपने प्रति जिम्मेदार रहता है। जैनधर्म जातिवाद को मानवता के लिये कलंक समझता है। अस्पृश्यता के लिए जैन धर्म में अंश मात्र भी स्थान नहीं है।

जैनाचार्यों के संगठन विषयक नियमों में कहीं भी जातिवाद को स्थान नहीं मिला है। जैन परंपरा जाति में नहीं पर गुणों में विश्वास करती है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य की जो त्रिविध साधना कर सके वह इसमें सम्मिलित हो सकता है। परन्तु कालांतर से इस व्यापक परम्परा में भी परिस्थितिजन्य विषमता के कारण बीसा, दस्सा, पांचा, ढाइया और सवाया पोरवाल जैसी जातिवाद की समस्यायें खड़ी हो गई जो जैन धर्म और राष्ट्रीयता के लिये ही नहीं अपितु मानवता के लिये भी एक कलंक है। जातिवाद हमारी संस्कृति के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

हरिजनों की समस्या भी हमारे लिये उतनी ही विचारणीय है यद्यपि मुझे इसकी विशेष चर्चा

गरीमें लिखाहै॥ (१०)अथ परस्परविरोध
(जो आत्मारामने जैन तत्वादर्शमें लिखाहै सो)
लिखतेहैं पत्र १०वें पर "श्रीऋषभदेवजी की दो
नों साथलोंपै वृत्तभकालछन लिखाहै" फिर पत्र १५
वें पर २४ चौबीसों तीर्थङ्करों के पगोंमें लछन
हुए लिखाहै यह परस्पर विरुद्ध है॥
पत्र ८३ वें पर लिखाहै (अनुष्टुब्वृत्तं) श्लोकः॥
महाव्रतधराधीरा, भैक्षमात्रोपजीविनः॥ समा
यीकस्याधर्मोप देशका गुरवोमताः॥१॥ इस
श्लोकमें ऐसा परमार्थहै कि साधु धर्मोपदेश
जीवोंके उद्धार के लिये करे ज्ञान दर्शन चारित्र
का परंतु ज्योतिष, यन्त्र मन्त्रका उपदेश धर्म
हानि करने वालाहै सो नकरे॥ फिर पत्र ५७
वें पर लिखाहै कि धर्मघोषसूरिने मन्त्र से
स्त्रियोंको पकड़ाया और बांधाया। तर्क-जेकर
तुम ऐसा कहोगे कि उन्होंने अपने दुःख

धर्म की महत्ता वा प्रराधव हमारा स्याद्वाद व उसका साहित्य युगो से अधकार में पड गया है, भण्डारो में कोट भोग्य मार बन रहा है उसे आज की वैज्ञानिक दुनिया के प्रकाश में लाना है ताकि आज का मनीषी विद्वत् वर्ग उसका तलस्पर्शी अध्ययन-अनुशीलन कर सके।

म आपका अधिक समय न लेकर सक्षेप में हमारे महान आचाय श्री हरिभद्रसूरिजी के निम्न वचन को उधृत कर आपको समझाऊगा कि जन घम और उसका स्याद्वाद कितना व्यापक एव विस्तीण समन्वय मनक रहा है। आज जब अणु-बम व उदजन बम की विनाशकारी लीला व उसके भय मात्र से ससार की मानवता पीडित हो रही है हमारे आचार्य का यह महान समन्वयमूलक मत कितना कल्याणकारी है, उन्होने कहा है—

पक्षपातो नमे वीरे न द्वेष कपिलादिषु।
युक्तिमद् वचन यस्य तस्य कार्य परिग्रह ॥

मेरी यह हार्दिक मनोकामना है कि जैन समाज को एक सूत्र में बाधने के लिये हमें सक्रिय रूप से प्रयत्नशील होना चाहिये। इससे कालातर में हमारे सारे जैन समाज के सगठन द्वारा राष्ट्रीय समस्या का भी हल हो सकता है। यही हमारे समाज की सबसे बडी शक्ति होगी।

युग प्रवर्तक आचाय के प्रति हमारी वास्तविक श्रद्धाजलि यही है कि हम उनकी स्मृति स्थाई बनाये रखने के लिये कोई ठोस कायक्रम अपनावे जिस का परिणाम समाज व राष्ट्र के लिये हितप्रद हो सके। मेरी तुच्छ बुद्धि में यह निम्न नम्र सुझाव हैं –

१—सर्व प्रथम साधु-साध्वियो में पारस्परिक सगठन व आत्मीयता की वृद्धि होना।
२—वसतिवासी जैन धर्माचार्यों द्वारा रचित साहित्य के प्रकाशन पर विचार करना।
३—आचाय जिनदत्तसूरिजी के समस्त ग्रथो का समीक्षात्मक प्रकाशन।
४—आचार्य जिनदत्तसूरिजी की शिष्य परम्परा के द्वारा सुरक्षित समस्त जैन ज्ञान भडारो का एकीकरण एव प्रतिनिधि व्यवस्थापिका सभा का गठन।
५—विभिन्न शिक्षा सस्थाओ एव विश्वविद्यालयो में जैन धम दर्शनसाहित्य के अनुसधान के लिये हमारी ओर से उच्चतम व्यवस्था की जाय।
६—उज्जन में स्थापति होने वाले विक्रम विश्वविद्यालय में जनधम की शिक्षा के लिये अथ पूर्ण सहकार।

म आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इस काय के लिये कभी अथ का प्रश्न सामने नही आवेगा। अथ व्यक्ति के परिश्रम का परिणाम है।

अन्त में म आपके सौजन्य पूण व्यवहार ... र के लिये पुन आभार ...
युग प्रधान आचाय को अपनी सम्मानपूण श्रद्धाजलि ... श्रा अपना स्थान ग्रहण

श्रोर फिर लिखाहै कि उसने दराडभी लिया था सा विचारना चाहिये कि जब ऐसे महा उत्तम कार्यके कारणभी लब्धीफोरने का दण्ड लियाथा ता फिर (सामान्य कार्यस्य किं कथनं अर्थात् सामान्य कार्य का क्या कथन करना ता फिर तुमने मन्त्र करने वाले यतियों की जैसे ५८३ वें पत्रपर "सिद्धसेन दिवाकरने विद्यादेकर अर्थात् सिखाकर राजासे सेना बनवाके संग्राम करवा दिये" ऐसी २ बड़ाई

किस प्रयोजन से करीहै श्रोर क्यों लिखीहै ? श्रोर तुमनेभी ९ नवम परिच्छेदके आदमें श्रोदा जिसको सूत्रमें पाप सूत्र कहाहै उसका वहुत उपदेश कियाहै फिर श्रोरभी बालकों केसे उपहास योग्य तुमने सम्मन बहुत से पाखण्ड लिखेहैं जैसे कि ४५० वें पत्र पर लिखाहै कि "अपनी स्त्रीको बार २

रहना उनके लिए अनिवार्य है। देश को समृद्ध बनाने के लिए आज हमें बौद्धिक श्रमिकों की अति आवश्यकता है। रोटी का सवाल यद्यपि हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है पर जीवन निर्वाह के लिए इसे उपेक्षित नहीं रखा जा सकता। मैं चाहता हू कि यदि हमें आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी के प्रति कुछ विश्वास है तो हमारा प्राथमिक कर्तव्य यह होना चाहिए कि सारे भेदभावों को भूल कर उनके बताए हुए उदार विचारों को अपने जीवन में स्थान देकर एक दूसरे के सुख दुख के भागी बनें। इन्ही शब्दों में म आचार्य वर्य के चरणों में श्रद्धाजलि समर्पित कर अपने को कृत कृत्य मानता हू।

श्री आनन्द सागर सूरिजी महाराज का प्रवचन

श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए आचार्य श्री आनन्द-सागरसूरिजी महाराज ने भगवान महावीर के विश्व शांति के सन्देश को ससार में प्रसारित करने के लिए एक सार्वभौमिक सगठन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा —

श्रमण संस्कृति के अग्रदूत और भारतीय लोकचेतना के उद्बोधक भगवान महावीर के नाम पर सार्वभौमिक सगठन की आज अत्यन्त आवश्यकता है। मानव कृत उच्चत्व नीचत्व मूलक भेदभावों की दीवारों को तोडकर समत्व की साधना द्वारा इस जनतन्त्र मूलक युग में जैन धर्म के आचार विचार बहुत बडी प्रेरणा दे सकते हैं। जैन धर्म बहुत व्यापक है और प्राणी मात्र की उन्नति में विश्वास रखता है। जन धर्म काम म विश्वास करता है। हमें समझना चाहिए कि यह सम्मेलन तो तीन दिन की चकाचौंध के बाद समाप्त हो जायेगा परन्तु प्रेरणा को जीवित रखना आवश्यक है। यही भावी विकास का श्रोत है। एसे उत्सव मानव संस्कृति के मूल्याकन एव विकास में प्रकाश स्तम्भ का काम दे सकते हैं।

भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति में अहिंसा का उल्लेखनीय योग रहा है। वर्षों की पराधीनता और दासत्व की शृंखला को इसी बल न तोड कर हम मुक्त किया। अत भारतीय शासन को चाहिए कि के अहिंसा नीति का सर्वाधिक अपने जीवन में स्थान देने वाले व्यक्तियों के जीवन से सम्बद्ध विशिष्ट दिनों में उनके नाम पर राजकीय अवकाश शासन को अब तक घोषित कर ही देना चाहिए था। पर दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ।

इस पर बाबू श्री जगजीवनरामजी ने कहा कि महावीर जयन्ती का राजकीय अवकाश शासन घोषित कर चुका है।

हम चाहते हैं कि शासन हमारे सांस्कृतिक कार्यों मे समुचित सहायता प्रदान कर स्वकर्तव्य का पालन करे। समाज को ही चाहिये कि पुरातन मानवता शोषक रूढिवाद को समाप्त कर प्राणी मात्र के विकास में अपना गुरु भूलें। शासन देव हमे सद्‌बुद्धि दे कि सम्प्रदाय के नाम पर फली हुई पशुता का परित्याग कर समाज साधना व समत्व का मार्ग अपनाए। विश्वशान्ति की कामना से

वेठनें की नहीं और मूढ़ोंके तथा स्वपक्षि
यो के हृदयमें तो दांत घसनी करके वैठाही
देते होंगे यह स्थूल (मोटा) परस्पर विरोधहै
॥ ११ ॥

पत्र १०७वें पर लिखाहै कि " हिंसामें धर्म न
हीं कहना चाहिये वन्ध्यापुत्रवत् और हिंसा
कारण धर्म कार्यहै " यह कथन को भी
लिङ्गियेनें असत्य लिखाहै
फिर देखो मत पक्ष करके हिंसामें ध
र्म प्रत्यक्ष कहते हैं तर्क० जेकर क
होगे कि वह तो मिथ्याती मृगादिक वडे२
जीवोंके मारने में अर्थात् हिंसामें धर्मकह
तेहैं इस वास्ते उनकी हिंसा में धर्मकहना असत्य है
तो फिर हम तुमको पूछेंगे कि यह क्या बुद्धिकी वि
कलता है कि वडे २ जीव अर्थात् मृगादि मार
ने में हिंसाहै और लघु जीव अर्थात् मूषककी

श्री पूज्य जी महाराज जिन धरणेन्द्रसूरिजी का प्रवचन

श्री यादवजी के पश्चात् मडोवर शाखा के प्रधान आचार्य श्री पूज्यजी महाराज श्री जिन-धरणेंद्रसूरिजी ने कहा —

"यद्यपि जैन सिद्धान्त महान है इस परम्परा में विश्ववन्द्य महान पुरुषो ने प्रत्येक शताब्दी में जन्म लेकर मानवता का पथ प्रदर्शन किया है। ज्ञान मनोबल और चारित्र से जैन समाज के लिए ही नही प्राणी मात्र को प्रेरणा मिलती है। वस्तु मात्र के स्वभाव की वास्तविक पहचान को ही अर्थात् आत्मा के मूल स्वभाव को प्राप्त करना ही जैन परम्परा में धर्म माना है। आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी का उपदेश इसी परम्परा का महान सम्बल है। वे न केवल मुनि धन कर सामाजिक चेतना को ही जगाते रहे अपितु उन्होने साहित्यिक दृष्टि से भी ग्रन्थ रचना कर तात्कालिक विषम सामाजिक परि-स्थितियो को ससार के समक्ष रखा है। यद्यपि उनके साहित्य का समुचित अनुशीलन अद्यावधि नही हो पाया है पर जिन ग्रन्थो के समीक्षात्मक सस्करण उपलब्ध हैं उन्ही से इनकी व्यवहारिक शक्ति एव पाडित्य मेधा का परिचय मिलता है। उनके जीवन की परम्परा को जिलाये रखने का एक मात्र प्रकार यही है कि हम सब अपने जीवन को उज्जवल करे और हमारे यति समुदाय में जो गभीर शिथिलता प्रवेश कर चुकी है उन्हें निकाल यति शब्द को सार्थक करे।

मुनि कांतिसागरजी का प्रवचन

सभा का उपसहार करते हुए मुनि कातिसागरजी ने कहा —

"किसी भी देश या इतिहास में उस देश के महान पुरुषो का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। वस्तुत वे ही राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक परम्पराओ के प्रतीक होते हैं। नैतिक एव चारित्रिक बल का समुचित विकास उन्ही की साधना जनित औपदेशिक वाणी के उज्जवसर प्रवाह पर निर्भर है। जन जीवन का उन्नयन महान पुरुषों के सुदृढ कधो पर होने के कारण ही एक समय था कि राजनीति जैसे क्षेत्र म भी इन धर्ममूलक जीवन यापन करने वाले महात्माओ का अत्युच्च स्थान था। वस्तुत निस्वार्थपूर्ण जीवन होने के कारण ही जन मानस पर इनका स्वाभाविक प्रभाव रहता था। अत महान पुरुषो का गुणानुवाद हम जैसे दुर्बल व्यक्तियो में गुणो का सचार करते है। आज हम जैन समाज के बारहवी और तेरहवीं शताब्दी के एक ऐसे आचार्य का अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव मनाने को एकत्र हुए हैं जिनने अपनी चारित्रिक व साहित्यिक साधना द्वारा तात्कालिक मानव समाज को प्रकाश दिया एव धर्म के नाम पर पनपने वाली पाशविक परम्पराओ का मूलोच्छेद कर सुविहित परम्परा को प्रशस्त किया। यद्यपि वे मूलत पश्चिमी भारत के निवासी थे पर उनकी सार्वभौमिक कार्य प्रणाली से उन्होने सम्पूर्ण भारत में अपना स्वतन्त्र व आदरणीय स्थान बना लिया। वे अपना ऐसी अद्भुत शक्ति रखते थे कि आज आठ सौ वर्षों के बाद भी जनता के हृदय सिंहासन पर यथावत् अधिष्ठित हैं। भारत में शायद ही ऐसा जैन परिवार सम्पन्न नगर होगा जहाँ इनकी प्रतिमा, चरणपादुका या तथाकथित कोई स्मारक दादावाडी के रूप में न हो।

की हिंसाके अभिलाखी नहींहैं। उत्तर पत्ती, नर्क.
हेभाई! इस झुन झुनोंकी पुकार(आवाज)से
तो केवल बालकही रीझेंगे और बुद्धिमान लो
ग तो तत्व की ओर ख्याल करेंगे नूबे
और लडके के दृष्टान्त, क्योंकि तुमने जो हिंसा
में धर्म अर्थात् फूल तोडनमें तथा वृक्षछे
दनमें दोषनहीं लिखाहै जैसे ४७४वें पत्र पर
लिखाहै कि "सनात्र पूजामें फूलोंका घर बना
वै और केलीघर बनावै" इत्यादि॰
हकीम के दृष्टान्त से भव्य जनों के हृदयोंको
कठोर करतेहो लेकिन इस हकीम के दृष्टान्त
को विचार करदेखो तो तुम्हाराही लिखाहुआ दृ
ष्टान्त तुम्हारेही मतकोनिकृष्ट करताहै क्योंकि
हकीम तो यह जानताहै कि नश्तरके लगाने
से रोगीका रोग जातारहैगा शायद ही मरेगा
और तुम तो खूब जानतेहो कि केलेके स्तम्भ

जीवन से अलग कर दें। क्योंकि प्रचुर कष्ट सहन के बाद प्राप्त की गई भारतीय स्वधीनता की वास्तविक रक्षा इन दो कलंको को मिटाने में ही है। भगवान महावीर ने अपने जीवन के बहुमुखी क्षणो द्वारा उपयुक्त सत्य को भली भांति सिद्ध कर दिया है। हमारा मुनि समुदाय ग्रंथ मूलक प्रवृत्तियों के चक्कर से ऊपर उठ कर इन चीजो को सोचें।

जो लोग यह मानते है कि जिनदत्तसूरि परिग्रही थे मठवासी थे और वर्तमान ग्रंथ में प्रयुक्त यति थे, पूर्व कथित वाक्यो मे लेशमात्र भी सत्यांश नही है क्योंकि जिस समय अल्प शैथिल्य भी गुरुतर अपराध माना जाता हो वहा पर इस प्रकार की कल्पना ही बौद्धिक व्यभिचार है। वे तो चरित्रहीन मठवासियो के विरोध मे क्रांति का मानवता मूलक झडा उठाए हुए थे और धर्म के नाम पर पनप रही साम्प्रदायिकता पर कुठाराघात कर रहे थे। और उनका चारित्रिक बल इतना उच्चकोटि का था कि सम्पूर्ण भारत के प्रमुख प्रान्तो में उनका अपना प्रभाव था। चारित्र बल ही व्यक्ति के अस्तित्व को और व्यक्तित्व को निखार सकता है। चारित्र बल ही सब से बडा बल है जो भले ही नींव का पत्थर प्रतीत होता हो पर है ओरनामेंटल।

जिनदत्तसूरिजी अखण्ड मानवता के समर्थक थे। व्यक्तिगत श्रम मे उनका विश्वास इसलिए था कि वे स्वय भी स्वावलम्बी थे। वे एक सम्प्रदाय के होकर भी सब को सहिष्णुता मूलक वृत्ति से देखते थे। सहानुभूति उनके जीवन में साकार थी। सगठन उनके जीवन का मूलमंत्र था सचमुच जहा अहिंसा जीवन में साकार हो जाता वहा सगठन की भी आवश्यकता है क्या ?

आचार्यवर्य भारतीय सत परम्परा की एक ऐसी उज्जवल ज्योति थे जिनकी प्रभा से आज भी हम आलोकित है। मुझे आज केवल एक ही बात पर विचार करना है कि उनका प्रेरणाशील व्यक्तित्व आज के युग में हमारा मार्गदर्शन कर सकता है कि नही। जब हम उनकी जयन्ति मना ही रहे हैं और उनके जीवन मे हम परिचित है तो हमारा प्राथमिक कर्त्तव्य यह होना चाहिए कि उनके जीवन के मूल्यवान क्षणो में से एक क्षण हम अपने जीवन में उतारे और बता दें कि जिनदत्तसूरिजी की स्मृति हमारे हृदय मदिर में आज भी यथावत् स्थापित है। मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है और आचार्यवर्य की उदारता से तो आप परिचित हैं ही और वर्तमान छुआछूत की पैशाचिक वृत्ति के कुपरिणामो से भी अपरिचित नही है अत मैं चाहता हू कि आप सब की सम्मति से जो प्रस्ताव मैं आपके सामने रख रहा हू स्वीकार होना चाहिए। शब्दावली इस प्रकार है —

"आज की यह सभा सर्वानुमत से निर्णय करती है कि अस्पृश्य कहे जाने वाले शुद्धि और पवित्रता द्वारा जिनपूजनोपासना गृह में धर्माराधन कर सकते है।"

यद्यपि कागज के चिथड़े पर लिखित शब्दावली को तालियो की गडगडाहट में पास कर देना ही पर्याप्त न होगा अपितु इसे हम अपनी सस्कृति का मूल प्रश्न समझ कर स्वीकार करें और समाज में अस्पृश्यता विरोधी ऐसा वातावरण तैयार कर जो मानव के नाम पर पडी हुई स्याई

अर्थात् इसलाम से दचसत्नाहै इत्यर्थः। सो हे पूर्वपक्षियो! तुमतो त्रसस्थावरों की मर्जी के विना अर्थात् आज्ञाके विनाही प्राण हरते हो क्योंकि वे वृक्ष, फल, फूल आदिके जीव, नहीं चाहते हैं कि हमको भगवान की पूजा के निमित्त वेशक मारें और न कहते हैं कि भक्तिमें हमारे प्राण वेशक हरें इसकारण से वज्रदोष आता है यथा–

अन्य स्थानं करोति पापं धर्म स्थानं विवर्जितम्॥ धर्म स्थानं करोति पापं वज्रकर्म्म विवर्द्धते॥१॥ इति वचनात्.

और तुम ऐसे कहोगे कि कहांतो मृगादि हिंसामें धर्म कहना और कहां तुम फूल फल आदिक की हिंसाको निंदते हो तो फिर हम उत्तर देते हैं कि उनका हिंसा में धर्म कहना और तुम्हारा हिंसामें धर्म

उत्सव पर पधारे हुए मुनि महाराज—



पहला पंक्ति में—मुनि मंगल सागरजी महाराज, उपाध्याय १०८ श्री सुखसागरजी महाराज आचार्य श्री १००८ श्री वीरपुत्र आनन्द सागरसूरीश्वरजी महाराज, उपाध्याय श्री १०८ श्री कवीन्द्र सागरजी महाराज, व मुनि हेमन्तसागरजी महाराज।

खड़े हुए—मुनि प्रेमसागरजी महाराज, मुनि कल्याण सागरजी महाराज, मुनि गौतमचन्द्रजी महाराज, मुनि मंगलसागरजी महाराज, मुनि कान्तिसागरजी महाराज।

तीसरी पंक्ती में—मुनि रविप्रभसागरजी महाराज, मुनि उदयसागरजी महाराज, मुनि प्रभाकरसागरजी महाराज।

और हीनाचारी नीचोंको अयुक्त है सो
हे मतमस्तो ! विचार कर देखो कि तुम्हारा
लिखाहुआ तुम्हारेही कहने बमूजिब
परस्पर विरुद्ध है ॥
२९६ वें पत्र पर लिखा है कि द्रव्य निक्षेपा
जो तीर्थंकर होनेवाला है, जिसका निका
चित बंध होचुका है उसको पूजके, नम
स्कार करके अनेक जीव मुक्तिमें गये हैं॥
तर्क० यह लेखभी झूठ है क्योंकि इस री
तिसे एक पुरुषको तो मोक्षप्राप्त होगया
सूत्र द्वारा दिखातेहो किम्बा जबान सेही
गरड़ाट करतेहो ? कस्मात् कारणात् कि
निकाचित बंध तीर्थंकर गोतका ३ तीन
भव पहले पड़ताहै भला कहो भर्थचक्री
की भुलावन देतेहो फिर और भाव नि
क्षेपके सीमन्धर स्वामी माने हैं॥ तर्क० सो

प्रथम उपाध्यायजी श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् आचार्य महाराज ने अपनी ओजस्वी भाषा में महत्वपूर्ण भाषण दिया। आपने अपना मन्तव्य बतलाया कि यदा कदा सुयोग मिलने पर मुनि सम्मेलन होते रहे हैं और उनके परिणाम भी उत्तम रहे हैं परन्तु मुनि सम्मेलनों की सफलता तभी हो सकती है कि हम संगठित हो कर अनाचार का पालन करते हुए जैन शासन की उन्नति करने में दत्तचित्त बने रहें। संसार में अशांति का वातावरण छाया हुआ है उसे शांति का संदेश सुनाने में जैन-दर्शन पूर्ण समर्थ है। अतः हमारा कर्तव्य हो जाता है कि अहिंसा, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों के प्रचार द्वारा विश्व में शान्ति स्थापना के प्रयत्नों को प्रोत्साहन देवें। भगवान महावीर ने भी इसी प्रकार का संदेश तात्कालीन क्षुब्ध संसार को दिया था और जन संस्कृति की जड़ को अपने ज्ञान, त्याग एवं तपस्या से मजबूत किया था। ८ शताब्दी पूर्व दादा गुरुदेव ने भी उन्हीं सिद्धान्तों को अपना कर उच्च आदर्शों को दैनिक जीवन में स्थान देने वाला एवं उन्नत समाज की स्थापना की थी। आज हमारा कर्तव्य है कि हम उनके चरण चिह्नों पर चल और जीवात्माओं को भी उसी महापथ पर चलने के लिये सदैव प्रेरित करें।

अध्यक्ष महोदय की आज्ञानुसार उपाध्यायजी श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज ने मुनि सम्मेलन द्वारा स्वीकृत ११ प्रस्ताव पढ़कर सुनाये। मुख्यतया उनका सारांश निम्न प्रकार है।

१—खरतरगच्छीय साधु साध्वी सम्प्रदाय संगठन का नाम खरतरगच्छीय श्रमण संघ रहेगा।

२—इस श्रमणसंघ में अंतर्गत खरतर गच्छीय सभी सिंघाड़े सम्मिलित व संगठित रहेंगे।

३—संघ द्वारा 'श्रमण दूत' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया जावेगा।

४—श्रमण संघ के अन्तर्गत साधु-साध्वी एक स्थान पर अधिक काल न रहेंगे व नियमानुसार विचरण करेंगे।

५—साधु साध्वियों के धार्मिक शिक्षा एवं विशेष ज्ञान-प्रचार की सुविधा के लिए मध्य भारत, राजस्थान एवं गुजरात में शालायें खोली जाने के लिए श्रावकों को उपदेश द्वारा प्रोत्साहित करना।

६—रतलाम में चल रहे मंदिर काड का शीघ्रातिशीघ्र समाधान करने के लिए सरकार को बाध्य करना जिससे मंदिर का कब्जा यथावत जनियों को मिले अशातना मिटे, ताकि पूजा पाठ विधिवत प्रारम्भ हो सके।

७—समस्त साधु साध्वियों की मूर्तियों या चरण पादुकाओं के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।

८—साधु साध्वियों द्वारा लिखित पुस्तक पुस्तिकाओं का प्रकाशन, श्रमणसंघ की स्वीकृति द्वारा हो।

९—मुनि सम्मेलन का आगामी अधिवेशन संवत् २०१७ में होना निश्चय हुआ।

१०—अनुशासन हीन साधु-साध्वियों पर उचित कार्यवाही की जाय।

११—बालदीक्षा प्रतिबंधक बिल का आवश्यक विरोध किया जावे।

और शत्रु जीतनेके वास्ते काले वस्त्र पहरके पूजाकरे और ऐसे २ अनेक इस लोक के अर्थ पूजाके फल लिखेहैं (सो) यह क्योंके मली की नाय कभी नाक कभी हाथ क्योंकि प्रथम उसी कामको निषेधाहै और फिर उसी कामको अङ्गीकार कियाहै यह परस्पर विरु द्धहै॥१४॥ और ४१२वें पत्र पर लिखाहै कि "घृत, गुड़, लवण आदिसे गेरे और दान तप पूजा, सामायिक फटे कपड़ोंसे करे तो निष्फल" इसलेखको

हम खण्डन करतेहैं उत्तराध्ययन, अध्यय न १२वां गाथा ६ ठी हरकेशी बल तपस्वीको ब्राह्मण कहते हुये यथा उक्तंच "उम चेलए पंसु पिशाय भूए संकर डुसे परि हरिए कंठे" इति वचनात् अस्यार्थः असार वस्त्र रजकरी पिशाच रूप उकरडी के नांखे समान वस्त्र धारण

ऐसा आदर्श स्थापित किया है जो आज पुरातन होकर भी नवीनतम भावनाओं का पोषक एवं परिवर्द्धक है।

साहित्य के क्षेत्र में श्रमणों का दृष्टिकोण सदा से जनतन्त्रमूलक रहा है। वे आत्म विचारों को जन-भाषा द्वारा सरल भाषा में जनता के समक्ष रखते थे, एवं उच्चतम दार्शनिक भावों को भी अपनी प्रतिभा के बल पर तात्कालिक जन-जीवन उन्नयन में महत्वपूर्ण कार्य किया है। एक समय प्राकृत का भारत में बाहुल्य था अतः जैन मुनियों ने अधिकतर अपने विचार प्राकृत भाषा में ही रखना समुचित समझा। यद्यपि संस्कृतज्ञ लोगों ने इसे ग्रामीण एवं अशिष्टों की भाषा के रूप में घोषित कर रखा था और यही कारण है कि संस्कृत नाटकों में नारी के मुख से प्राकृत भाषा उच्चारित करवाई जाती है। हमारे भावुक प्रकृति के जैन मुनि यह समझ बैठते हैं कि संस्कृत नाटकों में प्राकृत का प्रयोग कर उसके लेखकों ने हमारी भाषा का आदर किया है। वस्तुतः देखें तो वहां एक प्रकार का उपहास ही है, अस्तु, प्राकृत भाषा और साहित्य में जो गाम्भीर्य है वह अन्यत्र दुर्लभ है। यद्यपि आज इस वैज्ञानिक भाषा के साहित्य पर विद्वद् वृन्द का ध्यान उतना आकृष्ट नहीं जितना कि अपेक्षित है। भारतीय भाषा विज्ञान के अध्येताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि बिना प्राकृत भाषा का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किए केवल साहित्य का गहरा अनुशीलन बिना किए भारतीय संस्कृति के मौलिक तत्वों को आत्मसात् नहीं किया जा सकता, और न ही भारतीय भाषा-विज्ञान की मूल प्रवृत्तियों को ही छूआ जा सकता है। भारतीय साहित्य में से यदि तथाकथित साहित्य को अलग कर दिया जाय तो निश्चित ही भारतवासी नफे में नहीं रहेंगे।

प्राकृत साहित्य के सम्बन्ध में वैदिक परम्परा में पले विद्वानों ने यह विचार बना रखा है कि इसमें केवल धार्मिक साहित्य ही गुम्फित है जिसका सीधा सम्बन्ध श्रमण परम्परा से है। मैं विनम्रता के साथ कहना चाहूंगा कि इस भाषा में न केवल वर्ग विशेष का ही साहित्य है, न केवल अमुक आध्यात्मिक परम्पराएं ही सुगठित हैं अपितु इतिहास, कला, संगीत, संस्कृत, व्याकरण, भाषा साहित्य, अलंकार, आयुर्वेद और कामशास्त्र जैसे विषयों का भी समावेश किया गया है। मैं तो मानता हूं कि कलाकार का मौलिक चिंतन किसी भी प्रकार के माध्यम द्वारा व्यक्त हो इससे उसकी मौलिकता में कमी नहीं आती।

हिन्दी भाषा का इतिहास तब तक अपूर्ण रहेगा जब तक प्राकृत एवं उसकी अपभ्रंशादि समस्त शाखाओं के साहित्य का समुचित अध्ययन नहीं हो जाता। क्योंकि हिंदी की प्रगति का मूल स्रोत प्राकृत और अपभ्रंश है न कि संस्कृत। संस्कृत को हिंदी की माता कहना उसका अपमान करना है। संस्कृत वर्ग विशेष की भाषा रही है। संस्कृत के विद्वानों ने इसी कारण से प्राकृत और अपभ्रंशादि में रचना करना या इन भाषाओं में अपने विचार व्यक्त करना अपना अपमान समझा। अवश्य जैन मुनियों ने इन भाषाओं में रचना करने में अपना सम्मान समझा हो ऐसी बात नहीं है। उनके समक्ष सबसे बड़ी समस्या थी मानव उन्नयन की। मानवीय मनोवृत्तियों के समुचित विकास की। और ... द्वारा मानवदशा की प्राप्ति की। साहित्य और ... न ... है कि मानवत्व को प्राप्त कर विश्व में ...

जाताहै अपितु ऐसे नहीं उनका यह लिख
ना झूठहै॥९५॥ पत्र ३६१वें पर लिखाहै
कि "आवश्यक सूत्रमें लिखाहै कि सामायि
कमें देव स्नात्र पूजादिक नकरे। तर्क क्यों
कि इससे ऐसा संभव होताहै कि उत्तम का
र्यमें मध्यम कार्य संभवही नहींहै अर्थात्
संवर में आस्रव न करे इस वास्ते सामायिक
में पूजा निषेध करीहै॥
फिर ४१७वें पत्र पर लिखाहै कि सामायिक
तो निर्धन श्रावक करे पूजाकी सामग्रीके
अभाव से फिर लिखाहै कि पूजाहोती होतो
सामायिक बीचमेंही छोडकर पूजामें फूल
सूंघने बैठजाय क्योंकि पूजाका विशेष पु
ण्यहै यह देखो परस्पर विरुद्धहै॥९६॥
४१७ पत्र पर लिखाहै कि मन्दिरमें मकड़ी
के जाले होजावें तो साधु मन्दिर के नौकर द्वारा

भारतीय भित्ति चित्रों के बाद ग्रंथस्थ चित्रकला पनपी, उसमें मुख्य भाग श्रमण परम्परा का रहा है। यद्यपि बौद्ध मुनियों ने भी ग्रंथस्थ चित्रकला के विकास में श्लाघनीय योग दिया है पर उन ग्रन्थों की संख्या अत्यन्त सीमित है जब कि जैन मुनियों ने जो तथाकथित चित्रकला की परम्परा को प्रोत्साहन दिया उसमें चित्रकला के उल्लेखनीय तत्वों की रक्षा तो की ही साथ ही ये धार्मिक कथा प्रसंग का अनुसरण करने वाले चित्र भी आनेवाले कर पश्चिम भारत की जैन सभ्यता के इतिहास के तथ्यों को भी सम्भाले रखा। मुगल एवं राजपूत पूर्व कला का इतिहास जैनाश्रित चित्रकला का इतिहास है ऐसा यदि मैं कहूं तो अनुचित न होगी। यहाँ पर एक बात मैं स्पष्ट कर दूं कि जैन मुनियों द्वारा आलेखित कलात्मक अवशेष उपादानों की दृष्टि से ही महत्व नहीं रखते अपितु उनकी वास्तविकता सौंदर्य प्रसाधक हृदय के भावों पर निर्भर है। तात्पर्य यहां भावों का प्राबल्य है उपकरण हैं गौण।

भारतीय लेखन कला का इतिहास भी श्रमण संस्कृति के अनुशीलन के बिना अपूर्ण रहेगा। एक समय था जबकि बौद्धिक प्राबल्य के कारण सैंकडों ग्रंथ मुनि-मंडल अपने स्मृति पट में संजोये रखता था। समय ने करवट ली, बौद्धिक बल क्रमशः क्षीण होने लगा, परिणामस्वरूप सैद्धान्तिक विचार आलेखित होने लगे, तदन्तर इन्हीं सिद्धान्तस्फोटनार्थ कई प्रकार के विवरण, भाष्य और टीकाएं भी लिखी जाने लगीं। हां तो मैं लेखन कला के सम्बन्ध में आपको कह रहा था—कला की वास्तविकता सीमित स्थान में ही उसे प्रकट करने में है। उसी प्रकार लेखन कला का वैशिष्ठ सीमित स्थान में अधिक से अधिक विचार आलेखित करने में है। एक समय था जब लिखने के साधन भी हमारे यहाँ सीमित थे। जैन मुनियों का जीवन प्रारम्भ से ही सांस्कृतिक और साहित्यिक सांचे में ऐसा ढला हुआ रहा है कि इस प्रकार की मानव मूलक प्रवृत्तियों को बिना जीवन में स्थान दिये बिना रहा नहीं जाता। आन्तरिक प्रबल प्रेरणा के कारण ही आज हजारों जैन ज्ञान भण्डार सुरक्षित हैं जिनमें न केवल जैन साहित्य ही सुरक्षित है अपितु बहुत से भारतीय साहित्य की कीर्ति बढ़ाने वाले अजैन अप्राप्य ग्रंथ भी सुरक्षित हैं। इन ग्रन्थों का लेखन जैन मुनियों के द्वारा ही हुआ था। आपको आश्चर्य होगा कि पाटन के जैन ज्ञान भंडारों में ऐसे भी बौद्ध और दिगम्बर ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं जिनकी समुपलब्धि तथा कथित सम्प्रदायों के ग्रन्थागार में नहीं हुई। यहां पर स्मरण रखना चाहिए कि ग्रंथ लेखन विषयक कार्य न केवल वेतन भोगी व्यक्तियों द्वारा ही सम्पादित करवाया जाता था अपितु मलधारी आचार्य हेमचन्द्र सूरि और सुप्रसिद्ध पल्लीनायक, श्री कमलसिंह उपाध्याय, श्री समय सुन्दर उपाध्याय और यशोविजय उपाध्याय जैसे स्वनाम विद्वानों ने अपने करकमलों द्वारा ग्रन्थों का आलेखन किया जिनसे ज्ञान होता है कि अद्यतन युग में कष्टप्रद माने जाने वाले लेखन कार्य के प्रति हमारे पूर्वज कितने सजग थे।

श्रमण परम्परा की औदार्य मूलक भावना विश्व विख्यात रही है। जहाँ तक साहित्य और संस्कृति का प्रश्न है वे इतने परम सहिष्णु व उदार है कि जहाँ कहीं से भी इन्हें सत्य उपलब्ध होता है वहीं ग्रहण कर अपने सांचे में ढाल कर वीतराग वाणी में परिणित कर लेते हैं। उनकी औदार्य मूलक वृत्ति का परिचय तो इसी से मिल जाता है कि जैन साहित्य के विभिन्न अंगों को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार की टीकाएं व स्तवक लिखकर स्वपाण्डित्य का अनोखा पूर्ण परिचय तो दिया ही साथ ही अजैन काव्य

बस हमारी भी यही श्रद्धाहैकि भाव पूजा ही जिनाज्ञाका पालनहै और भाव पूजा ही मोक्ष दायिनी है॥

फिर तुम किस प्रकार कहतेहो कि अङ्ग पूजा और अग्र पूजा अर्थात् फूल फलसे मूर्तिका पूजन करनी जिनाज्ञा और मोक्ष दायिनी है सो तुम्हारा कहना परस्पर विरुद्ध है॥१८॥ ४१२वें पत्र पर लिखाहै कि घर देहरे की पूर्व, उत्तर ओरमुख करके पूजाकरे और जो पश्चिम को मुखकरके पूजेतो ४ चौथी पीढ़ीसे विच्छेद होय, दक्षिणको मुख करके पूजे तो संतान नहीं होय, और विदिशों में मुख करके पूजे तो धन पुत्र और कुलका नाश होय इत्यादि०॥ और पत्र ४७८ वें पर लिखाहै कि जो देहरे के पास रहे तो हानि होय और

अब हम कुछ ऐसे प्रश्नों की चर्चा उपयुक्त जान पड़ती है कि वतमान समय को देखकर मुनि मडल को कुछ प्रगतिशील होना चाहिए जब आज हम यहा पर एक छोटेसे गच्छ के समस्त सघाडे के साधु साध्वी एकत्र हुए है और युग की समस्याओ से परिचित है एव साथ में यह भी जानते हं कि इस अर्थमूलक युग म धर्म और संस्कृति वर्ग विशेष तक ही सीमित है और मुनि जीवन भी एक समस्या के रूप में है। ऐसी स्थिति म हमारा प्राथमिक वतव्य हो जाता है कि अतीत से प्रेरणा लेकर वतमान सामाजिक परिस्थितियो के अनुसार आत्मा के मूल गुणों की रक्षा करते हुए धर्म और सस्कृति के तत्वो का समुचित प्रचार करें या युगानुकूल परिस्थिया के अनुसार हम अपने आपको तैयार करें। केवल बाल दीक्षितो की या नव दोक्षितो की सख्या वृद्धि मात्र म शासन सेवा का प्रमाण पत्र प्राप्त न होगा प्रत्युत इसके लिए तो हमें नव मानस का प्रबुद्ध कर सके ज्ञान के उस धरातल तक पहुचना होगा। म मानता हू कि हम लोगो पर धार्मिक उत्तरदायित्व का बोझ तो है ही पर इससे भी अधिक उत्तरदायित्व राष्ट्रीय सयम एव राष्ट्रीय नैतिकता की रक्षा का है। जब सामान्य जीवन यापन करने वाला राजनैतिक पुरुष कुछ कर सकता है तो उच्चकोटि के नियम पालने वाला मुनि समाज क्या राष्ट्रीय चेतना उद्‌बोधनार्थ कुछ भी नही कर सकता? बहुत कुछ कर सकता है। पर उसकी दृष्टि समन्वय मतात्व और जन कल्याण कामी होनी चाहिए।

मेरा तो विश्वास है कि अन्य राजनैतिक नेताओ की अपेक्षा निरक्षरता निवारण, प्रौढ शिक्षा, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और सदाचार व सद्व्यवहार के विकास में जैन मुनि सब से अधिक उपयुक्त व्यक्ति हं परन्तु आज हम श्रावक को छोड कर अन्य व्यक्तियो के साथ मिथ्यात्वियो के नाम पर जो व्यवहार करते है वही व्यवहार हममें मानवता के प्रति सदेह की कल्पना करने को विवश करता है। पाद विहार, जन सपर्क का ही एक माध्यम था। जो हमारे जीवन से विलुप्त हो चुका है जब विनोबाभावे या तथाकथित नेताओं की पादविहार यात्रा देश में क्रान्ति की शखध्वनि कर देती है तो हमारे जैसे सतत् पादविहारी यदि थोडा सा अपना दृष्टिकोण बदल दें तो क्या उपयुक्त काय सरलता पूवक सम्पन्न नही किए जा सकते। आज हमें जीवन म दृष्टि की बहुत आवश्यकता है। जीवन बदला है तो जीवन के मूल्याकन के प्रकार भी बदले हं। हमें मालूम होना चाहिए कि हम रहस्यवाद के युग में नही पर यथार्थवाद के युग मे जीवित है। मैं करबद्ध प्राथना यह भी करने का साहस कर सकूगा कि प्रत्येक प्रकार की अनुचित व अनावश्यक वस्तुओ की सचय प्रवृत्तियो पर प्रतिबन्ध की अतिव आवश्यकता है। ज्ञान के उपकरणो को अपवाद के रूप म लिया जा सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आज क्रान्ति की बहुत आवश्यकता है जैन मुनि एव आर्याओ को ज्ञानोपासना के जितने साधन सुलभ है उतने शायद ही अन्य किसी सम्प्रदाय के धार्मिक नेताओ को प्राप्त हो पर इस सुविधा का लाभ बहुत हो कम जिज्ञासु उठा पाते ह। अर्वाचीन ज्ञान की अपूर्णता के कारण ही कभी २ व्यास पीठ पर विचित्र स्थिति का सामना करना पडता है। अद्यतन शिक्षित समाज द्वारा जो ध्वनि विस्तृत की जा रही है कि धर्म स्थानो से और मुनियो से हमें विशेष प्रेम नही है इसका भी एक मात्र कारण मुझे तो यही ज्ञात होता है कि जिन आधारो पर ऐसा कहने वाले सोचते

तर्क- अरे भाई! ऐसे लिखने वाले! यह क्या तुम्हारी समझमें फ़रक है कि जो ऐसे ऐसे भगवान के अपमान रूप कथन लिखतेहो और ऐसेही और नवीन ग्रन्थोंके कथनभी सिद्ध होगे जिनपे तुमने आचरण (अमल) कियाहै॥

नहीं तो बुद्धिमान को चाहिये कि यथार्थ भाव पर प्रतीति करे और यह ऐसे पूर्वक कथनतो प्रत्यक्ष उपहास रूप विरुद्धहैं॥२४॥

पत्र ४६७ वें पर लिखाहै कि कृष्ण वासुदेव नेमजी को पूछता भया कि हे भगवन्! कोनसा पर्व पर्वों में से उत्तमहै तब नेमजी कहते भये कि मार्गशिर सुदि ११ एकादशी पर्व उत्तमहै क्योंकि जिनेन्द्रों के ५ पांच कल्याण सर्व क्षेत्र आश्री १५० डेढ़सौ हुयेहैं फिर कृष्णजी यह कथन सुनकर नाही

आवश्यकता प्रकट की जिससे गुरुदेव की परम्परा का एक सगठन बन सके एव उनकी स्मृति स्वरूप अजमेर स्थित मुख्य दादावाडी तथा भारत के कई नगरो में स्थित दादावाडियो का जीर्णोद्धार हो सके।

यह भी निर्णय हुआ कि परिस्थिति एव गुरुदेव की मुख्य दादावाडी अजमेर में स्थित होने के कारण सघ का केन्द्रीय या मुख्य कार्यालय काय सुविधा की दृष्टि से अजमेर में ही स्थापित किया जावे। हालां कि उपस्थित समुदाय ने यही निश्चय किया था किन्तु श्रावक सम्मेलन के अधिवेशन में अधिक वांछनीय समझ कर यही निणय किया गया कि जहा सघ के प्रधान मत्री का निवास स्थान हो वही पर सघ का कार्यालय रखा जावे।

तारीख २१ मई ५६

गुरुदेव की स्मृति में सपन्न होने वाले शताब्दी महोत्सव को तारीख २० ५-५६ की व्यस्त कायवाही बडे उत्साह व धूमधाम के साथ रात्रि के १२ बजे तक गुरुदेव के स्थान पर उनकी महिमा-मयी गुणावली भजन गायन से समाप्त हुई, उस सपूण दिवस का विशद वणन प्रस्तुत किया जा चुका है।

ग्रीष्म ऋतु में भी अजमेर की रातें बडी ठडी होती है। बाहर से पधारे हुए गुरुदेव के भक्त तारीख २१-५-५६ को प्रात काल उठकर भक्ति पूजन आदि करने के बाद पुन शताब्दी समारोह के उपलक्षाय निर्मित विशाल पडाल में एकत्रित हुए।

कायक्रम के अनुसार श्रावक सम्मेलन की कायवाही आरम्भ हुई। पडाल में पूव दिवसानुसार साधुसाध्वी, यतिगण, श्रावक-श्राविकायें सभी उपस्थित थे। सव प्रथम श्री फलोदी पाश्वनाय विद्यालय के विद्यार्थियो ने मगल गान प्रस्तुत किया। तदन्तर मद्रास से पधारे हुये फलोदी निवासी श्री गुलाव चदजी गोलेछा ने राजस्थानी बोली में उपस्थित समुदाय के स्वागताथ स्वागत गान बहुत ही आकपक ढग से गाया।

श्रावक सम्मेलन के सभापति पद को सुशोभित करने के लिये समारोह के सयोजक श्री राम-लालजी लूणिया ने जबलपुर निवासी श्रीमान् सेठ रतनचदजी साहिब गोलेछा का नाम प्रस्तावित किया। इसका अनुमोदन बाहर से पधारे हुये भिन्न २ प्रान्तो के गणमान्य सज्जनो ने किया।

श्रीमान् रतनचदजी साहिब गोलेछा के सभापति का आसन ग्रहण करने पर समारोह के सयोजक द्वारा तथा अन्य उपस्थित समुदाय म से कई सज्जनो ने पुष्पाहार से उनका स्वागत किया। गोलेछा साहब ने आचाय महाराज श्री जिन आनद सागर सूरिजी बीकानेर के श्री पूज्यजी श्री जिनविजय सेन सूरिजी एव विद्वान् साध्वीजी श्री विचक्षण श्रीजी से अज की कि प्रथम आप उपस्थित समुदाय को आशीर्वादात्मक सभापण से कृताथ करियेगा।

ने ऐसे लिखाहै कि अनन्त को प्रत्येक कहै तो मिश्र, प्रत्येक को अनन्त कहै तो मिश्र। तर्क। यह तो मिथ्या शब्द का अर्थहै और लिङ्गियेने मिश्र शब्दका अर्थ लिखाहै यह विरुद्ध॥२१॥ पत्र १११ वें पर लिखाहै कि "मूलोत्र गुण दोष प्रत्ति सेवी व कुश इत्यादि" उत्तर पक्षी सो यह झूठ, क्योंकि भगवती सूत्र सतक २५ उदेशा ६ द्वार ६ "वकुशा नियंठा नो मूल गुण पड़िसेवय होज्जा उत्तर गुण पड़िसेवय होज्जा" इति वचनात् पूर्व पक्षीका कहनाहै कि मूल गुण उत्तरगुणमें दोष लगाने वालेमें वकुश नियंठा पाईए और सूत्रमें मूल गुणमें दोष लगानें वाले में वकुश नियंठा न पाईए इति सूत्रथकी विरुद्ध २२॥ ऐसे २ अनेक परस्पर विरुद्ध और अनेक शास्त्रार्थ के विरुद्ध और अने

जिस महापुरुष की स्मृति मनाने के लिए यह आयोजन किया गया है उनकी जन समाज को बहुत बडी देन है। हम सब जो आज जन और श्रावक कहलाते ह, वे उन्ही महापुरुष की परम करुणा का ही फल है। हमारे पूर्वजो को उन्होने मास, मदिरा और पशु वलि आदि हिंसक प्रवृत्तियो से हटाकर अहिंसा प्रधान जैन धम की दीक्षा दी और एक सुसगठित समाज के रूप म हमारा सगठन किया। उसी के फलस्वरूप हमारे कुल में उच्च एव आदशमय जीवन यापन सुगम हो गया है। उन गुरुदेव के अनन्त उपकारो से हम कभी उऋण नही हो सकते। अत हमारा कर्त्तव्य है कि उनके उपदेशित माग में स्वय चल और दूसरो को भी इस ओर प्रेरित कर।

पूज्य गुरुदेव की सबसे बडी देन यह है कि उन्होने चैत्यवास के विकृत माग का प्रबल विरोध किया और सुविहित माग को सवत्र प्रचारित किया। उन्होने जैन धर्म को जैनो में ही सीमित न रख कर सबके लिए उसका द्वार खुला कर दिया। अहिंसामय धम का इतना व्यापक प्रचार किया कि जिससे लक्षाधिक ओसवाल नये जैनी बने। आज हमारे में बहुत सकुचितता आ गई है। नये जन बनने का मार्ग अवरुद्ध सा है, इसीलिए हमारी सख्या दिनोदिन घट रही है। अत हमारा सबसे पहला कत्तव्य यही होना चाहिए कि गुरुदेव द्वारा उद्घाटित आदश माग को पुन अपना कर जैन धम का प्रचार जोरो से करें और जो भी नये जैन बनें उनको सामाजिक अधिकार देकर हर प्रकार अपनायें। आज विश्व में जैन धम के सदेश की बडी माग है। विश्वशान्ति का यही एक सच्चा उपाय है। इसलिए हम जैन धर्मानुरागी बनाने, बढाने और उनको अपनाने का सबसे पहला कत्तव्य समझना चाहिए।

दूसरी आवश्यक बात यह है कि आज जो हम जैन व श्रावक कहलाते ह उनम जैनत्व और श्रावकत्व का अभाव नजर आता है। जैन धम के ज्ञान से हम प्राय शून्य है और श्रावक के व्रतो के पालन में भी बहुत शिथिल हैं। जैन वश में जन्म लेने व सस्कारगत कुछ विधि नियम व रूढियो का पालन करते ह उनके सिवाय वास्तविक जैनत्व हमारे में कितना है, यह हृदय पर हाथ रख कर देखें। राष्ट्र के भावी कणधार हमारे नवयुवक तो और भी अधिक जन धम से दूर हटते जा रहे हैं। यह हमारे लिए बहुत ही गभीर प्रश्न है और इसका उपाय खोजे और किए बिना हमारा जैनत्व और श्रावकत्व खतरे में है। आज जो जैन होने का हमारे में बोध है, उसे भी टिकाये रखना कठिन मालूम देता है। मेरी राय म हमारी जैन शिक्षण सस्था में तो जन धम की शिक्षा अनिवाय हो ही पर अन्य सस्थाओ में पढने वाले जैन बालक-बालिकाओ के लिए भी जन धम की शिक्षा का उचित प्रबन्ध हो। धार्मिक पाठ्यक्रम की पुस्तकें शीघ्र तैयार की जाय और उनकी परिक्षाए चालू की जाय। उत्तीण छात्रो को पुरस्कार आदि द्वारा प्रोत्साहित किया जाय। सस्ते मूल्य में जैन महापुरुषो की जीवनिया और जन धम की मुख्य मुख्य बातें सरल भाषा म समझाने वाली पुस्तकें खूब प्रचारित की जाय, जिससे हमारे में जैन धम का ज्ञान बढे। जनाचार क्रियानुष्ठानो को भी नये और आकर्षक ढग से युवको के समक्ष रख जाय। केवल तोता रटत पाठो को ही महत्व न देकर उनके मम और महत्व का अच्छा बोध हो सके, इसके लिए हमें ठोस कदम उठाना चाहिए।

कराहै सो उसी परमात्मा के पूजनमें जो न
फ़ा होताहै उस नफ़े का पाठ सूत्रमें से कोई
न मिला तो यह खिशानी सा मइने रूप ज
वाव लिख धराहै, खैर तदापि हम तुम्हारे
जवाव को खण्डन करतेहैं कि पोथी को प
लंग और चौंकी पर अपनें पढ़नें के आराम
वास्ते रखतेहैं और मत्थे पर तो कोई मत प
ढी रखता होगा और अच्छे कपड़े में तो अ
पने उपकरण की रक्षा वास्ते रखतेहैं परन्तु
पोथी की पूजा तो नहीं करतेहैं यथा "नमोब्र
म्हलिपये" इति अस्यार्थः नमस्कार हो ब्र
म्ह ज्ञानी की लिखित को भावार्थ सो इस पो
थी यानि स्याही कागज़ को तो नमस्कार नहीं
करतेहैं अपितु ब्रह्मज्ञानी के ब्रह्मज्ञान को
नमस्कारहै कि जिस ज्ञानसे लिखने पढ़ने
की बुद्धि प्रकट हुई तथा जिस ज्ञानीने अक्ष

का बहुत उपकार हुआ है और अब भी यदि उसे ठीक ढग से तैयार कर काम लिया जा सके तो इससे बडा लाभ हो सकता है।

अब हमें आत्मलोचन करना है। श्रावक कहलाते हुए भी हमारे में श्रावकोचित गुणो का विकास नही नजर आता है। जनत्व तो बहुत दूर की बात है, पर हम मानवता से भी दूर हटते जा रहे है। यह बहुत ही विचारणीय है। आज अनतिकता का बोलबाला है। और हमारे व्योपार में प्रमाणिकता बहुत कम रह गई है। वास्तव में जैन होने के नाते हमारा यह प्रभाव होना चाहिए था कि जैनी शोषण व किसी के दिल दुखाने का काम कर ही नही सकते, झूठ बोलना, चोरी करने की तो जैनो के लिए स्वप्न में भी कल्पना नही की जानी चाहिए थी। पर आज झूठ का बोलबाला है। धोखा-धडी व्यापार में प्रधान हो गई है। परस्त्री गमन आदि सप्त व्यसन निषेध तो प्रत्येक जैन के लिए जरूरी है। परिग्रह के प्रति हमारी जो आसक्ति दिनोदिन बढ रही है, यह तो जैन धर्म के सर्वथा खिलाफ है। अपरिग्रह व्रत भगवान महावीर की मौलिक देन है। सग्रहवृत्ति (परिग्रह) को बढाना पाच पापो में से बडा पाप है। हम इस बात को आज सर्वथा भूल गए है। इस परिग्रह रूपी पाप का प्रायश्चित हमें निस्वार्थ और उपयोगी कार्यों में दान देकर करना है। अब हमें परिग्रह परिमाण व्रत की ओर विशेष रूप से ध्यान देना है। आज अर्थ का युग है। येनकेनप्रकारेण धन कमाना और बढाना ही हमारा लक्ष्य हो गया है। पर वास्तव में मार्गानुसारी के पहले गुण मे "न्यायसपन्न-विभव' को जो स्थान आवश्यक है, चारित्र ही मनुष्य की उन्नति का मापदड है। राष्ट्र को चरित्र-वान् बनाने के लिए हमें त्याग की ओर बढना होगा। सेवा और श्रम को अपनाना होगा। सादगी-पूर्ण जीवन बिताना होगा और बधुत्व व आत्मीयता की भावना का बढाना होगा। गुरुदेव के इस उत्सव से कुछ भी जीवन मे प्रेरणा ले सकें तो हमारा यह उत्सव सफल माना जा सकेगा।

आज श्रावक सघ के सगठन की बहुत बडी आवश्यकता है। साधु-साध्वी हमारे श्रावक सघ से ही निकलते है और श्राविकाए तो हमारा अभिन्न अग है ही। इसलिए यदि हम श्रावक सघ को सुसगठित, प्रभावशाली और तेजस्वी बना सकें तो अन्य तीनो का उन्नत होना सहज होगा। अतएव गुरुदेव के इस पुण्य प्रसग पर हमें श्रावक सघ की एक ऐसी सस्था का सगठन करना परमावश्यक है जो गुरुदेव के बताए हुए मार्ग को अधिकाधिक प्रचलित कर सके। आशा है आगत सभी सज्जन मेरी निवेदित इन चद बातो पर गभीरता से विचार कर किसी ठोस योजना को क्रियान्वित करने का सकल्प लेकर प्रयत्न करेंगे।

अन्त में मै आप सब महानुभावो का पुन आभार मानता हू जिन्होने मुझे यह सेवा कार्य सौंप कर अपने विचार प्रकट करने का सुअवसर दिया है। अपने विचारो को मूर्त रूप देने के लिए जो भी सेवा मुझे दी जायगी उसे तन मन धन से सहर्ष करने का विश्वास दिलाता हू।

और अपनी तर्फ से तो सूत्रोंमें बहुते राही ढूंडरहे परन्तु कहीहोंतेतोपातेहां अलवत्ता सूत्र में से ढूंड ढूंड के एकदशावै कालिक के ८ वें अध्ययन की गाथा ५५ वी ब्रम्हचारी के अर्थ मेंहै सो खोलधरत्तेहैं यथा "चित्तभित्तं न निझ्झाए ,नारीवासुअलंकिअं, भरकरंपि वदठूणं, दिठंपडि समाहरे॥" अस्यार्थः साधु ब्रह्मचारी पुरुष चि० चित्रामकीभीत देखे नही ना० वा अथवा स्त्री अलङ्कार अर्थात् भूषण (गहने) सहित अलङ्कृत को देखे नहीं कदाचित् नज़रमें आपड़े तो दि० दृष्टिको पीछे मोड़े भ० (जैसे) सूर्य पर दृष्टि जापड़े तो जलदी पीछे मुड़जाय इत्यर्थः भला मूर्त्ति पूजनी सहीह किस तरह इस गाथामें होगई, खैर बड़ी बड़ाई कहतेहो कि स्त्रीकी मूर्त्ति देखने से काम

प्रस्ताव न० २

श्री जिनदत्त सूरि सेवा सघ के विधान निर्माण के हेतु यह सम्मेलन निम्न व्यक्तियो की एक समिति बनाता है—

१ श्री गनेशीलालजी नाहटा, कलकत्ता २ श्री विजयसिंह नाहर, कलकत्ता ३ श्री ताजमलजी बोथरा, कलकत्ता ४ श्री नवरतनमलजी सुराणा, कलकत्ता ५ श्री दयाचदजी पारख, कलकत्ता।

प्रस्तावक—श्री जवाहरलालजी लोढा।

अनुमोदक—श्री अगरचदजी नाहटा व पडित ईश्वरलालजी जैन।

सर्व सम्मति से स्वीकृत।

प्रस्ताव न० ३

"यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि श्री जिनदत्तसूरि सेवा सङ्घ द्वारा सात क्षेत्रो के उत्कर्ष आदि कार्यों को पूर्ण करने के लिए 'श्री जिनदत्तसूरि सेवा फण्ड' की स्थापना की जाय।

प्रस्तावक—श्री महताबचदजी गोलेछा, जयपुर।

अनुमोदक—श्री रूपचदजी सुराणा बीकानेर, श्री राजरूपजी टाक जयपुर, श्री भवरलालजी नाहटा कलकत्ता। श्री मोहनलाल दीपचद चौकसी सेक्रेटरी जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस बम्बई।

सव सम्मति से स्वीकृत।

प्रस्ताव न० ४

यह सम्मेलन समाज के अग्रगण्य इतिहासज्ञ श्रीमान् अगरचदजी नाहटा को 'जैन साहित्य रत्न' की उपाधि प्रदान करता है।

प्रस्तावक—श्री प्रतापमलजी सेठिया, मन्दसौर।

अनुमोदक—श्री जिनविजयजी महाराज जयपुर, श्री मोहनलाल दीपचद चौकसी बम्बई, पण्डित लालचद भगवानदास बडौदा, श्री जवाहरलाल लोढा आगरा, पण्डित ईश्वरलालजी जैन जयपुर।

सव सम्मति से स्वीकृत।

प्रस्ताव न० ५

यह सम्मेलन बिहार सरकार से सानुरोध निवेदन करता है कि अहिंसा के प्रवर्तक भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी से राजग्रही तक का प्रदेश 'अभय प्रदेश' घोषित करने की कृपा करे।

श्री अध्यक्ष द्वारा प्रस्तावित हुआ व सव सम्मति से स्वीकृत हुआ।

प्रस्ताव न० ६

यह सम्मेलन यतिवर्य श्री माणिक्यसूरिजी भींडर वालो ने जो आदिवासियो में जैन धर्म के

उत्तर पक्षीकी तर्क० हे विचारवानो! अब देखना चाहिये कि इस जवाब के देनेवाले को और कोई शुद्ध जवाब नहीं मिला जो विराग भाव अर्थात् वैराग्य का हेतु सराग भाव पर उतारा है सो बिलकुल अशुद्ध है क्योंकि वैराग्य तो क्षयोपशम भाव है तथा निज गुण अर्थात् आत्मगुण है

और कामका जागना उदय भाव है तथा परगुण अर्थात् कर्म योग्य है सो क्षयोपशम भाव और उदय भावका तो परस्पर रात दिन का अन्तर है॥

यथा, दृष्टान्त है कि जो गृहस्थी लोक हैं वे अपने पुत्र, पुत्रियों को लिखना पढ़ना आदिक कार व्यवहार तथा लज्जाका करना और मीठा बोलना तथा क्षमाका करना और माता पिता आदिक की आज्ञाका प्रमाण

प्रस्ताव न० १२

अजमेर के मदार पहाड पर जिस जगह गुरुदेव ने समाधि ली थी वहा उनकी चरणपादुका है उस स्थान पर कोई अच्छा स्मारक बनाया जाय ।

प्रस्तावक—मङ्गलचदजी सकलेचा, अनुमोदक—रामदयालजी भडारी

प्रस्ताव सब सम्मति से स्वीकृत ।

प्रस्ताव न० १३

श्री तीर्थाधिराज सिद्धाचलजी की श्री ऋषभदेवजी की टूक के पास जो गुरुदेव के चरण विराजमान हैं, वहा का जीर्णोद्धार होना आवश्यक है ।

अध्यक्ष द्वारा प्रस्तावित एव सब सम्मति से स्वीकृत ।

उपरोक्त प्रस्ताव स्वीकृत होने के पश्चात प्रस्ताव न० १ में आयोजित जिनदत्तसूरि सेवा सघ के कार्य सचालन एव अर्थ व्यवस्था का विषय विचारार्थ उपस्थित हुवा । अनेक सज्जनो ने अपने अपने विचार प्रकट किये । ता० २०-५-५६ को विषय निर्धारिणी समिति में जब सेवा सघ का प्रस्ताव रखा गया था तब दादागुरु का विशेष स्थान अजमेर में ही स्थिति होने के कारण सेवा सघ का केंद्रीय कार्यालय भी अजमेर में स्थापित करना निश्चित किया गया था अत तदनुसार स्थानीय उत्साही कार्यकर्ताओ ने जब प्रस्ताव स्वीकृति के लिये समुदाय के समक्ष आया तो उसी समय से उसका प्राथमिक चदा एक एक रुपया एकत्रित करना आरभ कर दिया था । वह एकत्रित सारी राशि व रसीद जो शीघ्रताशीघ्र इस काम के लिये छपाई थी सेवासघ के विधान निर्माण के हेतु सगठित समिति जिसके सदस्यो के नाम प्रस्ताव नबर एक के अन्त में प्रकाशित हुये हैं उनमें से कुछ के आग्रह के कारण केन्द्रीय कार्यालय को अजमेर में न रखने के परिवर्तित आयोजन को वादविवाद के आक्षेपो से बचाने के हेतु, एकत्रित राशि तथा सबधित रसीदें भी सेवा सघ के मनोनीत मत्री श्री प्रतापमलजी सेठिया के सुपुर्द कर दी ।

सेवासघ का निर्माण जिन कार्यों को ध्यान में रख कर किया गया था उसके लिये सुदृढ आर्थिक स्थिति भी आवश्यक थी अत उसी समय सेठ महताब चदजी गोलेछा जयपुर वाला ने ५००१), सेठ रतनचदजी गोलेछा जबलपुर वालो ने २१०१) तथा श्री रामलालजी लूणिया ने २१०१) सहायता देने की घोषणा की ।

तदनन्तर २ प्रस्ताव और भी उपस्थित हुये । एक तो देव द्रव्य नाम से सग्रहित अतुल धन राशि को शिक्षा प्रचार के उपयोग में लाने के सबध में था । विषय की मार्मिकता एव तत्सबधी पक्षापक्ष एव वादविवाद का विचार कर अध्यक्ष महोदय ने इस प्रस्ताव पर विषय निर्धारिणी समिति में पूर्व विचार न होने के कारण उपस्थित करने के लिये अस्वीकृत कर दिया ।

दूसरा प्रस्ताव जयपुर निवासी श्री   गड न योग्य विद्यार्थियो के लिये

भावें का एकसा हेतु कहने वाला विरुद्ध वा
चीहै परन्तु यह भाव तो निष्पक्ष दृष्टिसे स
म होगा और पक्षके नशेमें बड़ बड़ाट कर
ने के लिये तो राह अनेक हैं॥

अब हम एक प्रश्न करतेहैं कि जब तक
गुरुका उपदेश और शास्त्र ज्ञान नहीं हो
गा तब तक मूर्त्तिके देखने से ज्ञान और
वैराग्य कैसे होगा और ज्ञानके द्वारा पीछे
मूर्त्ति से क्या प्रयोजन रहताहै॥यथा दृष्टान्त
किसी ग्रामके रहने वाले दो पुरुष किसी
प्रयोजन के लिये एक नगर में आये उन्हों
ने उस नगर के निकट सुना कि मनुष्य
को धर्मका जानना और ग्रहण करना उ
चितहै इसके अनन्तर वे दोनों पुरुष न
गरमें जाकर अन्य२ पुरुषों को पूछते भ
ये कि हे भाइयो! धर्म कहां मिलताहै जो



अष्टम शताब्दी महोत्सव पर एकत्रित श्रीपूज्यजी श्रीजिनविजयसेनसूरिजी, श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिजी,
श्रीजिनधरणेन्द्रसूरिजी महाराज एवं यति समुदाय का एक दर्शनीय चित्र

ला पतिभक्ता गौरवर्णा हुईहै इत्यादि:

और दूसरा ठाकुर द्वारे पहुंचा तो वहां देख ता क्याहै कि एक श्याम वर्ण पुरुष और गौर वर्ण स्त्री, की मूर्त्ति का, जोड़ा खड़ाहै सो उसको देखकर उस पुरुषने हसकर मनमें कहा कि आहा! क्या अच्छी स्त्री-पुरुषकी जोड़ी सजी है और क्या २ अच्छे जेवरहैं बस और कुछ ज्ञान वैराग्य नहींपाया फिर वापस बाजार में आया और वह दूसरा पुरुष धर्म शाला मेंसे धर्मोपदेश सुनकर बाज़ारमें आया, और दोनो आपसमें पूछनें लगे कि कुछ ध र्म पाया? धर्मशाला वाला बोला कि हां पाया, श्री ठाकुरजी बड़े न्यायी हुएहैं और दया दान कर्ना, धर्महै। भला तुमने क्या पाया? तो व ह ठाकुर द्वारे वाला बोला कि मैंने तो कुछ नहीं पाया, हां अलबत्ता एक बड़ा सुन्दर

लखनऊ वाले श्री पूज्यजी श्री जिनविजयसेन सूरिजी महाराज की अध्यक्षता में यति सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। आपके पास जयपुर वाले श्री पूज्यजी श्री जिनधरणेन्द्रसूरिजी महाराज तथा बीकानेर के श्री पूज्यजी श्री जिनविजयेन्द्रसूरिजी महाराज एक ही मंच पर विराजे हुये थे। अन्य उपस्थित यति समुदाय चारों ओर विराजमान था। सम्मेलन का संचालन दिल्ली से पधारे हुए यतिवर्य श्री रामपालजी महाराज कर रहे थे। उन्होंने गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् यति सम्मेलन की रूपरेखा को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए जो अथक परिश्रम किया उसका सारा विवरण समुदाय के समक्ष उपस्थित किया। तथा यति सम्मेलन में स्वीकृतार्थ कार्यकारिणी द्वारा निर्धारित एवं स्वीकृत प्रस्तावों को पढ़कर सुनाया।

यति सम्मेलन के प्रस्ताव

१—गच्छ सबंधी सारे विवादों को त्याग कर समस्त यतियों का एकीकरण किया गया। अतएव आज से हमारा यति समाज अपना अपना पृथक अस्तित्व न रखता हुआ 'भारतीय यति सङ्घ' का अनुयायी रहेगा और उसके विधान का पालन करेगा।

२—यह यति संघ शिक्षा प्रचार के लिए पूर्ण प्रयत्न करेगा जिससे भविष्य की रूपरेखा उज्वल हो।

३—यह यति संघ समाज में सामयिक उच्च शिक्षा का प्रसार कर विदेशों में भी अपने दर्शन का प्रचार करने के लिए प्रयत्नशील होगा।

४—यति संघ का अध्यक्ष प्रत्येक निर्वाचन के अवसर पर सदस्यों द्वारा निर्वाचित होगा। इस वर्ष आचार्य श्री जिनविजयेन्द्रसूरिजी महाराज अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं और इन्हीं के आदेश पर संघ का कार्यक्रम चलता रहेगा।

५—यह यति संघ मानवीय स्वभाव और परिस्थिति जन्य दुर्बलताओं का परिहार कर 'यति' शब्द का गौरव करने के लिए सर्वदा कटिबद्ध रहेगा।

६—समयोचित व्यवहारों को रखते हुए अन्य आडम्बरजन्य व्यवहारों का त्याग किया जाएगा।

७—शास्त्रों की रक्षा के लिए पूर्ण प्रयत्न किया जायगा जिससे वे विकृत व विनष्ट न हों।

८—१८ वर्ष पहिले यति दीक्षा न हो सकेगी। पठन-पाठन के बाद योग्य होगा उसे दीक्षा दी जायेगी।

इसके पश्चात सर्व सम्मति से 'भारतीय यति सङ्घ' के अध्यक्ष श्रीपूज्यजी श्री जिनविजयेन्द्रसूरिजी महाराज, संयुक्त मंत्री जयपुर के यतिजी श्री चतनलालजी व दिल्ली के यतिजी श्री रामपालजी महाराज और कोषाध्यक्ष बीकानेर के यति श्री प्यारेलालजी महाराज निर्वाचित हुए।

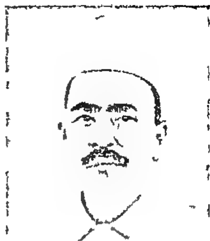
अन्त में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्री पूज्यजी श्री जिन विजयसेनसूरिजी महाराज ने फरमाया कि—

हटादेवें। तब वह रोगी पहिले, छोटे वे टे के पास गया और कहने लगा कि तुम ह कीमके पुत्रहो और मैं दूरसे आयाहूं इस लिये मेरा रोग कृपाकर हटादो। तब वह बोला कि हकीमजी की मूर्त्ति से मुराद पा ओ तब वह रोगी हकीम की मूर्त्तिके आगे बैठके रोने लगा और कहने लगा कि हे ह कीमजी! मेरी बगलमें पीड़ा होतीहै मेरे क लेजे में पीड़ा होतीहै और मुझे तापभी च ढ़ जाताहै+सो कुछ दवा बताओ कि जिस से मैं राजी होजाऊं इत्यादि· परन्तु उधरसे कुछ आवाज तलब न आई तब हारके चला आया और फिर बड़े बेटे के पासजाके अर्ज़ करी कि तुम मेरा रोग हटाओ, तब वह बोला कि हकीमजी तो गुज़र गयेहैं परन्तु हकीमजी की पोथी मेरेपासहै सो देख

शताब्दी महोत्सव के उप-स्वागताध्यक्ष



सेठ हरिश्चन्द्रजी धाडीवाल अजमेर



सेठ जीतमलजी लूणिया अजमेर

शताब्दी महोत्सव पूजासमिति के संयोजक



सेठ मागीलालजी पाटनी अजमेर

स्वयंसेवक समिति के संयोजक



सेठ मगनराजजी गदैया अजमेर

जिने अज्ज दीसई वहूमरु दीसई मग्गरे शिरः" इति वचनात्

परन्तु यहां ऐसे नहीं कहा कि आज जिन नहीं दीखे परन्तु जिन पड़िमा जिन सारखी घनी दीखेहे, इत्यादि०

नजाने पूर्वपक्षीने कौनसे नये बनावटी ग्रन्थ वचाजिब, तथा स्वकपोल कल्पित जैन तत्वादर्श ग्रन्थ पत्र ५८६वे पर लिखाहे कि "सिद्ध सेन दिवाकर साधुने राजा विक्रमके द्वारे सवाल किया कि ओंकार नगरमें चतुर्द्धार जैन मन्दिर शिव मन्दिर से ऊंचा बनवाओ और प्रतिष्ठाभी कराओ, तब राजाने वैसेही करा, फिर और पत्र ५८८वें पर लिखाहे कि श्री वज्रस्वामी आचार्यने बोद्धों के राजमें श्रीजिनेन्द्र की पूजावास्ते फूल लाके दिये, बोद्ध राजाको

सुधारक थे आपने अध्यात्म के बल पर व अपनी आत्म शक्ति द्वारा मानव धर्म का उपदेश देकर भ्रातृ-प्रेम उत्पन्न करके अनेक जातियों को जैन धर्म में दीक्षित किया। आपने साहित्यिक ग्रन्थों की भी रचना की उनमें अपभ्रंश काव्यत्रय उत्कृष्ट ग्रंथ माना जाता है यह ग्रंथ गायकवाड़ ओरियंटल सीरीज से प्रकाशित हो चुका है।

आचार्य श्री ज्ञान के भंडार होते हुए भी नितान्त निराभिमानी और सरल प्रकृति के जीव थे। आज भी यति सङ्घ और श्रमण सङ्घ उन्हीं के पदचिह्नों पर चल रहा है और चलता रहेगा।

यदि आज का जैन समाज उनके दर्शित मार्ग का अवलम्बन करके जैन धर्म के प्रचार में और जैन संस्कृति की रक्षा में अधिक प्रयत्नशील हो तो यह पुण्य तिथि सार्थक होगी। हमारा यति समुदाय जो इस समय पुनः जागृत हुआ है अपने पूर्व महात्माओं के पथ पर चलता हुआ शिक्षा प्रसार में अग्रसर हो तथा पास किये हुए प्रस्तावों का पालन करके पुनः धर्म ध्वजा फहराने में सफल हो यही चाहता हुआ अपने भाषण को पूर्ण करता हूँ।

अन्त में यतिजी श्री रामपालजी महाराज ने सबका धन्यवाद दिया और सभा विसर्जित हुई।

जैन साहित्य परिषद्

सायं भोजनोपरान्त शताब्दी महोत्सव के विशाल पंडाल में रात्रि को ८ बजे प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता यशस्वी जैन साहित्यकार विद्यानिधि श्री जिनविजयजी महाराज की अध्यक्षता में जैन साहित्य परिषद् का कार्य आरम्भ हुआ।

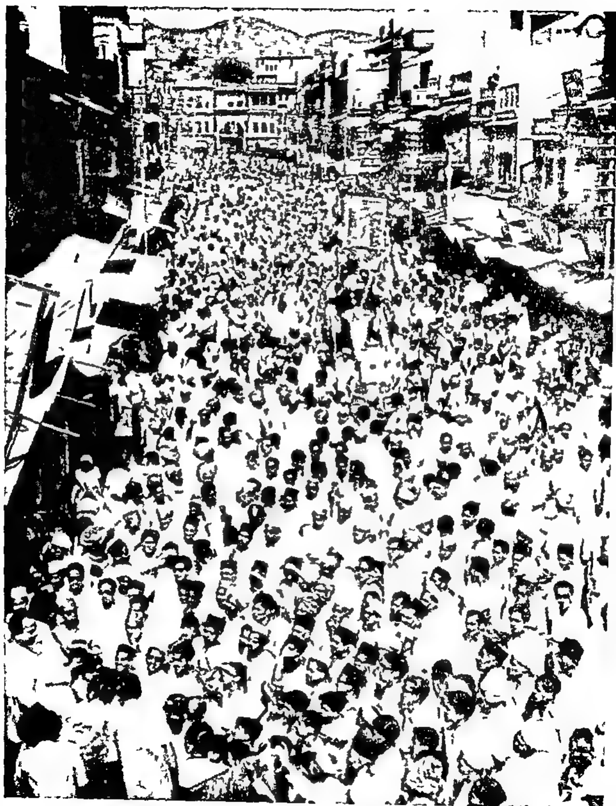
सर्व प्रथम ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट जैन विभाग, बड़ौदा, के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रसिद्ध विद्वान पंडित लालचंद भगवानदास गांधी ने परिषद् का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री गांधी ने महान् जैनाचार्यों द्वारा सुसाहित्य के कलेवर को विशाल बनाने के इतिहास का दिग्दर्शन एवं जैन साहित्य में मानवीय भावनाओं का साक्षात्कार कैसे किया गया है, इसका विशद विवेचन किया।

प्रमुख जैन साहित्यकार श्री अगरचंद जी नाहटा ने अपने भाषण में बतलाया कि शताब्दियों से सस्कृति एवं कल्याणकारी धर्म व्यवस्था को सुचारु रूप से परिवर्धित करने में जैन साहित्य कितना अग्रगण्य रहा है। कैसे कैसे समर्थ साहित्यकार जैन संस्कृति को निर्बाध रूपेण सुरक्षित कर आज तक उसे प्राणवान बनाये हुए हैं उसका दिग्दर्शन कराया तथा कहा कि हम उन साहित्यकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें एवं अच्छे साहित्य की श्रीवृद्धि भी करें।

प्रसिद्ध वक्ता मुनि कान्तिसागरजी ने अपने विद्वत्तापूर्ण एवं सारगर्भित भाषण में श्रेष्ठ साहित्यकारों की कृतियों में सदैव संचारित चैतन्य किस भांति युग युग का मार्ग निर्देशन करता रहता

ल स्वभाव से विचरे संयमने विषे तेस यति साधु गा० ग्राम में गये घके तैसेही नगर में गयेडूए अर्थात् ग्राम में जाय तथा नगर में जाय तहां सं० दया मार्ग अर्थात् ६ षट् काय रक्षा रूप धर्म(च) पदपूरणार्थहै बू० कहै अर्थात् दया प्रकट करे। श्रीमहावीर स्वामी कहते भये कि हे गोतमजी दया मार्ग के उपदेश देनेमें स० समय मात्र अर्थात् अल्प काल मात्र भी प्रमाद अर्थात् आलस्य न करना इत्यर्थः

परन्तु महावीर स्वामीजीने ऐसेतो नहीं कहा कि हेगोतम! साधु जिस २ ग्राम नगर में जाय उस २ में मन्दिर बनवा देवे छैरों, ढोलकी बजवा देवे पुराने देहरों को तोड़ करनये बनवादेवे इत्यादि हां अलबत्ता नये ग्रन्थ जिनमें ग्रन्थरच



वरघोड के जुलूस में सम्मिलित विशाल जन-समूह का एक दृश्य नया—बाजार में

उत्तर देंगे कि सूत्र को हम भगवान् तो नहीं मानते हैं कि यह ऋषभदेवजी है यह महावीरजी हैं अपितु सूत्र तो हमारी विद्या के यादगारी के उपकरण हैं जैसे वही को देखकर लेना, देना याद करलेते हैं परन्तु वही को लोक भगवान तो नहीं मानते

बस इस दृष्टान्त वम्जिब सद्गुरु की सेवा करके ज्ञान पैदा करो और जप, तप, दया, दान, संतोष और शील, में पुरुषार्थ करो कि जिससे मुक्ति होवे और मूर्त्ति को भगवान कहना तो ठीक नहीं क्योंकि

इससे ऐसे प्रश्न पैदा होते हैं कि

१ प्र० देव समदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि है ?

उत्तर· देव समदृष्टि

और मूर्त्ति जो सुचित्त पाषाण की होवे तो मिथ्यादृष्टि नहीं तो जड़ तो है ही इसी तरह

घोडा जुलूस नया बजार पहुचा तब उसका दृश्य देखने लायक था। श्री मज्जैनाचार्य वीरपुत्र १००८ श्री आनन्दसागरजी उपाध्याय श्री सुखसागरजी तथा उपाध्याय श्री कविन्द्रसागरजी महाराज अन्य मुनि समुदाय के साथ साथ तीनों श्रीपूज्यजी महाराज यति समुदाय के साथ वरघोडे की शोभा बढा रहे थे। सारा जनसमूह जय जयकार करता हुआ गुरुदेव के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करता हुआ आगे बढ रहा था। शताब्दी महोत्सव के सयोजक गुरुदेव के परम भक्त श्रावक सेठ श्री रामलाल जी लूणिया ने ६०१) की आखरी बोली बोलकर गुरुदेव के कला पूर्ण निर्मित एक बडे तैल चित्र को लेकर अवारी वाले हाथी पर बैठे चवर डुलाते जाते थे। हाथी की सवारी के पीछे करीब २ हजार श्राविकाए, पू० साध्वीजी महाराज के साथ मगल गान करती हुई चल रही थी। सारे वरघोडे का दृश्य अपूर्व दर्शनीय था। चतुर्विध श्री सघ का ऐसा एकत्रित समुदाय अजमेर में प्रथम बार ही देखने को मिला।

नया बाजार में श्री रामलालजी लूणिया की तरफ से ठडाई से सबका स्वागत किया गया। जुलूस इपीरियल रोड, कचहरी रोड व रेल्वे कालोनी के विभिन्न मार्गों से गुजरता हुआ लगभग ११ बजे दादवाडी जा पहुचा और वहा एक विशाल सभा के रूप म परिणत हो गया। पुन १०१) की आखिरी बोली के साथ गुरुदेव का चित्र हाथी पर से उतार कर सभा मडप के रगमच पर एक ऊचे स्थान पर श्रीमान जीवनलालजी बोथरा दिल्ली वालो ने स्थापित किया। सभा में भी आचार्य महाराज, मुनि जिनविजयजी एव विद्यानिधि श्री कातिसागरजी ने गुरुदेव के सदुपदेशो की ओर सारे समाज का ध्यान आकर्षित किया। भोजन का समय होने से सभा शीघ्र ही समाप्त की गई।

श्राविका सम्मेलन

इस नव जागरण के युग में सचमुच महिलाए अनुपेक्षणीय है। अपेक्षाकृत जैन समाज मे पुरुषो के प्राबल्य के कारण श्राविकाओ की अभी तक उपेक्षा होती आई है जब प्रस्तुत उत्सव का आयोजन किया गया तभी से आयजको क मस्तिष्क में एक बात बराबर रही कि इस शुभ प्रसग पर अखिल भारतीय जन श्राविका सम्मेलन भी रखा जाय जिसमें स्त्रिया अपना भावी विकास व उज्वल पथ का निर्माण कर सकें।

दिनाक २२ मई १९५६ का मध्यान्ह अजमेर जैन समाज के लिए विशेषकर नारी समूह के लिए वरदान सिद्ध हुआ। अष्टम शताब्दी महोत्सव में भाग लेने के लिए हजारो नारिया देश के कोने कोने से एकत्र हुई थी उनका एक स्वतत्र सम्मेलन कुमारी प्रमलता सचेती, एम० ए० (फाइनल) के सभानेत्रित्व में आरम्भ हुआ।

सभानेत्री के आसन ग्रहण करने के पश्चात् कुमारी रोशन मेहता (सयोजिका श्राविका सम्मेलन) ने सम्मेलन की कार्यवाही बडे सुचारू ढग से सचालित की।

स्थानीय कन्या पाठशाला की बालिकाओ के मगल गान के पश्चात् सभानेत्री ने अपना भाषण पढकर सुनाया। कुमारी रोशन मेहता का छोटासा व्याख्यान नारी जाति की जागति के सबध में

९प्र० देव सन्नी, किम्वा असन्नी?
उ० देव सन्नी, मूर्त्ति असन्नी॥
१०प्र० देव दश प्राणधारी किम्वा चारप्राण०?
उ० देव दश प्राणधारी, मूर्त्ति चारप्राण०
११प्र० देव षट् प्रजा धारी किम्वा चारप्रजा०?
उ० देव षट् प्रजा धारी मूर्त्ति चार प्राजा०
१२प्र० देव तीन वेदमाहे सुवेदी किम्वा अवेदी?
उ० देव अवेदी, मूर्त्ति नपुंसक वेदी०
१३प्र० देव यति किम्वा गृहस्थी?
उ० देव यति, मूर्त्ति गृहस्थी॥
१४प्र० देव सुने किम्वा न सुने?
उ० देव सुने, मूर्त्ति न सुने॥
१५प्र० देव देखे किम्वा न देखे?
उ० देव देखे, मूर्त्ति न देखे॥
१६प्र० देव सुगन्धि जाने किम्वा नजाने?
उ० देव सुगन्धि जाने, मूर्त्ति नजाने॥

वान्धवी के रूप में, पत्नी के रूप में, जननी के रूप में, भगिनी के रूप में वह स्नेह, प्रेम तथा वात्सल्य के मोती लुटाती आई है। उसके इस अक्षय कोष को देखकर यदि कोई डाह करे तो कोई आश्चय नही। कवि प्रसाद ने "कामायनी" की इन पक्तियो में नारी के महत्व को बडे ही सुन्दर शब्दो में हमारे सामने इस प्रकार रखा है--

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो नव विश्वास रजत नग पगतल म,
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल म।"

वास्तव में नारी का श्रद्धापूण समपण ही उसकी महानता का सूचक है। उसका महत्व इसी से स्पष्ट है कि प्रकृति ने उसे जगनियता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। बडे २ महापुरुषो, जैसे भगवान् महावीर, भगवान् बुद्ध तथा महात्मा गाधी को जन्म देने वाली नारियाँ ही थी।

पर वतमान परिस्थितियो पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि आज नारी को समाज म वह स्थान प्राप्त नही है जो पहले था, यद्यपि परिस्थिति अब तीव्र गति से बदल रही है तथा हमारे सविधान में भी नारी को पुरुष के समान ही अधिकार दिए जाने की व्यवस्था है। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उसको भी उन अधिकारो की आवश्यकता है जो पुरुषो को सहज ही प्राप्त ह। अधिकतर औरतें घर की चहारदीवारी के बीच ही बन्द रहती हैं, उनको बाहर की हवा तक नही लग पाती और न ही वे यह जान पाती ह कि ससार में क्या कुछ हो रहा है। इस प्रकार उसका सम्पूण अस्तित्व मिट सा गया है, और उसकी वाणी मानो मूक हो गई है।

यही सब कारण ह जिनसे कि आज 'नारी स्वतन्त्रता' का एक जबरदस्त आन्दोलन धीरे धीरे जोर पकडता जा रहा है।

एक समय था जब लडकियो को पढाना अनावश्यक तथा हेयप्रद समझा जाता था। लोग यहा कहते थे—इनसे कौनसी नौकरी करानी है? आज वे बात नही रही ह, हमारी राष्ट्रीय सरकार भी स्त्री शिक्षा पर काफी जोर दे रही है, फिर भी हमारा जन समाज इस विषय म काफी पिछडा हुआ है। कन्या शिक्षा पर इतना जोर नही दिया जाता जितना पुत्र शिक्षा पर।

आज का युग स्वतन्त्रता का युग है, अधिकार का युग है, जिसम प्रत्येक को अपने विषय में सोचने का अधिकार है। जो ऐसा करने में पिछड जायगा वह पिछडा हुआ ही रहेगा।

इतना सब कहने का मेरा अथ यह नही कि नारी पुरुष के प्रति कोई विद्रोह खडा कर दे। मेरा मतलब केवल यह है कि समाज को नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए, सकीर्णता की जगह विचारो में व्यापकता आनी चाहिए। स्त्री और पुरुष तो जीवन रूपी गाडी के दो पहिये हैं। यदि एक भी पहिया ठीक तरह से काम नही कर पाता है तो जीवन भी सहज तथा स्वाभाविक रूप से आगे नही बढ पायेगा--कितनी ही विषमताए समाज में प्रवेश कर जायगी। इसीलिए जिस प्रकार पुरुष को

२५प्र० देव जघन कितने उत्कृष्ट कितने ?
उ० देव जघन २० वीस, उत्कृष्ट १७० एकसौ सत्तर - और मूर्त्तियें लाखोंहैं घर २ में भरीहैं॥
इत्यादि। फिर "जिनपड़िमा जिन सारखी" यह किस न्यायसे कहतेहो ? खैर उनकी श्रद्धा के अधीनहै मूर्त्तिके मण्डन करने कोभी अनेक राहहैं और खण्डन करने कोभी अनेक राहहैं परन्तु असलमें तो योंहै कि मूर्त्ति का मण्डन भी हठहै और खण्डन भी हठहै, तत्वकेवली जानतेहैं॥
और यह मतान्तरों की लड़ाई तो वीतराग देव केवल ज्ञानी मालकों के बैठे न निवड़ी जमालीवत् ॥ और अबतो रांडों की फ़ौजहै सो मतान्तरों की लड़ाई क्या निवड़ेगी परंतु तदपि बुद्धिमानों को चाहिये कि स्वआत्म हित कार रूप धर्म में पुरुषार्थ करें क्योंकि तीर्थ

श्राविका सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव—

(१) आचार्य महाराज दादा जिनदत्तसूरिजी के शताब्दी महोत्सव के इस शुभ अवसर पर उपस्थित नारी समुदाय उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

प्रस्तावक — जवर सचेती

अनुमोदक — शांति जैन

(२) आज का यह सम्मेलन सर्वानुमति से निर्णय करता है कि मुखावरण (पर्दा) जनतन्त्र युक्त भारतीय लोक संस्कृति में और समाज की दृष्टि में नारी के लिये एक महान् कलंक है। इस अनिष्टता मूलक प्रथा का निवारण तो २५ वर्ष पूर्व ही हो जाना चाहिए था। फिर अब भी जागृत नारी समाज आज से स्वयं तो पर्दे का त्याग करे ही और यह प्रतिज्ञा करे कि कम से कम २५-२५ नारियों को इस सामाजिक रूढ़ि से मुक्त कर स्वास्थ्य लाभ के द्वारा जीवन यापन करने के लिये प्रयत्नशील बनावें।

प्रस्तावक — कुसुम देवी बोथरा

समर्थक — मिस रोशन मेहता

(३) हमारे समाज की अकिंचन बहिनें, विशेषकर विधवायें आर्थिक कष्ट के कारण न तो सुख पूर्वक जी सकती हैं एवं न अपने मनोरथ धर्म का पालन ही कर पाती हैं। अतः हम सर्वानुमति से निर्णय करती हैं कि उनके लिये एक कोष स्थापित कर चंदा एकत्रित किया जाय जिसमें से विधवाओं को उचित सहायता दी जा सके।

प्रस्तावक — रोशन मेहता

समर्थक — कुसुम देवी बोथरा

(४) इस श्राविका सम्मेलन को इस बात का अत्यंत हर्ष है कि हमारे समाज में धर्म के प्रति अच्छी रुचि है। उनके उज्ज्वल चरित्र पर सबको श्रद्धा है परन्तु साथ ही साथ श्राविका समाज को इस सम्मेलन में यह प्रतिज्ञा भी करना चाहिए कि वह अपने दैनिक जीवन में कम से कम एक घंटे रोज स्वाध्याय अर्थात् उत्तमोत्तम सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन श्रवण अवश्य करें। इससे उनको अपने द्वारा की जाने वाली धर्म क्रियाओं का महत्व ज्ञात होगा एवं रस प्राप्त होगा। सच्चा आनन्द और रस प्राप्त होने के साथ ही अपनी भावी सन्तति को भी सुयोग्य एवं सुपथानुगामी बना सकेंगी जो राष्ट्र और समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी कार्य होगा।

प्रस्तावक — कुसुम देवी बोथरा

समर्थक — रोशन मेहता

संवत् १३४० के लगभग में पृथ्वीधर राजाके वेटे जांजणा नें उज्जयन्त गिरि के ऊपर १२ योजन ऊंची सोने रूपेकी ध्वजा चाढ़ी। तर्को० भला सोचना चाहिये कि ४८ अठतालीस कोस ऊंची ध्वजा कैसे किसके सहारे खड़ी करी होगी क्योंकि आध कोस ऊंची ध्वजा खड़ी नही कोई करसकता तो फिर ४८ कोसकी ध्वजा कहनी विना विचारे गोलेही गड़ावनेहैं और मत पक्षियोंने प्यारी स्त्रीके कहने की तरह हांजीही कह छोड़नाहै परन्तु बुद्धिमान ऐसे २ उल्कापातों को कैसे मानें, नहीतो वताओ कि कौन पुरुष देखआयाहै कि ४८ कोस की ध्वजाहैक्योंकि अनुमान ६०० वर्षकी वात वताते हो सो इतनी जलदी कहीं उडतो गई नही होगी क्योंकि तुम २४०० चौवीससौ वर्षके वनेहुए मन्दिर अवतक खड़े वतातेहो तो फिर

अखिल भारतीय जैन युवक सम्मेलन अजमेर के स्वीकृत प्रस्ताव—

(१) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि जैन युवक परिषद का अखिल भारतीय स्तर पर निर्माण किया जाय।

प्रस्तावक —	अनुमोदक —
श्री मोहनराज भण्डारी, पत्रकार	श्री संतोष चन्द जैन
प्रचार मंत्री—श्री जिनदत्तसूरिजी अष्टम	उप स्वागत मंत्री—श्री जिनदत्तसूरिजी
शताब्दी महोत्सव, अजमेर	अष्टम शताब्दी महोत्सव अजमेर

(२) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि धर्म और संस्कृति के प्रति हम युवकों का मानस दिनों दिन हटता जा रहा है। आज का युवक कल का राष्ट्रीय नागरिक है अतः इस की रक्षा के लिए विचार मूलक क्रान्ति को सजग बनाये रखने के लिए स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है। प्रत्येक युवक को चाहिए कि कम से कम एक घंटा प्रतिदिन उच्च जैन साहित्य का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करे।

प्रस्तावक —	अनुमोदक —
श्री देवराज गोधरा	श्री मोतीलाल भडगतिया

मंत्री, अखिल भारतीय ओसवाल सम्मेलन अमरावती

(३) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि प्रत्येक युवक का देश में निरक्षरता निवारण के लिए वर्ष भर में कम से कम १२ व्यक्तियों को साक्षर बनाना चाहिए।

प्रस्तावक —	अनुमोदक —
श्री सन्तोष चन्द बोहरा	श्री गुमानमल लूणिया

(४) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि देश में गिरती हुई आर्थिक दशा को ध्यान में रखते हुए पारिवारिक समारोहों में दहेज-टीका प्रथा का परित्याग कर पर्दाप्रथा का बहिष्कार किया जावे।

प्रस्तावक —	अनुमोदक —
श्री मोहनराज भण्डारी, पत्रकार	श्री जसवन्तसिंह पारख

जैन संस्कृति सम्मेलन

संस्कृति सम्मेलन के प्रति जनता की बड़ी उत्सुकता थी। यह स्वाभाविक भी है। कारण कि धर्मभूलक इस उत्सव में संस्कृति जैसा प्रश्न प्रायः भुला सा दिया जाता है। संस्कृति का भव्य जीवन में जनता स्थान न देने पर जहां तक विचार का प्रश्न है इसे समझना नितान्त आवश्यक है। इसी भावना से उत्प्रेरित होकर कम प्राप्त मात्रा व समागत बुद्धिजीवी विचारक एवं महिलाए तक इस कुतूहल में थी कि इस सम्मेलन में क्या होने जा रहा है। ठीक समय पर राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष श्री रामनिवासजी जोशी व राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री जयनारायणजी व्यास

ठीक दिखाया है वा नहीं॥
सो जेकर पण्डित पुरुष के लिखनेमें एक
झूठभी लिखा जाय तो सभाके बीचमें पण्डि
ताई किधर ही को घुसड़ जाती है जैसे कि
आर्य दयानन्द सरस्वती की रचा
ई हुई सत्यार्थ प्रकाश नाम पोथीमें जैनके
बारेमें कई एक झूठी बातें लिखी थीं तो फिर
उसको एक जैनी पुरुष ठाकुर दासने ब
हुत तंग किया था तो वह अपने असत्य
लेखको मान गया था, सो इसलिये पण्डित पु
रुष को ग्रन्थ में झूठ लिखना न चाहिये औ
र जो आत्माराम संवेगी इन दिनोंमें गुजरा
तियों का शाहूकारा देखकर मुखपत्ती उ
तारके गुजरात देशमें पड़ा फिरता है सोउ
सने जैन तत्त्वादर्श ग्रन्थमें अनेक ही झूठ
लिख धरे हैं यदि (जेकर) तुम न मानो तो भ

बल मिलता है। और जीवन में रहे आन्तरिक सौंदय के उद्दीपन का अवसर मिलता है। सस्कृति किसी भी राष्ट्र की ऐसी मौलिक सम्पत्ति है जिस पर सम्पूर्ण राष्ट्र का वास्तविक जीवन है। सस्कारशील राष्ट्र उन्नति कर सकता है। सस्कारो द्वारा ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मानव जीवन में जहा कही विकास के तत्व विद्यमान है वही सस्कृति पूर्ण आन्तरिक श्रृगार किए विद्यमान रहती है। कला के द्वारा साहित्य के द्वारा और सगीत के द्वारा सस्कृति का श्रोत मानव समाज में माननीय वृत्तियों का सिंचन करता है।

भारतीय इतिहास से विदित होता है कि यहा धर्म का लेकर ही मानवोद्यान पल्लवित पुष्पित हुआ है। कला भी धर्म का सहारा लेकर ही फली फूली है। ऐसी अवस्था में बिना धर्म के भला सस्कृति कैसे जीवित रह सकती है। अन्त श्चेतना का वास्तविक परिक्षण जीवन की बाह्य क्रियाओ पर निर्भर करता है। सस्कृति आत्मा है तो धर्म उसका ऐसा आवरण या शरीर है जिसके द्वारा चैतन्य-शील तत्व का अनुभव प्रत्यक्ष प्राणी को होता है। सस्कृति व्यक्तिगत वस्तु होकर भी समाज मलक प्रवृत्तियो में ही वह फलती फूलती है। भारतीय सस्कृति का अनुभव यह है कि अहिंसा-सयम और, तप में ही वह अभिव्यक्त हुई है। सचमुच जीवन में समत्व की साधना द्वारा ही तप का विकास होता है। इच्छा शक्तियो का ह्रास होता है और जीवन सयम की ओर प्रवृत्त होता है। इन तीनो के समन्वय को यदि धर्म कहा जाय या मानवता की आधारशिला कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी, इनको मैं सस्कृति का मूल तत्व मानता हू। जन परम्परा में निम्न पद्य में सस्कृति की सुन्दर सजीव और आकर्षक व्याख्या की गई है।

धम्मो मगल मुक्किठ्ठम् अहिंसा सजमो तवो। (दशवकालिक सूत्र)

जहा सयम नही है वहा जीवन ही नही है। रवि बाबू ने अपने सौंदय बोध नामक बंगला निबन्ध में सूचित किया है कि विश्व के सौंदय का वास्तविक अनुभव करने के लिए जीवन म सयम चाहिए। सयम ही अद्वितीय सौंदय का अनुभव कर सकता है। सुखाभिलाषी प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिस प्रकार सस्कारशील होना आवश्यक है उसी प्रकार सयम भी जीवन में उद्दीपन होना आवश्यक है। जीवन की विषमताओ को दूर कर समत्व की साधना में अपने आपको उन्नरित करना ही सयम है।

सयम जीवन का स्थितिशील तत्व है पर उसमें गति है जब कि नृत्य दिखने में गतिशील है पर स्थितिशील है। नृत्य के द्वारा भी सस्कृति का अनुभव होता है क्योकि इस हमारे यहा के समालोचको ने दृश्य काव्य का एक अग माना है। इसमें भी हमारी सस्कृति चमकती है। मुझे बचपन से ही कुछ नृत्य में विशेष रुचि रही है। मुख्य मन्त्री के आसन पर था तब भी नृत्य समारोह में सम्मिलित होता था म रग में इतना तन्मय हो जाता था कि अपनी मान मर्यादा का त्याग कर नर्तको के साथ सम्मिलित होकर उनका सहयोगी बन जाया करता था।

मुझे अब आपका अधिक समय नहीं लेना है। क्योंकि हजारो वर्षों तक सस्कृति की जो सरिता भन जीवन में बही और बह रही है भला कुछ क्षणो में उसकी व्याख्या द्वारा आपके समक्ष रखना

हमने झूठ लिखाहै अथवा कहो कि हम
भूलगये॥
उत्तरपक्षी· जो भूलगये तो फिर छापेका
खोट दूर कराओ क्योंकि तुम्हारे रागी, तुम्हा
रे पूर्वक कथन को सत्यमान बैठेंगे॥न
हीं तो सूत्रको झूठकहो॥ और हमजो पीछे ऐसा लि
खआयेहैं कि आत्माराम संवेगी गुजरात देश
में पड़ाफिरताहै सो आप इसबातपे गुस्सा न क
रें क्योंकि तुमने जैन तत्वादर्श ग्रन्थके पत्रे
५९३वेंपर लिखाहै कि वसन्त राय और राम
बख्श ढूंडिया पञ्जाबमें पड़ा फिरताहै
सो तुम्हारे कहने पर तुमको बराबर का
जवाब दियाहै नहीं तो कुछ ज़रूरत नथी॥
उत्तरपक्षी· इस ग्रन्थकर्तासे हम एक और
बात पूछतेहैं कि जो आपने जैनतत्वादर्श
ग्रन्थ रचाहै उसमें जो शास्त्रोंके वस्तुत्रिव

वज्ञानिक ईथर के सिद्धान्त से एक रडियो बनाना है। तो कालिदास की जो शकुन्तला पुस्तक है तो वे वज्ञानिक थ। उन्होने एक बात पर ईथर के सिद्धान्त की चर्चा की है कि वह एक पदाथ है और विश्वव्यापी है। तो असभव नही कि वे वैज्ञानिक नही थ। मेरा अभिप्राय यह है कि हमारी संस्कृति प्राचीन होते हुए भी केवल आध्यात्मिक नही, थी किंतु भौतिक भी थी। आर्थिक भी थी और इसी तरह चार सिद्धान्त हमारे सामने उपस्थित थे। किंतु जब हम अपनी सस्कृति की पश्चिमी सस्कृति से तुलना करते हं तो हमारी आज कल भारतीय सस्कृति आर्थिक है और पश्चिमी भौतिक है। हमने किसी कारण से भौतिक उन्नति, प्रगति को छोडकर आध्यात्मिक उन्नति की यह भी आवश्यक था। किंतु किसी कारण से हमने वज्ञानिक और भौतिक उन्नति नही की, यह उन्नति पश्चिमी देशो में भी दो सौ वर्षो से थी। किंतु विश्व एक छोटा सा कुटुम्ब बन गया इसलिए हम केवल सस्कृति का नाम लेते हैं तो विश्व की सस्कृति का हमारे मस्तिष्क में विचार आता है कि जब तक विश्व की सस्कृति एक नही होगी तब तक शाति नही होगी। तो विश्व सस्कृति में भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक उन्नति इन दोना का मिश्रण होगा तभी शाति होगी। क्योंकि पश्चिम में भौतिक उन्नति होते हुए नैतिकता का आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसमें भी अभाव है। यदि वास्तव में पश्चिम में सस्कृति है तो इस प्रकार अणुबम और अन्य विध्वसक शस्त्रो से डराना नही चाहिए। जो पश्चिमी देशो में अणुबमो और उद्जन बमो की होड चल रही है तो वास्तव में वह उन्नति नही है।

एक विद्वान ने लिखा है कि अमेरिका के अदर कुछ ट्रासपोट कपनियो ने सम्मेलन किया और विचार किया कि हम कुछ ऐसी परिस्थितिया बनाए कि जिससे जितनी कम दुर्घटनाए होगी तो लोग हमारा अधिक काम लेंगे। तो विचार किया कि ऐसा करना चाहिए। जब उन्होने खर्च का एस्टीमेट लगाया कि हजारो डालर लगते ह और ऐसी व्यवस्था करने में २५ हजार डालर इस खच से अधिक देने पडेंगे। जो मर जाते ह उनमे २५ हजार डालर अधिक लगते ह तो विचार स्थगित कर दिया। यह है मानवता! यहा मानवता की कमी है। तो पश्चिमी सस्कृति में आध्यात्मिकता बिना अधूरा है।

जन धम में (Matter and Soul) पदाथ और आत्मा को तथ्य माना गया है। जन सस्कृति दोनो का मिश्रण है। जैन धम वास्तविक रूप मे भारतीय सस्कृति का प्रतिबिम्ब है। इसमें जैन दशन का बहुत बडा स्थान है। और जैन दर्शन में विशेष कर जो पाच महाव्रत है इनमें दो इतने आवश्यक ह विश्व सस्कृति के विकास के लिए कि इनके बिना शाति नही हो सकती। यदि हम अणुव्रत के रूप मे भी अहिंसा और अपरिग्रह का जीवन में उतार सकते ह और अपना ले इन दोना को सूक्ष्म रूप में और लाग कम से कम सपत्ति रखें तो कोई बात नही कि हम भौतिक साम्यवाद नहीं ला सकते।

मुनि श्री जिनविजयजी का भाषण

राजस्थान पुरातत्व मदिर के प्रधान एव भारतीय साहित्य सस्कृति और कला के समर्थ समालोचक मुनि श्री जिनविजयजी ने अत्यन्त सौमित्र पर महत्वपूण विचार व्यक्त करते हुए कहा —

"सस्कृति बडी गम्भीर वस्तु है। साम्प्रतिक चिंतन के लिए सस्कृति मूलक जीवन अपेक्षित है। आज जनता के मुख मडल में सस्कृति चर्चा को वस्तु बन रही है। वस्तुत वह जीवन में उतरा

मूर्त्ति की तरह फल फूल आदि सामग्री से पू
जना और नाचना गाना वजाना इत्यादि क
थन मुख्य रक्खेहैं सो हम यहां तर्क करतेहैं

कि ऐसी पूजातो सरागी देवों की है
यथा सीतारामजीकी मूर्त्ति की तथा राधाकृ
ष्ण जीकी मूर्त्ति की तथा शिवशक्ति की मूर्त्ति
आदिकी सोयेसरागी देवहैं क्योंकि इनके काम
भोगादि सामग्री स्त्री आदिक प्रत्यक्ष संयुक्त
है सो इनकीतो फूल, फल, राग, रंग, होम,
भोग, नाच, नृत्य रूप भक्ति अर्थात् पूजा, संभ
वहै यानि मुनासिबहै सो उन्हींके शास्त्रानु
सार और उन्हींके मत वमूजिव योग्यहै क्यों
कि उनके शास्त्रोंमसेंउनके देवोंका स्वरूप
सराग, सकाम, सक्रोध, प्रकट होताहै जैसे
कि गोपी वल्लभ, शङ्ख चक्र गदा धारी, धनुर्धा
री, राक्षस रिपु मर्दन इत्यादि ॥

सगीत साहित्य और कला में हमारी सस्कृति के स्वर गूजते हैं जो हृत्तत्री के तारो को झकृत कर नव निर्माण की ओर सकेत करते हैं। यदि हमें जीवन को गतिशील बनाना है तो सस्कृति की आवश्यकता है। उसे विकास के पद पर बैठाना है तो हमें सभ्यता की आवश्यकता है। यद्यपि आज-कल बहुधा सस्कृति और सभ्यता का व्यवहार एक ही अर्थ में हो चला है परन्तु दोनो का जो अन्तर है वह स्पष्ट है। सस्कृति गतिशील तत्व है तो सभ्यता स्थितिशील। सस्कृति आत्मा है तो कला उसका कलेवर। इतना म अवश्य कहना चाहूगा कि सस्कृति की आत्मा की वास्तविक पहिचान उसे जीवन में स्थान देने में है, न कि बौद्धिक वैभव तक ही सीमित रखने में।

सस्कृति के नाम पर हमें विवाद में न पडना चाहिए, जब कि आज विवादपूर्ण ऐसी स्थिति खडी हो गई है कि उसे हम जैन, बौद्ध और वैदिक आदि शब्दो से अभिशिप्त करने में नही हिचकते।

अन्त में, मुझे कहना चाहिए कि आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज के प्रस्तुत अष्टम शताब्दी स्वर्गारोहण महोत्सव का आज से चार वर्ष पूर्व सर्व प्रथम कल्पना स्थानीय सेठ रामलालजी लूणिया के मस्तिष्क में आई और जिस समय मेरे परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय मुनि श्री सुखसागरजी महाराज को उन्होंने पत्र लिखा था तब मुझे स्वप्न में भी ख्याल नही था कि उनका यह विचार इस प्रकार मूर्त रूप लेगा और आप हम सबको इस पवित्र अवसर का लाभ मिलेगा। इस उत्सव को सफल बनाने के लिए भारतीय शासन के सचार मत्री श्री बाबू जगजीवनरामजी, राजस्थान शासन के भूतपूर्व मुख्य मत्री श्री जयनारायणजी व्यास, राजस्थान शासन के पुनर्वास मत्री श्री अमृतलालजी यादव, राजस्थान शासन के वित्त मत्री श्री बृजसुन्दरजी शर्मा, अजमेर शासन के शिक्षा मत्री श्री बृजमोहनलालजी शर्मा, एव राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष एव साहित्य और सस्कृति के परम अनुरागी श्री नरोत्तमलालजी जोशी, मुनि श्री जिनविजयजी के प्रति अत करण से कृतज्ञता प्रकट करता हू जिन्होने अनेक राजनतिक व्यस्त कार्यक्रमो को छोडकर इस सास्कृतिक उत्सव में सम्मिलित होकर अपने मननीय विचारो द्वारा जनता को लाभान्वित किया।

इस उत्सव की आन्तरिक सफलता में एव अधिक उज्वल बनाने में सर्वाधिक सहायक के रूप में अजमेर राज्य के मुख्य मत्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय को नही भूल सकता जो राजनतिक क्षेत्र में रहकर भी साहित्यिक चेतनाशील ज्योति को सुरक्षित रखे हुए है, अपनी प्रत्येक प्रकार की सहायता द्वारा स्वागत समिति को निस्वार्थभाव से उपकृत किया है। श्रीमान् हरिभाऊजी को धन्यवाद देकर या उनके प्रति आभार प्रकट कर उनके महत्व को कम करना नही चाहता।

मुनि कातिसागरजी के उपसहारिक कथन के पश्चात् शताब्दी महोत्सव के अध्यक्ष श्रीमान् सेठ मेहतावचदजी गोलेछा ने कहा गुरुदेव की स्मृति में सपन्न होने वाले इस ऐतिहासिक महोत्सव के अतर्गत् दिनाक २०, २१ व २२ मई को कई सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुये। इस अवसर पर हजारो नर नारी गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिये देश के कोने कोने से उपस्थित हुय, उन सबके हृदय में गुरुदेव के प्रति कितनी भक्ति व्याप्त है उसका अनुमान इसी बात से लगाया

हो यह नाम निक्षेपा॥ (२) जो काष्ठ तृण पाषाण कौड़ीआदि वस्तुको थाप लेना कि यह मेरा अमुक पदार्थहै तो स्थापना निक्षेपा॥ (३) जो गुण रूप कार्यहोनेका उपादानादि कारण होय सो द्रव्य निक्षेपा॥ (४) जो गुण दायक लाभदाक कार्य रूपहोय सो भाव निक्षेपा कहलाताहै इति॥ अब दृष्टान्त सहित खुलासा लिखतेहैं। यथा (१) एक पुरुष का नाम राजाहै उसमें राजाका नाम निक्षेपा पाईए परन्तु वह राजा नहीं क्योंकि उसपै मुकद्दमा लेके कोईभी आता नहीं (२) दूसरे काठ पाषाण वा चित्राम का राजा थापलिया जावे जैसे कि यह रणजीतसिंह राजाहै तथा राजे की मूर्तिहै सो उसमें राजा का स्थापना निक्षेपा पाइए॥

के लिए अनुकरणीय है। इस तरुणावस्था में अजमेर जैन श्वेताम्बर संघ के प्रधान पद पर अधिष्ठित होकर आप जो उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य कर रहे हैं, वह आपकी महानता का द्योतक है।

अजमेर में संयोजित श्री जिनदत्तसूरि अष्टम निर्वाण शताब्दी महोत्सव के स्वागताध्यक्ष पद को सुशोभित कर इस महानतर कार्य को जिस योग्यता और कर्मठता के साथ सफल बनाया है वह आपकी कर्त्तव्यनिष्ठा का सर्वोपरि उदाहरण है। इस प्रकार अनेक अनेक सद्गुणों से आपूरित होकर हम आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

हम हैं आपके ही
अखिल भारतवर्षीय गुरुभक्त धर्मबन्धु गण

संयोजक का अभिनंदनपत्र

माननीय धर्म प्रेमी, समाज हितैषी, सरल हृदय श्रीयुत् रामलालजी लूणिया महोदय अजमेर निवासी की सेवा में सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्रम्

आदरणीय स्वधर्मी बन्धु !

आपकी समाज सेवाओं की ज्वलन्त भावनाओं को देखते हुए हमारा हृदय अत्यन्त पुलकित होता है। आपकी मिलनसारिता, मिष्टभाषण, निश्छल व्यवहार और कर्त्तव्यनिष्ठा पर हमें अत्यन्त गौरव है।

श्रद्धेय महानुभाव !

आप अजमेर समाज के व्यवसायिक क्षेत्र में अपना प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं। इस समय आप सर्राफान व्यापारिक समिति लिमिटेड के अध्यक्ष हैं और योग्यतापूर्वक इस पद का सञ्चालन कर रहे हैं। यहां की सामाजिक संस्था ओसवाल जैन हाईस्कूल के कोषाध्यक्ष रह चुके हैं और उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। समाज और धर्म के प्रत्येक कार्य में आपका तन मन और धन से सक्रिय सहयोग रहता है।

धर्मप्रिय !

श्री जिनदत्तसूरि अष्टम निर्वाण शताब्दी महोत्सव को महत्वपूर्ण कार्य को प्रारंभ से अन्त तक अपने घोर परिश्रम से पूर्णरूपेण सफल बनाना आपकी सच्ची लगन, अनन्य गुरुभक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा का ही परिणाम है इस प्रकार आपके अनेक अनेक सद्गुणों से आपूरित होकर अत्यन्त प्रेम के साथ हम आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

हम हैं आपके ही
अखिल भारतवर्षीय गुरुभक्त धर्मबन्धु गण

मानते हो तो भगवान का नाम क्यों लेते हो नाम लेने से क्या होगा यहभी तो नाम निक्षेपाहीहै ॥

तो हम उत्तरदेंगे कि वाहजी वाह !! तुमनेश्रे से पण्डित होकर नाम निक्षेपा और नाम लेनेका भेदभी नहीं जाना क्योंकि नाम लेना तो भाव गुणों का स्मरणहै जैसे कि राजावड़ा दयालु (कृपालु) है और वड़ा न्याय कारीहै इत्यादि। यह गुणों की भावरूप स्तुति का करनाहै किम्वा नाम निक्षेपाहै ? अपितु भाव गुणहै नाम निक्षेपा नहीं, नाम निक्षेपा तो वह होताहै कि जो पूर्वक सुचित अचित वस्तु का नाम रक्खा जाय इतिहेतु.

और जो तुम ऐसे कहोगे कि नाचना, कूदना, गाना, वजाना, और साधु को ढोल ढमा के से शहर में प्रवेश कराना यह जैनधर्म

॥ श्रीमहावीरायनम ॥

❋ दान दाताओं की सूची ❋

श्री १००८ जिनदत्तसूरिजी महाराज का निर्वाणस्थल अजमेर नगर में जिर्णोद्धारनिमित्त तथा अष्टम शताब्दि महोत्सव मनाने के लिये निम्नलिखित महानुभावो से सहायतार्थ प्राप्त हुए

अजमेर से प्राप्त रुपये ५७८४॥)

२००२) श्रीमान् रामलालजी लुणिया
६००) श्री धमपत्नी श्री उदयमलजी भडगत्या
३७६) श्रीमान गोपीचन्दजी घाडीवाल
३०१) ,, रतनचन्दजी जतनचन्दजी सचेती
२२३) ,, धुकलचन्दजी रामदयालजी भडारी
१५१) ,, श्रीवधमान स्था० जैन श्रावक सघ
१५१) ,, सेठ ग्रदस
१३२) ,, हरीश्च द्रजी घाडीवाल
१०१) ,, मोतीलालजी मगलचन्दजी भडारी
१०१) ,, सूरजवक्षजी भडारी
१०१) ,, रगराजजी महता
५६) ,, जीतमलजी महता
५३) ,, रतनचन्दजी खीवीसरा
५२) ,, सुगनचन्दजी धनराजजी लणिया
५१) ,, हरकचन्दजी गोलेछा
५१) ,, जवाहरमलजी लुणिया
५१) ,, मागीलालजी कोठारी
५१) ,, चोथमलजी सिंघी
५१) ,, गुमानमलजी महता
५१) ,, मोहनलालजी काठारी
५१) ,, गुमानमलजी मेहता
५०) ,, धनरूपमलजी शाह
३३) ,, विमलचन्दजी मुणोत
३३) ,, मुलचन्दजी सीयाल
३३) श्रीमान नेमीचन्दजी भाव्या
३१) ,, वस्तीमलजी करणावट
३१) ,, उमरावमलजी छाजेड
२६) ,, केसरीमलजी भडावत
२५) सेठाणीजी प्रभावती कवरजी
२५) श्रीमान् जीतमलजी लुणिया
२२) ,, इन्दरमलजी बाठिया
२१) ,, गुमानमलजी महता
२१) ,, मांगीलालजी पारख
२१) ,, नथमलजी बाबूलालजी पोरवाल
२१) ,, चांदमलजी सीपाणी
२१) ,, सीरेमलजी सुराणा
२१) श्री रामारेस्टोरेन्ट
२०) श्रीमान् चोथमलजी दलाल
१६) ,, रूपराजजी महता
१८॥) श्री सघ का आया सवारी म भेंट
१५) श्रीमान् पन्नालालजी धर्मचन्दजी गोठी
११) ,, सन्तोपचन्दजी बोहरा
११) ,, उमरावमलजी जालोरी
११) ,, वीजयराजजी बोहरा
११) ,, लिखमीचन्दजी ललवाणी
११) ,, मोतीलालजी महता
११) ,, रिधकरणजी सम्पतराजजी ढढ्ढा
११) ,, किस्तुरमलजी भडगत्या
११) ,, मागीलालजी कुचेरा
११) ,, जेठमलजी फतेहचन्दजी वरडिया

श्री ५ महावीर स्वामीजी के पाट धारी जोथे,
सो उनके तो आगमन में अतिशय रूप म
हिमा किसी देवने तथा श्रावकोंने करीही
नहींथी क्योंकि सूत्रों में ठाम २ औसा पाठहै

कि सुधर्मस्वामी जी अमुक नगर में
अमुक बागमें "पंचसे समणा सद्धिंसं परिवु
डे" अर्थात् पधारे अहापडिरूवं उग्गहं गि
रह नव संयमेणं अप्पाणं भावे माणे विह
रई परिसा निग्गया धम्म कहियो परिषा प
ड़िगया" इत्यादि· परन्तु औसाभाव कहीं न
हींहै कि श्रावकोंने बाजे गाजे से लाकर बा
ग आदिक में उतारे, तस्मात् कारणात् तुम्हारा
गाजे बाजे से नगर में आना और श्रावकोंको
लाना, अयुक्तहै क्योंकि जब औसे महात्मा पु
रुष जो साक्षात् जिननहीं पर जिन के समा
नथे उनके आगमनमें तो गाजे बाजे से

७) „ आसकरणजी चम्पालालजी
७) „ फतहलालजी लुणिया
५) „ पन्नालालजी कोचर

३२७) योग

टाटानगर से २०१) प्राप्त

५१) श्रीमान् अमरचन्द बनयालालजी लुंकड़
५१) „ कवरलालजी मदनचंदजी गोलेछा
२५) „ लक्ष्मीलालजी बोहरा
२५) „ मोतीलालजी गुलाबचंदजी तलवाणी
१३) „ प्रकाशचंदजी सा०
७) „ मेघराजजी जमनालालजी जैन
५) „ आणदमलजी वैद
५) „ दीपचंदजी बनेचंदजी वैद
५) „ सियलालजी नवलखा
५) „ चम्पालालजी वैद
५) „ जेठमलजी बोहरा
२) „ मानीरामजी वैद
१) „ ताराचंदजी गोलेछा
१) „ तिलोकचंदजी तलवाणी

२०१) योग

जेतारण से ११) प्राप्त

४) श्रीमान् भवरलालजी सेठ
२) „ श्रीलालजी मुथा
२) „ चादमलजी मुथा
१) „ रतनलालजी कोठारी
१) „ लक्ष्मीचन्दजी सा०
१) „ तेजमलजी सा०

११) योग

सोजत से ७) प्राप्त

७) श्रीमान् गणेशमलजी जवरीलालजी

७) योग

खारची से १०१) प्राप्त

१०१) श्रीमती सोभागकुमारी जी धमपत्नी श्रीमान् सरदारमलजी सीवसरा

१०१) योग

पाली से १९) प्राप्त

५) श्रीमान् बस्तीमल मोहनलालजी
५) „ सोहनराजजी भाडावत
४) „ ज्ञानचन्दजी लूनिया
२) „ चुन्नीलालजी जैन
२) „ सोहनराजजी लोढा
१) „ बस्तीमलजी थाडीवाल

१९) योग

कलकत्ता से ८३०९) प्राप्त

५०१) श्रीमान परीचेस्ट श्री श्रीचद गम्भीरचदजी बोथरा
५०१) „ श्री केसरीया एण्ड कम्पनी
३५१) „ किस्तुरचदजी विनयचदजी मोचा
२५१) „ विनयचदजी मोतीचदजी भूरा
२५१) „ कमलसिंहजी दुधेडीया
२५१) „ नाहटा ब्रदस
२५१) „ रावतमलजी भेरुदानजी सुराण
२५१) „ कलुमलजी लालचन्दजी सेठ
२५१) „ पुरखचन्दजी धनराजजी दीपचन्दजी डागा
२०१) „ प्यारेलालजी बदलीया
२०१) „ छोटेलालजी सुराणा

उत्तर पक्षी॥

यह जैनकी प्रभावना नहींहै क्योंकि नाचना, कूदना ढोल ढमाका तो जोकोई ऊंच नीच पुरुष दाम खर्चेगा सो वही करलेगा और जैनी कोई स्वर्गों का वाजातो लेही नहीं आतेहैं जो दुनियां को आश्चर्य हो कि देखो जैन धर्म वड़ा अद्भुतहै जो स्वर्गों से वाजे उतरतेहैं सो जो ऐसे होय तो भला धर्म की महिमा अर्थात् प्रभावना होय परन्तु ऐसे तो है नहीं येतो वेही चर्मके वाजेहैं और वेही चाण्डाल (चूढ़े) वजाने वालेहैं जो हर एक गृहस्थी के व्याह शादियों में वजाया करतेहैं सो कहो ऐसे २ दम्भ से धर्म की प्रभावना क्या हुई १ धर्म की प्रभावनातो त्याग, वैराग्य, ब्रम्हचर्य, सत्य, और सन्तोष, के करने से और दया दान के देनेसेहोतीहै

१५) श्रीमान् सुरेशचंदजी राजमलजी कोठारी
१५) „ महता [illegible] भाई
१५) „ मोतीलालजी मगनलालजी [illegible]
१५) „ पारस टी० कम्पनी
११) „ सम्भीरसिंहजी बछावत
११) श्री गृहस्थवहिन हु० रतिदासजी भगाना
११) श्रीमान् महेन्द्रकुमारजी जवेरी
११) „ सोमचंदभाई जीवराजभाई
११) „ चीमनलाल मोहनचंदजी महता
११) „ प्रभुलालजी मगनलालजी
११) „ [illegible] चीमनलालजी
११) „ शान्तीलालजी नथुलालजी
११) „ रतीलाल [illegible]
११) „ जयन्तीलाल नमीचंदजी
११) „ सुरेशभाई गाधी
११) „ [illegible]लालजी त्रिभुवनदासजी
११) „ फतेचंदजी ललुभाई
११) " भवरलालजी मालु
११) " [illegible] सूरजमल भाई गाधी
११) " शान्तीलालजी फुलचन्दजी
११) " [illegible] हेमराजजी लुणिया
११) " रतनलालजी जवरीलालजी नाहटा
११) " [illegible]दासजी [illegible]
११) " ताराचन्दजी [illegible]
११) " प्रमराजजी [illegible]
११) " [illegible] [illegible]भाई
११) " हीरालालजी सुरजमलजी
११) " [illegible]
११) ' [illegible] [illegible]
११) " [illegible]
५) ' [illegible]
५) ' [illegible]
५) " प्यारेलालजी [illegible]
५०) [illegible]

[illegible]

५१) श्रीमान् जेतेन्द्रसिंहजी बछावत

८३०८१) योग

कच्छभुज से ५००) प्राप्त

५००) श्री खरतरगच्छ संघ, कच्छभुज

५००) योग

अहमदाबाद से ४१) प्राप्त

४१) श्रीमान् [illegible]लालजी [illegible]चन्दजी बांठिया

४१) योग

कोटा से ५३३) प्राप्त

५०१) श्री जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ
२२) श्रीमान् [illegible]राजजी पारख
२) " सोभागमलजी महता
२) " [illegible]राजजी चोरडिया
४) " [illegible]सिंहजी सा०
१) श्रीमती मोहन बाई

५३३) योग

रामगज मण्डी से ११) प्राप्त

११) श्रीमान् कन्हैयालालजी [illegible]

११) योग

[illegible] से १६२) प्राप्त

१५१) श्री जैन संघ [illegible]
११) श्रीमान् [illegible] पारख

[illegible]

[illegible] से २७) प्राप्त

[illegible]

फ़ूल से पूजतेहैं॥
और एक बड़ा आश्चर्य यहहै कि सिद्धों को जैनमें अरूपी कहाहै सो उनकी रक्तवर्ण (लालरंग) की मूर्त्ति बनाकर सिद्ध चक्र के नाम से पूजतेहैं॥
और इनका धर्म भी जैन से अमिलित (पृथक) है क्योंकि जैनमें दया धर्म प्रधान है और यह पूर्वक हिंसा में धर्म कहतेहैं
और जैनमें मुख मूंदके बोलना और निरवद्य बोलना कहाहै और ये मुख खोलकर बोलना प्रधान रखतेहैं क्योंकि इनोंने फ़कीरी लेते समय तो मुख बांधाथा फिर लोकों के वचन कुवचन के न सहने से खोलडाला अब औरों से मुख खुलाकर बडी खुशी गुजारतेहैं॥
परन्तु ऐसे नहीं समझतेहैं कि मुख तो

३१) श्रीमान् उमरावमलजी जैन
३१) „ चन्दुलालजी बछराजजी
३१) „ वालागोनकी एण्ड सन्स
३१) „ पालीवाला स्टोर
३१) „ नानजी भाई घाम्सी
३१) „ मोहनलाल दुनीचन्द
३१) „ भीखमचन्दजी चीमनाजी
२५) „ सरदारमलजी कोठारी
२१) „ मोतीलालजी पुरुषोत्तमदासजी
२१) „ आनाराम भाई गोरधनदास
१७) „ मगलदास मोहनलाल
१५) „ विशनाजी फोजमलजी
११) „ दलीपचन्दजी किशनाजी
११) „ मूलचन्दजी गोदाजी
११) „ अगरमलजी हजारीमलजी
११) „ पुनराजजी पृथ्वीराजजी
११) „ हजारीमलजी प्रेमसिंहजी

१०८२१) योग

भवानी मण्डी से १०१) प्राप्त

१०१) श्रीमान माणकचन्दजी नरसीचन्दजी लोढा

१०१) योग

हैदराबाद (दक्षिण) से १६६०) प्राप्त

२५१) श्रीमान् सरदारमलजी सुगनमलजी सूनिया
२५१) „ गणेशमलजी शम्भूमलजी
२५१) „ जागावरमलजी मोतीलालजी कोठारी
२५१) „ हीराचन्दजी पूनमचन्दजी छल्लाणी
२५१) „ मयूरचन्दजी श्रीमाल
१०१) श्री सुमा एण्ड कम्पनी
१०१) श्रीमान् माकचन्दजी रूपचन्दजी
५१) „ मोतीचन्दजी केसरीचन्दजी
५१) „ समरथमलजी कल्याणचन्दजी
५१) „ इन्दरमलजी सूनिया
५०) श्रीमान् मेघराजजी कोचर

१६६०) योग

सिकन्दराबाद से २७६) प्राप्त

२०१) श्रीमान् मेघराजजी गोलेछा
७५) „ पेमराजजी गाडमलजी

२७६) योग

छबडा से ९५) प्राप्त

२५) श्रीमान् केसरीचन्दजी लालमीचन्दजी
२८) „ केसरीचन्दजी मागरचन्दजी
२१) „ राजमलजी तेजमलजी गोलेछा
१७) „ चिमनमलजी कन्हैयालालजी
५) „ कन्हैयालालजी प्रतापचन्दजी
२) „ रीखबचन्दजी जीन्दाणी

९५) योग

बडोदिया से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् प्रेमचन्दजी सौगणी

५) योग

छीपा बडोद से १००) प्राप्त

१००) श्रीमान् केसरीचन्दजी दानमलजी सौगणी

१००) योग

कागजनगर से ७) प्राप्त

७) श्रीमान् पन्नालालजी भण्डारी

७) योग

पारोली से ११) प्राप्त

११) श्रीमान् कल्याणमलजी रूपजी पारोला

११) योग

मुख बांधनी समझो क्योंकि उस्का नामही मुखवस्त्रिकाहै परन्तु तुम बताओ कि हाथ वस्त्रिका कहां चलीहै ? अरे! भाई! तुमनेतो अपनी तर्फ से मुह खोलने के हठमें बहुते रे सूत्रोंमें से अर्थ का अनर्थ करके लिखा है जैसे मुखपत्ती चरचा, पोथी वृटे रायजी की रचीहुईमें पृष्ठ १०२ वी पर लिखाहै कि उत्तराध्ययन अध्ययन १२ वां गाथा ६ठी "हरकेशीबल साधुको ब्राम्हण कहते भये कि तेरे होठ मोटेहैं तेरे दान्त बड़े २ हैं इत्यादि. परन्तु सूत्रमें देखतेहैं तो यह अर्थ स्वप्नान्तरगत भी नहीहै॥

सो सूत्र यहहै" कयरे आगच्छइ दित्तरूवे काले विकरालेय फुक्कनासे उमचेलए पंसुपिसाय भूए संकर दूसंपरि हरियकंठे

अर्थ। कौनहै तू आंवरा चलाजादैत्य

५१) श्रीमती लीलादेवी एन० शाह
५१) श्रीमान् पारसमलजी गहर
५१) „ धामचरणजी प्रतापचन्दजी
५१) „ गुलाबचन्दजी मिलापचन्दजी
५१) „ जीवतरामजी नागचन्दजी
५१) „ भीमराजजी फतेहचन्दजी
५१) „ शिवराजजी मन्नालालजी
५१) „ मुलचन्दजी देवीचन्दजी
५१) „ रतनचन्दजी कपूरचन्दजी
५१) „ सरदारमलजी केसरीमलजी
५१) „ सरदारमलजी सेहमलजी
५१) „ मानरूपजी लिखमीचन्दजी
५१) „ मोतीजी ताराचन्दजी गोरवान
५१) „ हजारीमलजी जीवराजजी
५१) „ हजारीमलजी पुखराजजी
५१) „ अगरूजी फतेचन्दजी
५१) „ रायचन्दजी फौजमलजी
५१) „ जेठमलजी सुगनराजजी
५१) „ डी पुखराजजी गोलेछा
५१) „ पुनाजी सुगनमलजी
३१) „ मागीलालजी धनीलालजी
३१) „ धनीसकरचन्दजी गलदा
३१) „ वीरदीचन्दजी लालचन्दजी
३१) „ नियमाराममजी समथचन्दजी
२५) „ नेमीचन्दजी मानचन्दजी
२५) „ सागरमलजी बाठरामजी
२५) „ मालीचन्दजी निजरामजी
२१) „ अमरचन्दजी पारडिया
२१) „ नथमलजी लिम्बूमलजी
२१) „ मगनमलजी अमरचन्दजी
२१) „ गिरधारीलालजी लखमीमलजी
२१) „ उमाजी रावतमलजी
२१) „ दलपतरामजी मदनलालजी
२१) „ मीठालालजी कोठारिया
२१) „ मांगीचन्दजी सुराणा

२१) श्रीमान् हिन्दुजी मेघीचन्दजी
२१) „ मांगीलालजी ना० ब०
२१) „ फेवरचन्दजी भटाड
२१) „ बगदीमलजी शाहमलजी
१५) „ मेघराजजी गणेशानजी
१५) „ फौजमलजी रोशनदासजी
१५) „ गुलाबचन्दजी मीनापचन्दजी
१५) „ के० हुकमराजजी चोपड़ा
१५) „ गुलाबचन्दजी जुगराजजी
११) „ एफ० सम्पत एन्डको
११) „ गुलाबचन्दजी सूरजमलजी
११) „ मांगीलालजी बद
११) „ आसूमलजी सुराणा
११) „ भीकमचन्दजी सुराणा
८) „ शोभागमलजी सम्पतलालजी
५) „ सुगनमलजी समरचन्दजी
५) „ मूलचन्दजी मथेलो

४८१६) योग

सोहायट से २६५) प्राप्त

१५१) श्रीमान् हजारीमलजी रतनचन्दजी पारख
३१) „ बुधनामलजी भवरलालजी पारख
३१) „ माहराजजी पारख
२५) „ माणकलालजी रूपमलजी पारख
२१) „ मोतीलालजी सेठिया
२१) „ रावतमलजी मोहनलालजी बाफना
१५) „ जुगराजजी केसरीमलजी पारख

२९५) योग

हाला से ५१) प्राप्त

५१) श्री मनसुखलाल शाह, हाला

५१) योग

क्योंकि इनके गुरू ढूंढेरावजीने मुखपत्ती चर्चा पोथी अहमदावाद के छापेकी में पृष्ठ ५९ में लिखाहै कि मणिविजयजीने चढावे के रुपये प्रमाण करे और जब मुझे बाई रुपये देने लगी तो मैंने नहीं लिये। इत्यर्थः॥ और ढूंढेराव बुद्धविजय जीने तपागच्छ को अपने मनसे बिलकुल अच्छा नहीं जानाथा परन्तु मुखतो खोलही चुकेथे जब कहीं पैर नहीं लगते देखे तब शास्त्रकारों के लिहाज से तपागच्छ धारलिया यह स्वरूप उन्हीं की बनाई हुई पूर्वक मुखपती चर्चापोथी की पृष्ठ३७ वी से लेकर ४८ वी तक बांचने से ख्याल करके मालूम करलेना हम क्या लिखें और फिर पृष्ठ ७० वीं पर ढूंढेराव लिखतेहैंकि १० वें अछेरे में

५०) श्रीमान् हजारीलालजी सोठा
२१) " चन्दूमलजी इन्द्रचन्दजी मसाली
२१) " [illegible]
२१) " जगवन्तरामजी [illegible]चन्दजी
२१) " लक्ष्मणसिंहजी भगाली
२१) " [illegible]सिंहजी रायगण
२१) " मोतीलालजी रांयान
२१) " जीवालालजी बोहरा
११) " रामचन्दरजी भगाली
११) " गैंदामलजी हमराजजी
११) " गैंदामलजी विनायतीरामजी
११) " [illegible]मलजी [illegible] पोरर
११) " हजारीलालजी उमरावसिंहजी
११) " हिम्मतसिंहजी रामचन्दजी
११) " मोतीचन्दजी फाकनीगा
११) " छागमलजी मुल्तान वाले
११) " सांवलरामजी छोटेलालजी
११) श्री जैन श्वेताम्बर श्रावक
११) श्रीमान् [illegible] [illegible]
११) " [illegible]लालजी [illegible]चन्दजी
११) " [illegible]रामजी [illegible]रामजी
११) " [illegible] [illegible]
११) " [illegible] [illegible]
११) " [illegible] मुल्तान वाले
११) " [illegible]रामजी डागी
११) श्रीमती [illegible] [illegible]
७) श्रीमान् [illegible]मलजी [illegible]
७) " [illegible] [illegible]
५) " [illegible] [illegible]
५) " [illegible] [illegible]
५) " [illegible] [illegible]
५) " [illegible] [illegible]
५) " [illegible] [illegible]

५) श्रीमान् बनारसीदासजी हरवंशलालजी
५) " [illegible] [illegible]
५) " एस० एम० [illegible]
५) " [illegible]लालजी लाहौर वाले
५) " [illegible]लालजी [illegible]
५) " [illegible] [illegible]
४) " प्रेमचन्दजी रतमान
२) " [illegible]चन्दजी लूणिया
१) " हजारीलालजी [illegible]

१५९६) योग

सवनावर से ५०) प्राप्त

५०) श्रीमान् [illegible]मलजी [illegible]

५०) योग

ग्वालियर से ८) प्राप्त

८) श्रीमान् [illegible] [illegible]

८) योग

रतलाम से १९७) प्राप्त

१५१) श्री जैन श्वेताम्बर [illegible] संघ
२१) " [illegible] मारवाड़ी संघ
१०) " जैन संघ रतलाम
१५) " जैन संघ रतलाम

१९७) योग

नीमच से २०३) प्राप्त

२००) श्रीमान् [illegible]
३) " [illegible] [illegible]

२०३) योग

सादड़ी मारवाड़ से २४१) प्राप्त

२४१) श्रीमान् [illegible] [illegible]
द्वारा श्री [illegible] संघ

२४१) योग

इरा ग्रन्थों में से लिखेहैं सत्यासत्य को विद्वा
न् लोग विचार लेवेंगे भूल चूक मिच्छा
मि दुक्कडम् ॥

इति प्रथमो भागः
समाप्तः

गुलावपुरा से १११) प्राप्त

१०१) श्री जैन श्वेताम्बर सघ, गुलाबपुरा
१०) श्रीमान् मोहनलालजी रतनलालजी मेडतवाल

१११) योग

खेतीया से २५३) प्राप्त

२४२) श्री जन श्वेताम्बर सघ, खेतीया
११) श्रीमान् गुलाबचन्दजी ओस्तवाल

२५३) योग

नाहटा से २०१) प्राप्त

२०१) श्री खरतरगच्छ सघ नाहटा की तरफ से

२०१) योग

सराणा से १०७) प्राप्त

१०२) श्री श्वेताम्बर जैन सघ, सगणा
५) श्रीमान् हरकचन्दजी भडारी

१०७) योग

गागरड से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् उगरसिहजी सुर्यसिहजी

५) योग

रायपुर से १६१) प्राप्त

२१) श्रीमान् मगनचन्दजी सुगनचन्दजी
११) „ मालकरणजी अनूपचदजी भसानी
११) „ छोगामलजी इन्दरचदजी लूकड
११) „ समरतमलजी मानचदजी गोलेछा
११) „ सोमराजजी हीरामलजी सुकड
११) „ ताराचन्दजी बालचदजी गोलेछा
११) „ नथमलजी भीखराजजी नेमाणी
११) श्रीमान् तेजपालजी सीखरचन्दजी
११) „ आसकरणजी मागीलालजी झावक
७) „ गुलावचन्दजी मागीलालजी चोपडा
५) „ माणकचदजी सावणसुखा
५) „ पुनमचदजी वैद
५) „ जुहारमलजी अमोलकचदजी वापणा
८) „ हस्तीमलजी गुलावचन्दजी वैद
५) „ चतमलजी जसकरणजी पारख
५) „ भागचदजी करमचदजी नेमाणी
५) „ हीरालालजी लुणकरणजी पारख
५) „ सुखलालजी जीवणचदजी
५) „ मेघराजजी वैद

१६१) योग

दुरग से २३) प्राप्त

११) श्रीमान् उदयकरणजी जसकरणजी
७) „ भोमराजजी चोपडा
५) „ भीखमचन्दजी मिश्रीलालजी लोढा

२३) योग

जबलपुर से १६८) प्राप्त

१०१) श्रीमान् परतापचदजी धनराजजी गोलेछा
११) „ मोतीलालजी गुलाबचन्दजी सुराणा
११) „ हीराचदजी मानमलजी गोलछा
११) „ भागचदजी गोलछा
११) „ रीखवदासजी रूपचदजी सुराणा
६) „ टीकमचदजी भोमराजजी
७) „ हीरालालजी फतेचन्दजी चोपडा
७) „ सरदारमलजी मगनमलजी मालू

१६८) योग

णंचतहेव मायं लोभंच उत्थं अक्रम्यदोषा र
याणि वंता अरहा महेसी नकुब्बइ पाव न का
र वेई॥ १॥ अस्यार्थः सुगमः॥

ऐसे अरिहंत देवजीके गुण परम त्यागी अर्थात् विषय भोग सावद्य व्यापारादि सर्व्वारम्भ परित्यागी अथवा परम वैरागी राग द्वेषसे निवृत्त वीतरागी केवल ज्ञानी के २ अर्थात् सम्पूर्ण लोकालोक, आदि मध्य अंत अतीतअनागत वर्तमान (तस्यहस्तस्य) करामलक वत् समय २ निरंतर देखते भए अथवा परम दान्ति परम शान्ति महा माहन महा नियामक महा सार्थ वाह परमोपकारी परम गोप परमपूज्य परम पावन परम सुशील परम पण्डित परमात्मा पुरुषोत्तम इत्यादि गुणों का स्मरण अर्थात् जपकरे॥

(२) अथ गुरु अंग सो दूसरे, निर्ग्रन्थि गुरु जो

गोवल्या से १०) प्राप्त

५) श्रीमान् सुजानमलजी हरखचन्दजी गोगस
५) „ सुरजमलजी किशनलालजी गोलछा
१०) योग

जायला से १) प्राप्त

१) श्रीमान् तेजराजजी कोठारी,
१) योग

जावरा से ५५) प्राप्त

५१) श्रीमान् जड़ावचन्दजी जवेरचन्दजी
२) „ मांगीलालजी मुन्दनमलजी
२) „ जुहारमलजी भैरूदानजी
५५) योग

मालावाडा से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् चिमनलालजी उमाजी शाह
५) योग

सदारा से ७) प्राप्त,

७) श्री जैन श्री संघ
७) योग

भागलपुर से ६) प्राप्त

६) श्रीमान् विजयचन्दजी वदलिया
६) योग

देवगढ से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् मोतीलालजी नाफणा
५) योग

बापलों से २१) प्राप्त

२१) श्रीमान् हरीसिंहजी कोठारी
२१) योग

भानपुरा से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् मन्नालालजी चोरडिया
५) योग

गोवर्धनवाला से ११) प्राप्त

११) श्रीमती फूलबाईजी
११) योग

खजनेर से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् चांदमलजी फूलचंदजी बोथरा
५) योग

बीकानेर से ३१८६) प्राप्त

१००१) श्रीमान् रावतमलजी हरखचन्दजी बोथरा
२५१) „ सेहसकरणजी मूलचन्दजी लाहुटा
२०१) „ रामलालजी सेठिया
२०१) „ आणन्दमलजी लालचन्दजी
२०१) „ तेजकरणजी प्रेमचन्दजी
२०१) „ मगनलालजी दीपचन्दजी
१०१) „ रावतमलजी भैरुदानजी कोठारी
१०१) „ सरदारमलजी धाडीवाल
१०१) „ मेरुदानजी डागा
१०१) „ सुरजमलजी पारख
१०१) „ श्रीगुप्तदाता ह० इन्द्र बाई
१०१) „ प्रेमचन्दजी माणकचन्दजी
७१) „ धनसुखदासजी मेघराजजी
५१) „ सुगनचन्दजी जतनमलजी
५१) „ रावतमलजी कान्तीदासजी दुगड

धर्ता अर्थात् (१) प्रथम ईर्या सुमति (सो) सा
ढे तीन हाथ प्रमाण क्षेत्र आगे को देखता
हुआ चले॥
और (२) दूसरी भाषा सुमति (सो) भाषा वि
चारके बोले और किसी को दुःखदाई मर्मका
री और झूठी भाषा न बोले॥
और (३) तीसरी एषणा सुमति (सो) साधु
४ प्रकार का पदार्थ निर्दोष आज्ञा सहित
लेवे जैसे कि १ प्रथम तो आहार पानी नि
र्दोष, जो पुरुष साधु के निमित्त फलादिक
छेदे नहीं छिदावे नहीं छेदने को भला जाने
नहीं और भेदे नहीं॰ २ और पचे नहीं॰ ३ । जो
गृहस्थीने अपने कुटुंब के निमित्त अन्न
पानी का आरम्भ किया हो सरस वा नीरस
हो तैसाही ग्रहण करे सो यहतो द्रव्य नि
र्दोष और भाव निर्दोष, सो-ऐसा॰ सरस॰न

श्रीसघ से ५) प्राप्त

५) श्रीसघ मदसौर, परतापगढ़, कुन्ती, तथा वानोट

५) योग

बोलीयो द्वारा १५८९) प्राप्त

६०१) श्रीमान् रामलालजी लुणिया अजमेर, हाथी पर श्री गुरुदेव की फोटो पर चवर करने की बोली के

१९५) „ लक्ष्मीलालजी जीवराजजी नाहटा फलोदी, घीरत की बोली के

१०१) „ जीवनसिंहजी मेहता दिल्ली वाले श्री गुरुदेव की फोटो हाथी पर से उतारने की बोली के

८७॥) „ बीलाकीदासजी ढड्ढा कलकत्ता वाला, घीरत की बोली के

८३॥) „ खेरातीलालजी मिठूमलजी रायजादा देहली, घीरत की बोली के

७७॥) „ बुधसिंहजी बाफणा कोटा

६७॥) „ उमरावमलजी बैराठी घीरत का बोली के

६३=) „ कपूरचन्दजी श्रीमाल हैदराबाद

४२॥) „ दलपतसिंहजी बोहरा आगरा

३७॥) „ लछीरामजी रतनलालजी लुणिया बीकानेर

३२॥) „ प्रकाशचन्दजी पल्लीवाल अजमेर

३०) „ छुट्टनलालजी फोफलिया जैपुर

२८॥) श्रीमान् हरकचन्दजी रतनचन्दजी सेखावत इन्दौर

१७॥) श्रीमान् हजारीलालजी रायजादा देहली

१५) „ लालचान्दजी बैराठी जैपुर

१५) „ पूनमचन्दजी जाड़चूर जैपुर

१२॥) „ श्रीगुप्त सज्जन ह० निहालचन्दजी हरकावत

१२॥) „ अमरचन्दजी नाहर जयपुर

१२॥) „ वस्तुरचन्दजी भवरलालजी बोथरा नीम्बाहेड़ा

११) „ गणेशदासजी पारख टोंक

७॥) „ नीहालचन्दजी हरकावत अजमेर

७) „ गुलाबचन्दजी सोहनलालजी मेहता कोटा

६।) „ फूलचन्दजी ज्ञानचदजी सहारनपुर

५) „ कमलचन्दजी धाधिया जयपुर

५) „ उकारलालजी चोपड़ा मन्दसौर

३॥) गुलाबचन्दजी जाड़चूर जयपुर

३॥) „ भैरूलालजी नारीपोड़ा पीपल्या

३॥) „ कुन्दनमल इन्द्रचन्दजी झुन्झनू

३=) „ मागीलालजी पारख अजमेर

१५८९) योग

६०००) धर्मस्नेही बन्धु से प्राप्त ह० मागीलालजी पारख

६०००) योग

तारीख २७-४-५८ तक सब रसीदों द्वारा प्राप्त रकमों का महायोग ५५९०४) होता है सो आगे के पृष्ठों में जांचे गये महोत्सव समिति द्वारा एव आडिटर द्वारा पास किये गये हिसाब में अलग अलग खातों में जमा दिखाये गये है।

पजे इत्यर्थः और ३ तीसरे उपाश्रय अर्थात् स्थान निर्दोष (सो) साधुनि मित्त मकान बनवाया नहोय तथा मोललिया नहोय फिर गृहस्थी के वर्तने से जियादा होय तो उसकी आज्ञासे ग्रहण करे सो यह तो द्रव्य निर्दोष, और भाव निर्दोष, सो ऐसा चित्रशाली आदिक नहोय कि जिस्से मन अनंग (कामदेव) और विकारादि भजे तथा सराग वेश्या आदिक का पड़ोस नहोय और ऐसा निषिद्ध टूटा फूटा मकान भी नहोय जो चढ़ते उतरते गिर २ पड़े तथा मट्टी गिर २ पड़े तथा और जीव जंतु आदि घणे होय तथा और दुःखदाई होय अप्रतीतकारी होय इत्यर्थः॥ और चौथे ४ शिष्य शाखा निर्दोष सो लड़का लड़की कुजात नहोय तथा माता पिता की जात अधूरी नहोय

अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

२२ मई सन् १६५६

ता० १३-६-५६ तक का

व्यय	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
श्री दादावाडी जिर्णोद्धार खाते नामे —		
श्री जिर्णोद्धार के	७६४५ -१४ - ३	
श्री सभा मडप के	५४१२ - २ - ६	
हस्ते इबराहीम कारीगर को काम पेटे	१६०० - ० - ०	१४६५८ - ०- ६
श्री भोजन खाते —		
भोजन व्यवस्था के	२१०२३ -१५ - ३	
चोका खर्च के	१३४३ - १ - ३	
बाद आमद रसीदा से १६५८५ - ०- ०	२२३६७ - ० - ६	
बचा सामान बेचने से २३६२ -१०- ०	२१६७७ -१० - ०	३८६ - ६ - ६
श्री मन्दिरजी जिर्णोद्धार खाते —		१८६ - ० - ०
श्री पूजन खाते —		
नामे	४८ - ६ - ६	
जमा	३५ - ६ - ६	६ - ० - ०
श्री अष्टम शताब्दी महोत्सव खाते —		
श्री दफ्तर खर्च के — वेतन ११०८ - ० - ०		
स्टेशनरी इत्यादि ३७२ - ३ - ०	१४७६ - ३ - ०	
श्री प्रचार व छपाई के	२४२६ - ६ - ३	
श्री सफर खर्च के	२४७१ -१५ - ६	
श्री पण्डाल खर्च के	२०८१ - ७ - ०	
श्री बिजली रोशनी खर्च	१५७८ - ६ - ०	
श्री जलूस खर्च	१६८७ - ० - ३	
श्री यातायात खर्च	६६६ - ६ - ६	
श्री साधु-साध्वीजी विहार खर्च वगैरा	४६२५ -१५ - ६	
श्रीपूज्यजी व यतिजी खर्च रसोडा वगैरा	५०० - ४ - ०	१७७२४ - ६ - ६
	जोड आगे ले गये	३३२६६ -१३ - ६

पांचमी उच्चार पासवरा लेख जल संघरा परिठावणी सु०॥ सो देहके मैल एकान्त पृथक् सूकी भूमिका में गेरे जहां कोई जीव जन्तु गडे नहीं और फसके मरे नहीं इत्यर्थः ८॥

और ३ गुप्ति १ मन गुप्ति सो मनके अशुद्ध संकल्पों को रोके॥

२ बचन गुप्ति सो बचन आलपाल वोले नहीं अर्थात् बिना निजगुरा लाभके बोले नहीं॥ और ३ काय गुप्ति सो काय की चपलता और ममता को त्यागे॥

सो ये ५ सुमति और

३ गुप्तिके धर्ता साधु जन साधकात्मा हैं तिनकी सेवा भक्ति करे अर्थात् फ्रासूक एषणीक पूर्वक अन्नपानी देकर तथा वस्त्रपात्र देकर तथा अपने वर्तने से ज्यादा मका

अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

२२ मई सन् १९५६

ता० १३-९-५६ तक का

व्यय	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
जोड पिछले पृष्ट से लाये		३३२९९ -१३ - ९
श्री तार, फोन, पोस्टेज वगैरा	६१९ -११ - ३	
श्री दादासाहब के जीवन चरित्र छपवाई के	७४८ - ३ - ०	
श्री स्मृति ग्रन्थ निर्माण खाते वेतन के	१४० - ० - ०	
श्री स्वामी वत्सल खाते		
नामे ८२५ ८-३		
बाद जमा ७६४-०-०	६१ - ८ - ३	
श्री जनरल उत्सव खर्च खाते—स्वयं सेवक, सगीत मडली, प्रदर्शनी, फोटो, इत्यादि व्यय	२५६६ - ५ - ९	
श्री आडिट फीस के	७५ - ० - ०	४२१० - १२- ३
श्री दादाबाडी सामान खाते —		१०२७ - ५ - ३
श्री नगरपालिका खाते —		
नल वास्ते डिपाजीट		१० - ० - ०
श्री टेलीफोन एक्सचेंज खाते —		
अभी बिल नही आये है।		२०० - ० - ०
उगाई धणीवारो में लेणा —		
श्री मागीलालजी पारख	६१- १- ६	
श्री दुलीचन्दजी हमीरमलजी गोलेछा जयपुर	३६-१२- ६	
श्री जीतमलजी महता	५६- ०- ०	
श्री अगरचन्दजी नाहटा बीकानेर वास्ते खरतरगच्छ इतिहास छपाने	२८८४ ०- ०	
श्री मूलचन्दजी नाहटा बीकानेर	१०- ०- ०	
श्रीचंदाप्रभुजी महाराज मंदिर जुना पेढी मद्रास	१५१- ०- ०	३१९८ -१४ - ०
	जोड आगे ले गये	४१९१३ - १३- ३

यसाधे यथा सूत्र विनयव्हारम् ॥
अगर इससें कोई मतपक्षी तर्क करे कि साधुको लेने जानेमें क्या हिंसा नही होती है? तो उसको यह उत्तर देना चाहिये कि विना उपयोग चले तो हिंसा होतीहै और सूत्र का न्याय तो ऐसेंहै कि यथा दशवैकालिके उक्तंच "जयंचरे जयंचिठे" इति वचनात् ॥ और इसपर कोई फिर तर्क करे कि हमभीतोफूल आदिक जिन भक्तिके निमित्त यत्नसेही तोड़तेहैं॥

तो फिर उसको यह उत्तर देना चाहिये कि जब तोड़ही लिया तो फिर यत्न काहेका हुआ यथा किसी की गर्दन तो उतारी परन्तु यत्न से उतारी। उत्तरम्। अपसोसहै कि जब काटही गेरा तो फिर यत्न काहेका हुआ। खैर तुम्हारे लेखे यत्नही हुआसही परन्तु

अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

२२ मई सन् १९५६

ता० १३–९–५६ तक का

व्यय	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
जोड़ पिछले पृष्ट से लाये		४१९१३ -१३ - ३
श्रीसंघ जयपुर देहली हैदराबाद वालो में	९२८ - ० - ०	
श्री जीनमलजी साखला सीरहमलजी महता आदि चोसीरा खाते	१०२ - ८ - ०	
श्री राजगढीयाजी	३७७ - ८ - ०	१४०८ - ० - ०
श्रीपोते बेलेन्स –		
दी हिन्द बंक लिमिटेड में काल (Call) डिपाजिट खाते	५००० - ० - ०	
दी हिन्द बंक लिमिटेड में चालू खाते में	२४७३ - ४ - ६	
श्रीपोते रोकड़ो	५ - ६ - ६	७४७८ -११ - ६
सर्व योग		५०८०० - ८ - ९

जाचा और सही पाया।

दिनांक १७–९–५६

ह० राधेश्याम डाणी

F C A

चारटर्ड अकाऊटेन्ट, अजमेर

लाभ होय ॥ तर्क ०

अगर तुम यह कुटिलता ग्रहण करोगे कि अपने पहरने खाने के निमित्त सुचित्त द्रव्य लेजाने समवसरण के मनाई है परन्तु भगवान् की भक्ति निमित्त मनाई नहीं है ॥ उत्तरपक्ष सूत्रमें तो ऐसे नहीं है और स्वकपोलकल्पित कुछ बनाधरो अगर है तो पाठ दिखाओ कि किसी सनातन सूत्रमें लिखा हो कि किसी सेवकने वीतराग भगवान जीकी फल फूलोंसे पूजा करी हो अगर तुम देवोंकी भुलावन दोगे तो हम नहीं मानेंगे क्योंकि देवों का जीता विहार कुछ और ही है तदपि देवताओं के कथन में भी अरिहंत हुए पीछे सुचित्त फूलों का पाठ नहीं है यथा राजप्रस्नी सूत्र पुष्फ वद्दलंवियोवइत्ता तथा मानतुंग कृतभक्तामर श्लोक। उन्नैद्र हेम

अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

ता० १४-६-५६ से २७-४-५८ तक का

व्यय	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
श्री दादावाडी जीर्णोद्धार खाते नामे –		३११३ - ७ - ३
श्री सभा मडप पर खर्च –		५३८३ -१० - ३
श्री अष्टम शताब्दी महोत्सव खाते नामे – (इसम २८८४ पुस्तक छपाईके भी सम्मिलित है जिसका झगडे के कारण कोई भी पुष्टि पत्र हमें नही दिखाया गया है और न प्राप्त ही हुआ है। इसी प्रकार ११००) अम्बावाडी के नुकसानी मरम्मत के तथा ६६) छपाई का देना था और ६२८) जयपुर सघ मे लेने थे अत २७१) का बाकी का चैक भेजा गया था सो लौट कर वापस (मामला विचाराधीन होने से) आ गया है।)		४०८३ - ६ - ०
श्री साधु-साध्वी खर्च खाते –		३६ -१२ - ६
अन्य व्यय –		
श्री भडार खाते जमा थे सो श्री जीर्णोद्धार खाते जमा किया	१४ - ० - ०	
श्री शांति स्नात्र खाते	५८ -१० - ६	
श्री मदिरजी जीर्णोद्धार खाते	५४५ - ० - ०	
श्री साधारण खात व्यय	६७ -१२ - ०	
श्री विविध व्यय दफतर वास्ते	१२७ - २ - ६	
पोस्टेज तार व टलीफोन उत्सव का बिल आया	१६७ ५ - ०	
प्रवास व्यय	२३ १२ - ०	
बिजली खर्च (उत्सव का दीया)	७४ -१५ - ०	
प्रचार व्यय " "	६१ - ६ - ०	
रिपोट छपाई	११७ - ३ - ०	१३०७ - २ - ०
	जोड आगे ले गय	१३६२४ - ६ - ०

मजुब वाले लोक तथा अनज्ञान लोक भी आश्चर्य को प्राप्त होंगे कि देखो जैनी लोक स्ववश वर्ती, स्त्री आदिक के भोग को तजकर ब्रम्हचारी होजातेहैं सो यह जैन धर्म की प्रभावनाहै॥

अथ ३ तृतीय धर्म अंग धर्म जो दुर्गति पड ता धारई इति धर्म ते धर्म क्षमा दया रूप धर्म तथा संवर निर्जरा रूप धर्म यथास त्य नोत्पद्यते धर्मोदया दानेन वर्द्धते॥ क्षमया च स्थाप्यतेधर्म्मः क्रोधलोभाद्विनश्यति ॥ १॥ अर्थात् १ धर्मका पिता ज्ञान २ माता दया ३ भाई सत्य ४ वहन सुबुद्धि ५ स्त्री दमितेन्द्रिय ६ पुत्र सुख ७ घर क्षमा ८ वैरी क्रोध लोभ ॥ १॥ ते धर्म आचरण की विधि लिखतेहैं

प्रथम तो पूर्वक निग्रन्थ

गुरु से भक्ति रूप प्रीति समाचरे सो गुरु

अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

ता० १४–६–५६ से २७–४–५८ तक का

व्यय	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
जोड़ पिछले पृष्ट से लाये		१३६२४ - ६ - ०
ब्याज खाते (गत वर्ष के ब्याज को दादा-बाड़ी जीर्णोद्धार खाते जमा किया)	६५ -१४ - ३	६५ -१४ - ३
लेना बाकी –		
श्री जीतमलजी मेहता पुराना	५६ - ० - ०	
श्रीजवरीलाल नोरतमल (अगले वर्ष प्राप्त हुए)	७० - ० - ०	
श्री मागीलालजी पारख खाते	१३३ -१० - ०	
श्री जीतमलजी सांखला चौमीरा खाते पुराना (अगले वर्ष प्राप्त हुये)	१०२ - ८ - ०	
नगरपालिका, अजमेर पुराना	१० - ० - ०	३७२ - २ - ०
श्री पोते बाकी–		
रोकड़ पोते	७४ - ८ - ३	
हिंद बैंक नि० चालू खाते में	१४३५ - ६ - ०	
हिंद बैंक नि० चाल डिपोजिट खाते म	४०२७ - १ - ०	५५३६ -१५ - ३
	योग	१९६२६ - ५ - ६

जांचा और सही पाया।

ह० राधेश्याम शर्मा
F C A.
चार्टर्ड एकाउटन्ट, अजमेर

तारीख २० ५-५८

तथा परमेश्वर वा ब्रम्ह कहतेहैं सो उसको जैन में सिद्ध कहतेहैं (सो (सिद्ध) निरंजन निराकार अखण्डित अविनाशी अलक्ष्य अरूपी कर्म कलंक से रहित अनादि अनंत है यथा जैनमूल सूत्रे समवायाङ्गे "सव्वनूणं सव्वदंसीणं शिवमयलमरूयमणंतमक्खयमव्वावाह" इत्यादि

और एक न्याय से सादि अनंतहै सो इस रीति सेहै कि शास्त्रमें दो प्रकार का जीव का स्वभाव कहाहै जैसे एक तो स्वभाव में अभव्य जीवहै अर्थात् अनादि अनंत कर्म सहितहै और दूसरे स्वभावमें भव्य जीवहै अर्थात् अनादि सांत कर्म सहित है सोई जो अभव्य जीवहै उसको तो मोक्ष होती नहीं क्योंकि अभव्य जीव अनादि अनंत कर्म सहितहै तस्मात् का